ऑस्कर वाइल्ड
की
लोकप्रिय कहानियाँ



ऑस्कर वाइल्ड

की

लोकप्रिय कहानियाँ

ऑस्कर वाइल्ड

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

प्रस्तावना

हिंदी के पाठकों के लिए 'ऑस्कर वाइल्ड की लोकप्रिय कहानियों' का यह संकलन प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। 16 अक्तूबर, 1854 को जनमे बहुमुखी प्रतिभा के धनी इस महान् लेखक ने कविता, नाटक या गल्प साहित्य, जिस भी विधा में अपनी कल्पना की उड़ान भरी, उसकी बुलंदियों को छूकर तत्कालीन साहित्य-जगत् को आश्चर्यचकित कर दिया। उसकी रचनाओं में एक सर्वथा नई सोच, जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण और नई भावप्रवणता व्यक्त होती है। उसकी शैली की प्रखरता और वर्णन की चित्रात्मकता उसकी कहानियों को एक नया स्वरूप प्रदान करती है, जो पाठक को उसके कल्पनालोक की यात्रा कराता हुआ प्रतीत होता है। नवसौंदर्यवादी दर्शन की छाप उसकी रचनाओं में परिलक्षित होती है। अपनी उक्तियों में सामाजिक मान्यताओं से हटकर प्रकट किए गए उसके विचारों ने इंग्लैंड के परंपरावादी समाज को झकझोरकर रख दिया था। तत्कालीन समाज ने अपनी तमाम रूढ़िबद्धता के बावजूद उसे हाथोहाथ लिया और देखते-ही-देखते वह लोकप्रियता के शिखर पर जा पहुँचा।

वाइल्ड ने अपनी कहानियों में तत्कालीन अभिजात वर्ग को सामाजिक विषमताओं के दर्पण में उसका असली चेहरा दिखाया और उसकी शोषक प्रवृत्ति का मार्मिक चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। इन कहानियों में शैली की मनोरमता के अंतस्तल में उसकी गहन संवेदनशीलता और मानवीय पीड़ा की अजस्र धारा प्रवाहित होती है, जो पाठक के मन में एक टीस छोड़ जाती है। वाइल्ड का अंग्रेजी के अतिरिक्त जर्मन और फ्रांसीसी पर भी असाधारण अधिकार था। उसके गहन अध्ययन की छाप उसकी रचनाओं में झलकती है।

समाज के नैतिक अनुशासन के प्रति वाइल्ड का विद्रोही स्वभाव उसकी रचनाओं में ही नहीं, निजी जीवन में भी प्रकट होता था। उसने विधि-निषेध के विषम धरातल पर निर्बाध चलने का प्रयास किया और ठोकर खाकर औंधे मुँह जा गिरा। सामाजिक बंधनों को नकारने वाले इस मनमौजी रचनाकार को बंदीगृह की यातना झेलनी पड़ी, जहाँ से छूटकर वह टूट गया। जैसा कि सामान्यत: सभी महान् रचनाकारों के साथ होता आया है, उसे भी निर्धनता के गहरे, अंधे गर्त में धकेल दिया गया, जहाँ एड़ियाँ रगड़-रगड़कर उसने 46 साल की अल्पायु में ही अंतिम साँस ली।

प्रस्तुत संकलन की कहानियों में पाठकों को वाइल्ड की रचनाओं के विविध आयामों और रंगों का परिचय मिले इसका प्रयास किया गया है। आशा है, यह हिंदी के साहित्यानुरागी पाठकों को पसंद आएगा।

—सुशील कपूर

सुखी राजकुमार

सुखी राजकुमार की मूर्ति नगर में एक ऊँचे चबूतरे पर स्थापित थी। प्रतिमा का राजकुमार सारा का सारा सोने के पत्तरों से मढ़ा हुआ था। उसकी आँखें चमचमाते नीलम की थीं और उसकी तलवार की मूठ पर एक बड़ा सा लाल माणिक जगमगा रहा था।

लोग उसकी तारीफ करते थकते न थे। एक निगम पार्षद उसे देखकर बोला, ''यह तो किसी वातसूचक सा सुंदर है।'' वह चाहता था कि लोगों में अपनी कलात्मक रुचि के लिए मशहूर हो जाए। लेकिन साथ ही बोला, ''हाँ, उसकी तरह उपयोगी नहीं।'' उसने सोचा कि कहीं लोग उसे अव्यवहारिक न समझ बैठें, जो कि वह था नहीं।

''तुम उस राजकुमार की तरह खुश क्यों नहीं रह सकते'', एक सयानी माँ ने चाँद के लिए मचलते अपने बेटे को समझाया, ''सुखी राजकुमार तो कभी किसी चीज को पाने के लिए रोने-धोने की सोचता तक नहीं।''

निराशा में डूबे एक आदमी ने उस शानदार मूर्ति की तरफ देखा तो बोला, ''मुझे संतोष है कि दुनिया में कम-से-कम एक तो ऐसा है, जो सचमुच सुखी है।'' तभी गिरजाघर से अनाथ बच्चों का एक झुंड निकला। उनकी चटक लाल कुरतियों पर उनकी झक सफेद कोटियाँ चमक रही थीं। ''ओह, यह तो बिलकुल किसी फरिश्ते जैसा लगता है।'' वे राजकुमार की तरफ देखकर बोले।

''तुम यह कैसे जानते हो ? तुम लोगों ने कभी फरिश्ता नहीं देखा।'' गणित के अध्यापक बोले।

''ओहो, लेकिन हमने अपने सपनों में तो फरिश्ता देखा है।'' बच्चों ने जवाब दिया। इस पर गणित के अध्यापकजी की त्योरियाँ चढ़ गईं। वे बहुत गंभीर हो गए। उनको बच्चों का सपने देखना बिलकुल पसंद नहीं था।

एक रात एक नन्हा अबाबील उड़ते-उड़ते उस नगर में आ गया। उसके साथ के सभी पक्षी छह सप्ताह पहले ही मिस्र चले गए थे, लेकिन वह पीछे ठहर गया था। उसे एक अत्यंत सुंदरी नरकुल से प्यार जो हो गया था। वसंत के आरंभ में उसकी मुलाकात इस सुंदरी से हुई थी। वह एक बड़े पीले मकोड़े का पीछा करता हुआ नदी के प्रवाह के साथ उड़ रहा था। तभी उसने उसे देखा और उसकी पतली कमर पर ऐसा फिदा हुआ कि उससे बातें करने के लिए रुक गया।

''क्या मैं तुम्हें प्यार कर सकता हूँ?'' अबाबील बोला। सीधे-सीधे मतलब की बात करना उसका स्वभाव था। इस पर नरकुल ने हलका सा सिर नवाया तो अबाबील मस्त होकर उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगा। वह अपने पंखों से पानी को छूता हुआ उड़ता तो उसमें रुपहली लहरियाँ उठने लगतीं। यह उसकी प्रणय याचना थी, जो गरमी भर चली।

''यह तो मूर्खतापूर्ण प्यार है'', बाकी अबाबील चहचहाए, ''इस नरकुल के पास तो एक धेला नहीं। इसके रिश्तेदारों की भी भरमार है।'' सचमुच नदी तो नरकुलों से भरी पड़ी थी। इसलिए शरद ऋतु आते ही वे दूर देश के लिए उड़ चले।

वे चले गए तो उसे अकेलेपन का एहसास हुआ। वह अपनी प्रेमिका से भी उकताने लगा। ''वह बात ही नहीं करती'', वह अपने आपसे बुदबुदाया। मुझे लगता है वह नखरेली है। वह हमेशा हवा से इश्क लड़ाती रहती है। वाकई ऐसा ही था। जब भी हवा के थपेड़े लगते, नरकुल तरह-तरह की अदाएँ दिखाती, बलखाती।'' मेरे खयाल में वह घरेलू किस्म की है'', वह आगे बोला, ''पर मुझे तो यात्राएँ करना पसंद है। मेरी पत्नी भी यात्रा-प्रेमी होनी चाहिए।''

''क्या तुम मेरे साथ चलोगी?'' आखिरकार उसने पूछा। पर नरकुल ने ना में सिर हिलाया। उसे अपने घर से बहुत

प्यार था।
''तुमने मेरे साथ धोखा किया है। मैं चला पिरामिडों के देश, अलविदा।'' इतना कहकर वह उड़ चला।
दिन भर वह उड़ता रहा। रात को इस नगर में पहुँचा। ''मैं कहाँ ठिकाना करूँ'', वह बोला, ''उम्मीद है इस शहर ने कुछ इंतजाम किया होगा।''
और फिर उसकी नजर उस ऊँचे चबूतरे पर पड़ी।
''मैं यहाँ ठहरूँगा'', वह बोला, ''यह बहुत अच्छी जगह है, यहाँ ताजा हवा आती है।'' फिर वह सीधा सुखी राजकुमार के पैरों के बीचोबीच उतरा।
''मेरा शयनकक्ष तो सोने का है।'' वह चारों तरफ नजर दौड़ाता हुआ धीमी आवाज में अपने आप से बोला। फिर वह सोने की तैयारी करने लगा। पर जैसे ही वह अपना सिर अपने पंखों के बीच छिपाने जा रहा था पानी की एक बूँद उस पर पड़ी। ''कितनी अजीब बात है'', वह बोला, ''आसमान में बादल का एक टुकड़ा तक नहीं है। तारे एकदम साफ जगमगा रहे हैं। फिर भी पानी बरस रहा है।'' उत्तरी यूरोप में मौसम वाकई बहुत बुरा होता है। नरकुल को बारिश बहुत पसंद थी, लेकिन वह उसका स्वार्थ ही था।
फिर एक और बूँद गिरी।
''इस मूर्ति का भी क्या फायदा अगर इसके नीचे भी बारिश से नहीं बच सकते। मुझे चलकर किसी घर की चिमनी का छज्जा खोजना चाहिए। उसने उड़ने का इरादा कर लिया।''
उसके पंख खोलने से पहले ही एक और बूँद गिरी। उसकी नजर ऊपर उठी। फिर उसने क्या देखा?
सुखी राजकुमार की आँखों में आँसू भरे थे। उसके सोने के गालों पर से आँसू नीचे लुढ़क रहे थे। चाँदनी में उसका चेहरा कितना सुंदर लग रहा था। नन्हे अबाबील का दिल हमदर्दी से भर आया।
''तुम कौन हो?'' उसने पूछा।
''मैं सुखी राजकुमार हूँ।''
''तो फिर रो क्यों रहे हो? तुमने तो मुझे तरबतर कर दिया है।'' अबाबील बोला।
''जब मैं जिंदा था और मेरे पास इनसान का दिल था'', मूर्ति ने जवाब दिया, ''तब मुझे पता तक न था कि आँसू क्या होते हैं। क्योंकि तब मैं साँस सोकी के राजमहल में रहता था, जहाँ दुःख को घुसने की भी इजाजत नहीं है। दिन में मैं अपने दोस्तों के साथ बाग में खेला करता था। रात को बड़े हॉल में नृत्य की अगुआई करता था। बाग के चारों तरफ ऊँची चारदीवारी थी। मैंने कभी पूछना भी नहीं चाहा कि उसके पार क्या है। मेरे आस-पास सबकुछ बहुत ही सुंदर था। मेरे दरबारी मुझे सुखी राजकुमार कहकर पुकारते थे। और सुखी तो मैं था ही, अगर ऐशोआराम को सुख कहते हैं तो। मैं इन हालात में जिया और इनमें ही मरा। मरने के बाद इन लोगों ने मुझे इस ऊँचाई पर स्थापित कर दिया है। लिहाजा अब मैं अपने नगर की सारी कुरूपता और दुःख-दर्द को देख सकता हूँ। हालाँकि अब मेरा दिल सीसे का बना है, लेकिन मैं रोए बिना नहीं रह सकता।''
''क्या यह ठोस सोने का बना नहीं है?'' अबाबील ने खुद से ही सवाल किया। वह विनम्रतावश ऐसा कोई निजी सवाल ऊँची आवाज में नहीं पूछ सकता था।
''बहुत दूर'', मूर्ति ने अपनी धीमी संगीतमय आवाज में कहा, ''बहुत दूर एक सँकरी गली में एक गरीब घर है। उसकी एक खिड़की खुली है। उसमें से मैं एक औरत को मेज पर बैठी देख रहा हूँ। उसका चेहरा दुबला और थका-माँदा है। उसके हाथ खुरदरे और लाल हैं। जगह-जगह सुइयाँ चुभने के निशान हैं। वह दरजिन है ना। वह एक साटिन के गाउन पर कृष्णकमल काढ़ रही है। इस गाउन को महारानी की सबसे सुंदर सहचरी को महल में होनेवाले

अगले नृत्य में पहनना है। उस कमरे के कोने में एक पलंग पर उस औरत का छोटा बेटा बीमार पड़ा है। उसे बुखार है और वह संतरे माँग रहा है। उसकी माँ के पास उसे नदी का पानी पिलाने के सिवा और कुछ नहीं है। इसलिए वह लगातार रो रहा है। अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील, क्या तुम उस तक मेरी तलवार में लगा माणिक पहुँचा दोगे? मेरे पाँव तो इस चबूतरे के साथ जड़े हुए हैं। मैं हिलडुल भी नहीं सकता।''

''मेरा वहाँ मिस्र में इंतजार हो रहा है'', अबाबील ने कहा, ''मेरे साथी नील के प्रवाह के ऊपर-नीचे उड़ते हुए कमलों से बातें कर रहे हैं। जल्दी ही वे महान् राजा के मकबरे में सोने के लिए चले जाएँगे। राजा भी अपने रंगीन कफन में लिपटा वहाँ मौजूद है। वह पीली लिनन में लिपटा हुआ है। उस पर रसायनों का लेप किया गया है। उसके गले में हरे-पीले रंग के जेड की माला है। उसके हाथ सूखे पत्तों के समान हैं।''

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील, क्या तुम एक रात रुककर मेरे संदेशवाहक नहीं बनोगे?'' राजकुमार बोला, ''छोटा लड़का कितना प्यासा है और उसकी माँ कितनी उदास है।''

''मैं लड़कों को पसंद नहीं करता'', अबाबील बोला, ''पिछली गरमियों में जब मैं नदी किनारे ठहरा हुआ था, तो वहाँ दो दुष्ट लड़के थे, चक्कीवाले के बेटे। वे हमेशा मुझ पर पत्थर फेंकते थे। मुझे कभी कोई पत्थर लगा नहीं। आखिर हम अबाबील ऊँची उड़ान भरने में इतने माहिर जो हैं। फिर मैं तो ऐसे परिवार का हूँ, जो अपनी फुरती के लिए मशहूर है। पर यह अपमानित करनेवाली हरकत तो थी ना।''

लेकिन सुखी राजकुमार इतना उदास लग रहा था कि उसे देखकर नन्हे अबाबील को बहुत दुःख हुआ। ''यहाँ बहुत सर्दी है'', वह बोला, ''फिर भी मैं एक रात यहाँ रुककर तुम्हारा संदेशवाहक बनूँगा।''

''धन्यवाद नन्हे अबाबील।'' राजकुमार ने कहा।

अबाबील ने राजकुमार की तलवार से वह बड़ा सा माणिक निकाल लिया। उसे अपनी चोंच में लेकर वह शहर की छतों पर से उड़ चला।

वह गिरजाघर के मीनार से होकर गुजरा, जहाँ संगमरमर में फरिश्तों की मूर्तियाँ तराशी गई थीं। वह महल पर से होकर गुजरा, जहाँ उसने नृत्य की आवाजें सुनीं। एक खूबसूरत लड़की अपने प्रेमी के साथ बालकनी में आई। ''आह, सितारे कितने सुंदर हैं'', वह बोला, ''और प्रेम का प्रभाव कितना सुंदर होता है।''

''उम्मीद करती हूँ कि महल में होनेवाले अगले नृत्य तक मेरी पोशाक तैयार हो जाएगी'', उसने जवाब में कहा, ''मैंने उस पर कृष्णकमल काढ़ने का आदेश दिया है। लेकिन ये दरजिनें बड़ी आलसी होती हैं।''

वह नदी पर से गुजरा। उसने जहाजों के मस्तूल पर टँगी लालटेनें देखीं। वह यहूदी टोले से गुजरा। उसने वहाँ बूढ़े यहूदियों को आपस में सौदेबाजी करते और ताँबे के तराजुओं में सिक्के तौलते हुए देखा। अंत में वह उस गरीब घर तक पहुँचा। उसने अंदर झाँका। बिस्तर पर लड़का बुखार की बेचैनी से करवटें ले रहा था। उसकी माँ को झपकी आ गई थी। वह इतनी ज्यादा थक गई थी न। वह फुदककर अंदर जा पहुँचा। उसने औरत के अंगुश्ताने के पास माणिक रख दिया। फिर उसने बहुत आहिस्ता से लड़के के बिस्तर के चारों तरफ उड़कर अपने पंखों से उसके माथे पर हवा की। ''अब मुझे कैसी ठंडक सी लग रही है'', लड़का बोला, ''जरूर मेरी तबीयत ठीक हो रही है।'' इसके बाद वह मीठी नींद सो गया।

अबाबील फिर उड़कर सुखी राजकुमार के पास आ गया। उसने राजकुमार को बताया कि क्या कुछ किया है। ''हैरानी की बात है'', वह बोला, ''अब मुझे गरमाहट महसूस हो रही है, हालाँकि यहाँ बहुत ठंडक है।''

''क्योंकि तुमने बहुत नेक काम किया है।'' राजकुमार ने कहा। नन्हा अबाबील इस पर कुछ सोचने लगा। फिर वह सो गया। कुछ सोचने पर उसे हमेशा नींद आ जाया करती थी।

सुबह हुई तो वह उड़कर नदी पर नहाने चला गया। ''कैसी अजीब बात है'', पुल पर से गुजरते हुए पक्षीविज्ञानी ने कहा, ''जाड़े में भी अबाबील दिखाई दे रहा है।'' उसने स्थानीय दैनिक में इस बारे में एक लंबा पत्र लिखा। हर कोई इसका उद्ध्धरण दे रहा था। इसमें ऐसे बहुत से शब्द थे, जो किसी के भी पल्ले नहीं पड़े।

''आज रात मैं मिस्र जाऊँगा।'' अबाबील ने कहा। इस संभावना से ही उसका मन उत्साह से भर गया। वह सभी सार्वजनिक भवनों पर गया और गिरजाघर की मीनार पर देर तक बैठा रहा। वह जहाँ भी गया, गौरैया उसे देखकर चहचहा उठीं। वे एक-दूसरे से बोलीं, ''देखो, कैसा विशिष्ट अजनबी आया है।'' यह सुनकर उसे बहुत अच्छा लगा।

चाँद निकलने पर वह उड़कर वापस सुखी राजकुमार के पास आ गया। ''क्या तुम्हें मिस्र में कोई काम है? मैं अभी वहाँ के लिए निकल रहा हूँ।'' वह बोला।

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील। क्या तुम मेरी खातिर एक रात और नहीं रुक सकते?'' राजकुमार ने कहा।

''मेरा मिस्र में इंतजार हो रहा है'', अबाबील ने जवाब दिया, ''कल मेरे साथी दूसरे बड़े झरने तक उड़कर जाएँगे। वहाँ दरियाई घोड़ा नरकुलों के पास लोटता है और ग्रेनाइट की एक विशाल चट्टान पर मेमनॉन देवता विराजते हैं। रात भर वे सितारों को देखते हैं। फिर जब भोर का तारा चमकता है तो वे खुशी से हुँकार भरकर मौन हो जाते हैं। दोपहर को भूरे रंग के शेर पानी के किनारे अपनी प्यास बुझाने के लिए आते हैं। उनकी आँखें हरे लहसुनिया सी हैं और उनकी गर्जना बड़े प्रपात की गर्जना से भी बढ़कर है।''

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील'', राजकुमार ने कहा, ''दूर नगर के पार एक दुछत्ती में मैं एक युवक को देख रहा हूँ। वह कागजों से भरी एक मेज पर झुका हुआ है। उसके पास ही एक गुलदान में मुरझाए नीलपुष्पों का एक गुलदस्ता है। उसके बाल भूरे और घुँघराले हैं। उसके होंठ अनार की तरह सुर्ख लाल हैं। उसकी बड़ी-बड़ी सपनीली आँखें हैं। वह रंगमंच के निदेशक के लिए एक नाटक पूरा करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह ठंड से इतना ठिठुर गया है कि अब उसके लिए और लिख पाना संभव नहीं। अँगीठी में आग नहीं जल रही है और भूख के मारे वह बहुत कमजोर हो गया है।''

''मैं तुम्हारे पास एक रात और रुक जाऊँगा'', नेकदिल अबाबील ने कहा, ''क्या मैं उसके लिए एक और माणिक ले जाऊँ?''

''आह, मेरे पास अब और माणिक नहीं है'', राजकुमार ने कहा, ''अब तो मेरे पास मेरी आँखें ही बची हैं। ये बहुमूल्य नीलम की हैं जो आज से हजार साल पहले भारत से मँगाए गए थे। इनमें से एक आँख निकाल लो और उसे उसके पास ले जाओ। वह इसे किसी जौहरी को बेचकर भोजन और अँगीठी के लिए लकड़ी खरीद सकेगा। फिर वह अपना नाटक भी पूरा कर लेगा।''

''प्यारे राजकुमार, मैं ऐसा नहीं कर सकता'', अबाबील ने कहा और वह रोने लगा।

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील'', राजकुमार बोला, ''जैसा मैं कहता हूँ, करो।''

इस पर अबाबील ने राजकुमार की एक आँख निकाली और उस पढ़ाकू की दुछत्ती की ओर उड़ चला। अंदर जाना आसान था, क्योंकि उसके छत में एक छेद था। उसमें से होकर वह कमरे में आ गया। उस युवक ने अपना सिर अपने हाथों के बीच छिपा रखा था। उसे पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई नहीं दी। जब उसने ऊपर देखा तो एक सुंदर नीलम मुरझाए हुए नीलपुष्पों पर पड़ा पाया।

''मेरी कद्र होने लगी है'', वह चिल्ला पड़ा, ''यह जरूर मेरे किसी बहुत बड़े प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक पूरा कर सकूँगा।'' वह बहुत खुश नजर आ रहा था।

अगले दिन अबाबील उड़कर बंदरगाह पर गया। वह एक बहुत बड़े जहाज के मस्तूल पर बैठ गया। उसने नाविकों को जहाज के डेक के नीचे के सामानघर से बड़ी-बड़ी पेटियाँ रस्सियों से ऊपर खींचते देखा। वे 'हैया हो हैया' चिल्लाते हुए एक-एक पेटी ऊपर खींच रहे थे। ''मैं मिस्र जा रहा हूँ।'' अबाबील ने चिल्लाकर कहा। पर किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। फिर जब चाँद उगा तो वह उड़कर सुखी राजकुमार के पास आ गया।

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील'', राजकुमार बोला, ''क्या तुम एक रात और मेरे पास नहीं ठहरोगे?''

''जाड़ा शुरू हो गया है'', अबाबील ने जवाब दिया, ''जल्दी ही बर्फ गिरने लगेगी। मिस्र में खजूर के हरे पेड़ों पर गरम धूप पड़ती है। वहाँ मगरमच्छ अलसाकर कीचड़ में लेटे होते हैं। मेरे साथी बालबॅक के मंदिर में अपने घोंसले बना रहे हैं। गुलाबी और सफेद फाख्ताएँ उनको देखती हुई एक-दूसरी से गुटरगूँ कर रही हैं। प्यारे राजकुमार, मुझे अब तुमसे विदा लेना होगा। पर मैं तुम्हें कभी भूलूँगा नहीं। अगले वसंत में जब मैं आऊँगा तो तुम्हारे लिए खूबसूरत जवाहर लाऊँगा। उनके बदले जो तुमने खो दिए हैं। माणिक लाल गुलाब से भी लाल होगा और नीलम महासागर जैसा नीला होगा।''

''नीचे चौक में माचिसें बेचनेवाली एक छोटी लड़की खड़ी है'', सुखी राजकुमार बोला, ''उसने अपनी सारी माचिसें नाले में गिरा दी हैं और अब वे बेकार हो गई हैं। वह घर पर पैसे लेकर नहीं जाएगी तो उसका बाप उसे मारेगा। वह रो रही है। उसके पाँव में न जूते हैं न जुराबें। उसके सर पर टोपी भी नहीं है। मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दे दो, फिर उसका बाप उसे नहीं मारेगा।''

''मैं तुम्हारे साथ एक रात और रुकने को तैयार हूँ'', अबाबील ने कहा, ''लेकिन मैं तुम्हारी आँख नहीं निकाल सकता। तब तो तुम अंधे ही हो जाओगे।''

''अबाबील, अबाबील, नन्हे अबाबील'', राजकुमार बोला, ''जो मैंने कहा है करो।''

इस पर उसने राजकुमार की दूसरी आँख भी निकाल ली और उसे लेकर नीचे को उड़ा। वह माचिस बेचनेवाली लड़की के पास से उड़कर निकला और उसने वह जवाहर उसकी हथेली पर गिरा दिया। ''कितना सुंदर काँच का टुकड़ा है।'' लड़की चिल्लाई और उसे लेकर हँसती हुई अपने घर की तरफ भागी।

फिर अबाबील वापस राजकुमार के पास आ गया। ''अब तुम अंधे हो गए हो'', अबाबील बोला, ''इसलिए अब मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगा।''

''नहीं, नन्हे अबाबील'', बेचारा राजकुमार बोला, ''तुम्हें अवश्य मिस्र जाना चाहिए।''

''मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगा।'' अबाबील बोला। और वह राजकुमार के पैरों के पास सो गया।

अगले सारे दिन वह राजकुमार के कंधे पर बैठकर उसे विचित्र देशों की यात्राओं में जो कुछ देखा था, उनका हाल सुनाता रहा। उसने राजकुमार को लाल रंग के सारसों के बारे में बताया। वे नील नदी के किनारे कतारों में खड़े रहते हैं और अपनी चोंच से सोनमछलियाँ पकड़ते हैं। उसने राजकुमार को स्फिंक्स के बारे में बताया, जो उतने ही पुराने हैं, जितनी की यह दुनिया। वे रेगिस्तान में निवास करते हैं और सबकुछ जानते हैं। वे उन सौदागरों के बारे में जानते हैं, जो अपने ऊँटों के साथ-साथ धीमी रफ्तार से चलते हैं। उनके हाथों में अंबर की जपमालाएँ होती हैं। पहाड़ों और चंद्रमा के राजा के बारे में बताया, जो आबनूस की तरह काला है और एक बड़े स्फटिक की पूजा करता है। खजूर के पेड़ पर सोनेवाले बड़े हरे साँप के बारे में बताया, जिसके 20 पुजारी उसे शहदवाले मीठे रोट खिलाते हैं। उन भौंरों के बारे में बताया, जो बहुत बड़े पत्तों पर बड़ी झील में तैरते हैं और जिनकी तितलियों से सदा लड़ाई होती रहती है।

''प्यारे नन्हे अबाबील'', राजकुमार बोला, ''तुम मुझे विचित्र चीजों के बारे में बता रहे हो, लेकिन इन सबसे कहीं

अधिक विचित्र है पुरुष और स्त्रियों का कष्ट। दु:ख भोगने से बड़ा रहस्य कोई नहीं। नन्हे अबाबील, मेरे शहर पर उड़ो और फिर जो कुछ देखो, वह आकर मुझे बताओ।''

लिहाजा अबाबील उस बड़े शहर पर उड़ा। उसने अमीरों को अपने आलीशान घरों में मौज-मस्ती करते देखा, जबकि भिखारी उनके दर पर बैठे थे। वह अँधेरी गलियों में उड़ा। वहाँ उसने भोजन के लिए तरसते भूखे बच्चों के सफेद चेहरे देखे। वे उदासीन आँखों से काली सड़क की ओर देख रहे थे। एक पुल की मेहराब के नीचे दो बच्चे एक-दूसरे की बाँहों में लिपटे खुद को गरम रखने की कोशिश में पड़े थे। ''हाय, हम कितने भूखे हैं।'' वे बोले। तभी चौकीदार आकर चिल्लाया, ''चलो, भागो, यहाँ मत लेटो।'' वे बरसते पानी में बाहर निकलकर भागे।

वह उड़कर लौटा और जो कुछ देखा था, वह राजकुमार को कह सुनाया।

''मेरा शरीर खरे सोने से मढ़ा हुआ है'', राजकुमार बोला, ''इसका एक-एक पत्तर उखाड़कर गरीबों में बाँट दो। जिंदा लोग सोचते हैं कि सोना उनकी जिंदगी में खुशियाँ ला सकता है।''

नन्हे अबाबील ने एक के बाद एक पत्तर उतार लिया, जब तक कि राजकुमार मटमैला सलेटी नहीं रह गया। एक-एक पत्तर वह लाकर गरीबों को देता रहा जिससे बच्चों के चेहरे खुशी से गुलाबी हो गए। वे गलियों में हँसने-खेलने लगे। ''अब हमारे पास रोटी है।'', वे चिल्लाते थे।

फिर बर्फ पड़ी और उसके बाद कोहरा छा गया। सड़कें ऐसी झिलमिल-चमकदार हो गईं, मानो चाँदी की बनी हों। बिल्लौर के खंजरों जैसे हिमलंब घरों के छज्जों से लटक रहे थे। हर कोई फर के कपड़े पहनकर आ-जा रहा था। चटक लाल टोपियाँ पहने लड़के बर्फ पर स्केटिंग कर रहे थे।

बेचारा नन्हा अबाबील ठंड से ठिठुरता जा रहा था, लेकिन उसे राजकुमार से इतना प्यार हो गया कि उसे छोड़कर जाने को तैयार न था। जब नानबाई की नजर उधर न हो तो वह उसकी दुकान के सामने से रोटी के टुकड़े उठा लाता और खुद को गरम रखने की कोशिश में अपने पंख फड़फड़ाता रहता।

आखिरकार वह समझ गया कि वह मरनेवाला है। उसमें थोड़ी सी हिम्मत बची थी। उसी के बल पर वह आखिरी बार राजकुमार के कंधे तक उड़कर गया। ''अलविदा, प्यारे राजकुमार'', वह फुसफुसाया, ''क्या मैं तुम्हारा हाथ चूम सकता हूँ?''

''नन्हे अबाबील, मुझे खुशी है कि तुम अब मिस्र जा रहे हो'', राजकुमार बोला, ''तुम इतनी देर मेरे पास रुके रहे। अब तुम मेरे होंठों का चुंबन लो। क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।''

''मैं मिस्र नहीं मौत के घर जा रहा हूँ'', अबाबील ने कहा, ''मैं मौत के घर जा रहा हूँ। मौत नींद का भाई है न! है कि नहीं?'' उसने राजकुमार के होंठों का चुंबन लिया और मरकर उसके पैरों पर जा गिरा।

उसी समय मूर्ति के अंदर से एक अजीब सी आवाज आई, जैसे कुछ टूट गया हो। दरअसल उसके सीसे के दिल के दो टुकड़े हो गए थे। कोहरा वाकई बहुत जबरदस्त था।

अगली सुबह मेयर अपने निगम पार्षदों के साथ चौक में घूम रहे थे। जब वे चबूतरे के पास पहुँचे तो उन्होंने मूर्ति की तरफ देखा। ''आह, सुखी राजकुमार कितना भद्दा दिखता है।'' वे बोले।

''वाकई कितना भद्दा।'' निगम पार्षद चिल्ला पड़े। वे हर बात में मेयर से सहमत रहते थे। वे सब उसकी तरफ देखने लगे।

''उसकी तलवार से माणिक गिर गया है। उसकी आँखें भी नहीं रहीं और वह अब सुनहरा भी नहीं है'', मेयर ने कहा, ''दरअसल वह तो अब किसी भिखारी जैसा ही लगता है।''

''किसी भिखारी जैसा।'', नगर पार्षद बोले।

''और उसके पैरों के पास एक पक्षी मरा पड़ा है।'' मेयर ने आगे कहा, ''हमें घोषणा करनी चाहिए कि पक्षियों को यहाँ मरने की इजाजत नहीं है।'' नगर के क्लर्क ने तुरंत उनके सुझाव को लिख लिया।

उन्होंने सुखी राजकुमार की मूर्ति को गिरा दिया। ''चूँकि वह अब सुंदर नहीं रही, इसलिए उसका अब कोई उपयोग नहीं।'' विश्वविद्यालय के आर्ट प्रोफेसर ने कहा।

उसके बाद उन्होंने मूर्ति को एक भट्ठी में गलाया। फिर मेयर ने नगर निगम में यह निर्णय लेने के लिए बैठक बुलाई कि उस धातु का क्या उपयोग किया जाए। हमें अब उसकी जगह एक और मूर्ति लगानी होगी और वह मूर्ति मेरी होगी।'' उन्होंने कहा।

''मेरी होगी।'' निगम पार्षदों में से हरेक ने कहा। फिर वे इस मुद्दे को लेकर आपस में झगड़ने लगे। आखिरी बार जब उनकी आवाज मैंने सुनी, तब भी वे झगड़ रहे थे।

''कैसी अजीब बात है'', ढलाईखाने के ओवरसियर ने कहा, ''सीसे का यह टूटा हुआ दिल भट्ठी में भी गल नहीं रहा है। हमें इसे फेंक देना चाहिए।'' उन्होंने उस टुकड़े को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया, जहाँ मरा हुआ अबाबील भी पड़ा था।

''उस नगर से मेरे लिए दो सबसे अनमोल चीजें लाकर दो।'' ईश्वर ने अपने एक फरिश्ते को आदेश दिया। फरिश्ता गया और ईश्वर के लिए सीसे का टूटा हुआ दिल और मरा हुआ अबाबील ले आया।

''तुमने बिलबुल ठीक चुनाव किया'', ईश्वर बोले, ''क्योंकि मेरे स्वर्ग के बाग में यह नन्हा पक्षी सदा गाएगा। और मेरी स्वर्णनगरी में सुखी राजकुमार मेरा गुणगान किया करेगा।

❑

बुलबुल और गुलाब

''वह बोली अगर मैं उसके लिए लाल गुलाब लाऊँ, तभी मेरे साथ डांस करेगी'', युवा छात्र बड़बड़ाया, ''पर मेरे बाग में कोई लाल गुलाब नहीं है।''

सदाबहार ओक पर बने अपने घोंसले में बैठी बुलबुल ने उसकी बात सुन ली। उसने पत्तों में से चारों तरफ उत्सुकता से देखा।

''मेरे सारे बाग में एक भी लाल गुलाब नहीं है।'' वह चिल्लाया। उसकी सुंदर आँखें आँसुओं से भर आईं। ''आह, खुशी भी किन छोटी-छोटी बातों पर निर्भर करती है। विद्वानों ने जो कुछ लिखा है, वह सब मैंने पढ़ा है, दर्शनशास्त्र के सब रहस्यों को मैं जानता हूँ। फिर भी एक लाल गुलाब की कमी ने मेरे जीवन को दु:खमय बना दिया है।''

''यह एक सच्चा प्रेमी है'', बुलबुल बोली, ''हर रात मैं जिसके गीत गाती रही हूँ। हर रात मैं सितारों को, जिसकी कहानियाँ सुनाती रही हूँ। और अब वह मेरे सामने है। उसके बाल सांबूल पुष्प के समान गहरे रंग के हैं। उसके होंठ उसके अभीप्सित लाल गुलाब जैसे हैं, लेकिन प्रेम के आवेश ने उसके चेहरे को पीले हाथी दाँत के रंग का बना दिया है। और दु:ख ने तो उसके माथे पर अपनी मुहर ही लगा दी है।''

''राजकुमार कल रात नृत्य का आयोजन कर रहे हैं'', वह छात्र बोला, ''तब मेरी प्रेयसी भी मेरे साथ होगी। अगर मैं उसे लाल गुलाब दूँ तो वह मेरे साथ सुबह तक नृत्य करेगी। मैं उसे अपनी बाँहों में ले लूँगा। वह मेरे कंधे पर अपना सिर टिका देगी। उसका हाथ मेरे हाथ में होगा, लेकिन मेरे बाग में कोई लाल गुलाब है ही नहीं। तब तो मैं अकेला बैठा रहूँगा और वह मेरे पास से गुजर जाएगी। वह मेरी एक न सुनेगी और मेरा दिल टूट जाएगा।''

''यह एक सच्चा प्रेमी है'', बुलबुल बोली, ''जिसके मैं गीत गाती हूँ उसी के कारण यह दु:ख पा रहा है। मेरे लिए जो आनंद है, वही इसके लिए पीड़ा है। सचमुच प्रेम बहुमूल्य है। यह पन्ने से भी कीमती है, रत्नोपल से भी मूल्यवान्। मोती और माणिक से भी इसे खरीदा नहीं जा सकता। न ही यह बाजार में बिकता है। इसे व्यापारी खरीद नहीं सकते। न ही इसे सोने से तौला जा सकता है।''

''साजिंदे गलियारे में बैठेंगे'', वह युवा छात्र बोला, ''वे अपने-अपने साज बजाएँगे। मेरी प्रेमिका वीणा और वायलिन की धुन पर नाचेगी। वह इतनी फुरती से नाचेगी कि उसके पाँव धरती पर नहीं पड़ेंगे। और अपनी चटक पोशाकों में दरबारी उसके चारों तरफ मँडराएँगे। पर वह मेरे साथ नहीं नाचेगी, क्योंकि मेरे पास उसे देने को लाल गुलाब नहीं है।'' वह घास पर पसर गया। फिर अपना चेहरा अपने हाथों से ढककर रोने लगा।

''वह रो क्यों रहा है?'' हवा में पूँछ उठाए उसके पास से गुजरती हुई नन्ही हरी गिरगिट ने पूछा।

''हाँ, आखिर क्यों?'', सूर्य की एक किरण का पंख फड़फड़ाकर पीछा करती तितली बोली।

''हाँ, आखिर क्यों?'' नन्हे गुलबहार ने अपने पास के गुलबहार से धीमी फुसफुसाहट में पूछा।

''वह एक लाल गुलाब के लिए रो रहा है?'' बुलबुल ने बताया।

''एक लाल गुलाब के लिए'', वे एक साथ चिल्ला पड़े, ''कैसी बेतुकी बात है। और नन्ही गिरगिट जो कुछ सनकी सी थी, जोर से हँस पड़ी।

लेकिन बुलबुल छात्र के दु:खी होने का रहस्य समझ गई। वह चुपचाप ओक वृक्ष पर बैठी प्रेम के रहस्य के बारे में सोचने लगी।

फिर अचानक उसने उड़ान भरने के लिए अपने भूरे पंख फैलाए और हवा में ऊँचे उड़ चली। वह पेड़ों के झुरमुट पर से साए की तरह उड़ी और साए की तरह ही बाग पर से भी उड़कर निकल गई। घास के मैदान के बीचोबीच

गुलाब का एक सुंदर पौधा था। उसे देखते ही वह उस तरफ उड़कर आई और उसकी एक टहनी पर आहिस्ता से बैठ गई।

''मुझे एक लाल गुलाब दे दो'', वह बोली, ''और मैं तुम्हें अपना सबसे मीठा गीत सुनाऊँगी।'' लेकिन पौधे ने अपना सिर इनकार में हिलाया।

वह बोला, ''मेरे गुलाब सफेद हैं। समुद्रफेन से सफेद। और पहाड़ों की बर्फ से भी ज्यादा सफेद। तुम मेरे भाई के पास जाओ। वह पुरानी धूपघड़ी के पास है। जो तुम्हें चाहिए शायद वह दे सकता है।''

बुलबुल उड़कर पुरानी धूपघड़ी के पास उगे गुलाब के पौधे के पास गई।

''मुझे एक लाल गुलाब दे दो'', वह बोली, ''और मैं तुम्हें अपना सबसे मीठा गीत सुनाऊँगी।''

लेकिन उस पौधे ने इनकार में सिर हिलाया।

''मेरे गुलाब पीले हैं'', वह बोला, ''अंबर के सिंहासन पर बैठनेवाली जलपरी के बालों जैसे पीले। घास के मैदान में उगनेवाले नरगिस के फूलों से भी अधिक पीले, जब तक कि माली अपनी हँसिया लेकर उनको काटने के लिए नहीं आ जाता। तुम छात्र की खिड़की के नीचे उगनेवाले मेरे भाई के पास जाओ, जो तुम्हें चाहिए शायद वह दे सके।''

बुलबुल उड़कर छात्र की खिड़की के नीचे उगनेवाले गुलाब के पौधे के पास गई।

''मुझे एक लाल गुलाब दे दो'', वह बोली, ''और मैं तुम्हें अपना सबसे मीठा गीत सुनाऊँगी।''

लेकिन पौधे ने इनकार में अपना सिर हिलाया।

''मेरे गुलाब लाल हैं'', वह बोला, ''फाख्ता के पंजों जैसे लाल। समुद्र की कंदराओं में लहरानेवाले मूँगों के समूहों से भी अधिक लाल, लेकिन जाड़े ने मेरी नसों को सुन्न कर दिया है। पाले ने मेरी कलियों को कुचल दिया है। तूफान ने मेरी टहनियों को तोड़ डाला है। अब इस साल मेरे पास कोई गुलाब नहीं होंगे।''

''मुझे तो एक लाल गुलाब चाहिए'', बुलबुल बोली, ''सिर्फ एक लाल गुलाब! क्या ऐसा कोई तरीका नहीं जिससे वह मिल सके?''

''एक तरीका है'', पौधे ने कहा, ''लेकिन वह ऐसा भयानक है कि तुमसे बताने का साहस नहीं हो रहा है।''

''मुझे बताओ'', बुलबुल बोली, ''मैं नहीं डरती।''

''अगर तुम्हें एक लाल गुलाब चाहिए'', पौधे ने कहा, ''तो तुम ऐसा गुलाब चाँदनी रात में अपने संगीत से बना सकती हो, लेकिन उसे तुम्हें अपने हृदय के रक्त से रँगकर लाल बनाना होगा। तुम अपनी छाती मेरे एक काँटे के साथ सटाकर मेरे लिए गाओगी। रात भर तुमको मेरे लिए गाना होगा। काँटा तुम्हारे दिल को भेद डालेगा। तुम्हारे जीवन का रक्त मेरी धमनियों में प्रवाहित होकर मेरा हो जाएगा।''

''मौत एक लाल गुलाब के लिए बहुत बड़ी कीमत है'', बुलबुल बोली, ''और जान सबको बहुत प्यारी होती है। हरे-भरे जंगल में बैठकर सूर्य को अपने सुनहरे रथ पर और चंद्रमा को अपने मोती के रथ पर आते देखने में कितना आनंद है। बनसंजली की महक कितनी भीनी-भीनी होती है। वादियों में लुके-छिपे नीले घंटीपुष्प और पहाड़ी पर खिलने वाली झड़बेरी कितनी सुहानी लगती है! फिर भी प्रेम जीवन से बेहतर है। और फिर किसी मनुष्य के हृदय की तुलना में किसी चिड़िया का हृदय क्या है!''

फिर उसने उड़ान के लिए अपने भूरे पंख फैलाए और हवा में ऊँचे उड़ चली। वह पेड़ों के झुरमुट पर से साए की तरह उड़ी और साए की तरह ही बाग पर से उड़कर निकल गई।

युवा छात्र अब भी घास पर वहीं लेटा था, जहाँ वह उसे छोड़कर आई थी। उसकी सुंदर आँखों में आँसू अभी भी

सूखे न थे।
''खुश हो जाओ'', बुलबुल बोली, ''खुश हो जाओ, क्योंकि तुमको अपना लाल गुलाब मिलेगा। मैं चाँदनी रात में अपने गीत से उसे पैदा करूँगी और अपने हृदय के रक्त से उसे रँगूँगी। बदले में मैं तुमसे केवल यह चाहती हूँ कि तुम सच्चे प्रेमी बनना। क्योंकि प्रेम दर्शन से अधिक बुद्धिमान् होता है, हालाँकि दर्शन बहुत बुद्धिमान् है। वह शक्ति से अधिक बलशाली होता है, हालाँकि वह बहुत बलशाली होती है। उसके पंख ज्वाला के रंग के हैं और उसका शरीर भी ज्वाला के रंग का है। उसके होंठ शहद से मीठे हैं और उसकी साँसें लोबान सी सुवासित होती हैं।''
छात्र ने घास पर से ऊपर देखा। उसने सुना भी, लेकिन वह समझ नहीं पाया कि बुलबुल आखिर कह क्या रही है? क्योंकि वह तो सिर्फ उन बातों को जानता था, जो किताबों में लिखी थीं, लेकिन ओक वृक्ष समझ गया। वह उदास हो गया। क्योंकि उसकी शाखों पर घोंसला बनानेवाली नन्हीं बुलबुल को वह बहुत चाहता था।
''मेरे लिए एक अंतिम गीत गा दो'', वह बोला, ''क्योंकि तुम्हारे जाने के बाद मैं बहुत अकेला हो जाऊँगा।''
फिर बुलबुल ने ओक वृक्ष को अपना गीत सुनाया। उसकी आवाज ऐसी मधुर थी, जैसे चाँदी के कलश से कलकल-छलछल करके जलाधर गिर रही हो।
जब उसका गीत समाप्त हो गया, छात्र अपने स्थान से उठा। उसने अपनी जेब से एक नोटबुक और पेंसिल निकाली।
''उसके पास रूप तो है'', वह अपने आप से बुदबुदाता हुआ पेड़ों के झुरमुट से बाहर निकल आया, ''इससे इनकार नहीं किया जा सकता। पर क्या उसके पास भावनाएँ भी हैं? मेरे विचार से नहीं। दरअसल वह अधिकांश कलाकारों की तरह है, उसमें अदाएँ और शैली तो हैं, निष्कपट अपनापन नहीं। वह दूसरों के लिए आत्मत्याग नहीं कर सकती। वह केवल संगीत के बारे में सोचती रहती है और यह तो सभी जानते हैं कि कलाएँ स्वार्थी होती हैं।
फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि उसकी आवाज में कुछ सुंदर सुर हैं। कितने अफसोस की बात है कि वे निहायत बेमानी हैं और उनसे कोई लाभ नहीं हो सकता। वह अपने कमरे में आकर अपनी छोटी सी उठौआ चारपाई पर लेट गया। वह अपने प्यार के बारे में सोचने लगा और कुछ देर बाद उसे नींद आ गई।
जब आकाश में चाँद निकला तो बुलबुल उड़कर गुलाब के पौधे पर आई। उसने अपनी छाती काँटे के साथ सटा दी। रातभर वह अपनी छाती काँटे से सटाए-सटाए गाती रही। ठंडा बिल्लौरी चाँद नीचे झुककर सुनता रहा। रातभर वह गाती रही और काँटा उसके दिल में गहराई में धँसता चला गया। उसका जीवन-रक्त उससे निसृत होता रहा।
पहले उसने एक लड़के और लड़की के दिल में प्रेम उत्पन्न होने का गीत गाया और गुलाब के पौधे की सबसे ऊँची फुनगी पर एक सुंदर गुलाब उग आया। जैसे-जैसे गीत आगे बढ़ता गया, गुलाब की पंखड़ियाँ भी एक के बाद एक प्रकट होती गईं। पहले वह पीला था। उसी तरह जैसे सुबह-सवेरे पीली नदी पर छाया कोहरा। और सुबह के चाँदी जैसे पंखों सा सफेद। जैसे किसी गुलाब का अक्स चाँदी के आईने में पड़ रहा हो। या फिर जैसे किसी तालाब में गुलाब की छाया हो। कुछ ऐसा ही था वह गुलाब जो पौधे की सबसे ऊँची फुनगी पर उग आया था।
फिर वृक्ष ने बुलबुल से चिल्लाकर कहा कि काँटे के साथ और जोर से सट जाओ। ''और जोर से काँटे के साथ सट जाओ, नन्ही बुलबुल'', वह चिल्लाया, ''नहीं तो फूल के पूरी तरह खिलने से पहले सुबह हो जाएगी।''
इसपर बुलबुल काँटे के साथ और कसके सट गई। उसने और भी ऊँचे स्वर में गाना आरंभ किया। यह एक आदमी और औरत की आत्मा में जगनेवाले प्रेम के आवेश का गीत था।
अब गुलाब की पंखड़ियों में एक हलके गुलाबीपन का आभास होने लगा। कुछ वैसा ही जब कोई दूलहा अपनी दुलहन का चुंबन लेता है तो उसका चेहरा हलका गुलाबी हो जाता है, लेकिन काँटा अभी उसके दिल तक नहीं

पहुँचा था। इसलिए गुलाब का दिल भी अभी सफेद ही रह गया था। क्योंकि किसी बुलबुल के दिल का खून ही गुलाब के दिल को लाल रंग दे सकता है।

फिर वृक्ष ने बुलबुल से चिल्लाकर कहा कि काँटे के साथ और जोर से सट जाओ। ''और जोर से काँटे से सट जाओ, नन्ही बुलबुल'', वह चिल्लाया, ''नहीं तो फूल के पूरी तरह खिलने से पहले सुबह हो जाएगी।''

इस पर बुलबुल काँटे से और कसकर सट गई। अब काँटा उसके दिल को छू रहा था। दर्द की एक तेज लहर उसके शरीर में दौड़ गई। तेज, बहुत तेज था वह दर्द। और इसके साथ ही उसका गीत और भी तीव्र होता गया। उसने उस प्रेम का गीत गाया, जो मृत्यु से परिपूर्ण होता है और जो कब्र में भी मरता नहीं।

अब वह सुंदर गुलाब लाल हो गया। वह पूर्व के आकाश में उगनेवाले गुलाब सा लाल था। उसकी पंखड़ियों के छोर गहरे लाल थे और उसका दिल माणिक के समान लाल था।

लेकिन अब बुलबुल की आवाज धीमी पड़ रही थी। उसके नन्हे पर फड़फड़ाने लगे थे। उसकी आँखों के आगे अँधेरे का परदा सा आ गया था। उसका गीत और भी धीमा होता गया एवं उसे लगा कि उसका गला अवरुद्ध हो रहा है।

फिर उसने गीत की अंतिम तान छेड़ी। सफेद चाँद ने उसे सुना। वह सुबह के बारे में भूल गया और आकाश में ठहरा रहा। लाल गुलाब ने उसे सुना एवं उसका शरीर खुशी से कँपकँपा गया और उसने सुबह की ठंडी हवा में अपनी पँखुरियाँ खोल दीं। प्रतिध्वनि ने अपनी बैंगनी घाटी में सदा दी, जिससे चरवाहे अपने सपनों से जाग गए। वह नदी के नरकुलों से होकर गूँजी और उन्होंने यह संदेश समुद्र तक पहुँचा दिया।

''देखो, देखो'', पौधा चिल्ला पड़ा, ''गुलाब अब पूरी तरह खिल उठा है।'' लेकिन बुलबुल ने कोई जवाब नहीं दिया। क्योंकि वह तो अपने दिल में काँटा चुभोए लंबी घास में मृत पड़ी थी।

दोपहर हुई तो छात्र ने अपनी खिड़की खोलकर बाहर झाँका।

''आह, मेरी भी कैसी शानदार किस्मत है'', वह खुशी से चिल्लाया, ''कैसा लाल सुर्ख गुलाब है! मैंने अपनी जिंदगी में कभी भी ऐसा गुलाब नहीं देखा। यह इतना सुंदर है कि लैटिन में इसका जरूर कोई लंबा सा नाम होगा।'' फिर उसने नीचे झुककर उसे तोड़ लिया।

इसके बाद उसने अपना हैट पहना और हाथ में गुलाब लेकर प्रोफेसर के घर की तरफ दौड़ा।

प्रोफेसर की बेटी द्वारपथ में बैठी एक फिरकी पर नीला रेशम लपेट रही थी। उसका छोटा कुत्ता उसके पैरों के पास बैठा था।

''तुमने कहा था कि अगर मैं तुम्हारे लिए एक लाल गुलाब ला दूँ तो तुम मेरे साथ डांस करोगी'', वह बोला, ''यह देखो, मैं दुनिया का सबसे लाल गुलाब लाया हूँ। तुम आज रात इसे अपने दिल के पास लगाओगी। फिर जब हम इकट्ठे नाचेंगे तो यह तुम्हें बताएगा कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।''

लड़की ने बुरा सा मुँह बनाया, ''मेरे खयाल से यह मेरी ड्रेस के साथ मेल नहीं खाएगा। और फिर महाप्रतिहार के भतीजे ने मेरे लिए कुछ असली जवाहरात भेजे हैं। यह तो सभी जानते हैं ना कि जवाहरात फूलों से कहीं ज्यादा कीमती होते हैं।''

''कसम से तुम बड़ी बेवफा हो।'' छात्र ने गुस्से से कहा। उसने वह फूल रास्ते पर फेंक दिया। फूल एक गंदे गड्ढे में गिरा और एक छकड़े के पहिए के नीचे आकर कुचल गया।

''बेवफा, हुँह'', लड़की बोली, ''मैं बताऊँ तुम क्या हो—एकदम अशिष्ट और गुस्ताख। और तुम हो क्या? सिर्फ एक छात्र। मेरे खयाल में तुम्हारे पास तो महाप्रतिहार के भतीजे की तरह जूते में चाँदी के बकल तक नहीं हैं।''

इसके बाद वह अपनी कुरसी से उठकर घर के अंदर चली गई।

''प्यार भी कैसी हिमाकत है'', चलते-चलते छात्र बोला, 'यह तर्क से आधा भी उपयोगी नहीं, क्योंकि इससे कुछ भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। यह हमेशा कुछ ऐसा बताता रहता है, जो होना नहीं होता। यह तुम्हें ऐसी बातों पर विश्वास कराता है, जो सच्ची नहीं होतीं। असल में यह नितांत अव्यवहारिक है और आज के जमाने में व्यवहारिक होना ही सबकुछ है। मैं दर्शनशास्त्र में लौट जाऊँगा और तत्त्वमीमांसा का अध्ययन करूँगा।''

अपने कमरे में लौटकर उसने एक बड़ी पुस्तक निकाली। उस पर से धूल झाड़ी और पढ़ना शुरू कर दिया।

❑

स्वार्थी दानव

हर शाम स्कूल से आने के बाद बच्चे खेलने के लिए दानव के बाग में जाया करते थे।

यह एक बहुत बड़ा और सुंदर बाग था। उसकी घास हरी-भरी और मुलायम थी। घास के ऊपर इधर-उधर सितारों के समान सुंदर फूल खिले हुए थे। वहाँ आड़ू के बारह पेड़ थे। वसंत आता तो उन वृक्षों पर गुलाबी और मोती के से सफेद फूल खिल जाते। शरद में उन पर रसीले फल आ जाते। उन पेड़ों पर बैठकर चिड़ियाँ इतने मीठे गीत गातीं कि बच्चे कई बार अपना खेलना छोड़कर उन्हें सुनने लगते। ''यहाँ आकर हमें कितनी खुशी मिलती है।'' वे एक-दूसरे से कहते।

फिर एक दिन क्या हुआ कि दानव वापस अपने घर लौट आया। वह अपने दोस्त कार्निस राक्षस से मिलने गया हुआ था और सात साल उसके यहाँ ठहरा था। जब सात साल पूरे हो गए तब उसने अपने दोस्त से जो कुछ कहना था, वह सब कह चुका, क्योंकि वह बहुत अधिक बातें करने का आदी नहीं था तो उसने तय किया कि अब अपने किले में लौट चलना चाहिए। जब वह लौटा तो क्या देखता है कि बच्चे उसके बाग में खेल रहे हैं।

''तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?'' वह अपनी भयानक आवाज में जोर से गुर्राया तो बच्चे सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए।

''मेरा बाग मेरा अपना बाग है'', दानव बोला, ''हर किसी को इस बात की समझ होनी चाहिए। इसमें मैं अपने सिवा किसी और को खेलने नहीं दूँगा।'' इसके बाद उसने बाग के चारों तरफ एक ऊँची चारदीवारी खड़ी कर दी और एक सूचनापट भी टाँग दिया—

अनधिकार प्रवेश करनेवालों के विरुद्ध काररवाई की जाएगी

वह बहुत ही स्वार्थी दानव था।

बेचारे बच्चों के पास अब ऐसी कोई जगह न थी, जहाँ जाकर खेलें। उन्होंने कोशिश की कि सड़क पर खेलें, लेकिन सड़क धूल और बहुत सख्त पत्थरों से भरी हुई थी। इसलिए बच्चों को वह पसंद नहीं आई। अपनी पढ़ाई खत्म होने के बाद वे उस ऊँची दीवार के चक्कर लगाते हुए उसके अंदर के सुंदर बाग के बारे में बातें करते। ''वहाँ हम कितने खुश थे।'', वे एक-दूसरे से कहते।

फिर वसंत आया। सारे देहात में नन्ही कलियाँ खिल उठीं और नन्ही चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। पर स्वार्थी दानव के बाग में अभी भी जाड़ा पसरा हुआ था। वहाँ बच्चे नहीं थे। इसलिए चिड़ियाँ वहाँ गीत नहीं गाती थीं औरे वहाँ पेड़ भी फलना-फूलना भूल गए। एक बार एक सुंदर फूल ने घास में से अपना सिर ऊपर उठाया, लेकिन जब उसने नोटिस बोर्ड देखा तो वह बच्चों के बारे में बहुत दु:खी हुआ। वह फिर से जमीन में घुसकर सो गया। अब वहाँ बर्फ और कोहरा, ये दो ही खुश थे। ''वसंत इस बाग को भूल गया है'', वे बोले, ''अब तो हम सालभर यहाँ रहेंगे।'' बर्फ ने अपने विशाल सफेद लबादे से घास को ढक लिया और कोहरे ने सभी पेड़ों को चाँदी के रंग में रँग डाला। फिर उन्होंने उत्तरी पवन को भी अपने साथ रहने को न्योत लिया। वह अपने फर के कपड़े पहने हुए आया। वह सारा दिन बाग में गरजता हुआ घूमा। उसने चिमनियों के ढक्कन उड़ा डाले। ''यह तो बहुत मजेदार जगह है'', वह बोला, ''हमें तूफान को भी यहाँ आने का निमंत्रण देना चाहिए।'' फिर तूफान भी आया। हर रोज तीन घंटों तक वह किले की छत पर धड़धड़ाता हुआ घूमा। जब तक कि उसकी अधिकांश पटियाँ टूट नहीं गईं। फिर वह जितना तेज हो सकता था उस रफ्तार से बाग में घूमा। उसका पहनावा सलेटी था और उसकी साँस बर्फ जैसी थी।

''मेरी समझ में नहीं आता कि वसंत के आने में इतनी देर क्यों हो रही है?'' अपनी खिड़की में बैठा स्वार्थी दानव

अपने ठंडे सफेद बाग को देखकर बोला, ''उम्मीद है मौसम कुछ बदलेगा।''

लेकिन वसंत कभी नहीं आया, न ही ग्रीष्म। शरत ने हर बाग को सुनहरे फल दिए, लेकिन दानव के बाग को एक भी नहीं दिया। ''वह बहुत स्वार्थी है'', शरद ऋतु बोली, इसलिए वहाँ हमेशा जाड़ा ही रहा। वहाँ उत्तरी पवन, तूफान, कोहरा और बर्फ पेड़ों के इर्द-गिर्द नाचते रहे।

एक रात जब दानव अपने बिस्तर पर लेटा जाग रहा था, उसने मीठा संगीत सुना। संगीत उसके कानों को इतना मधुर लगा कि उसने सोचा जरूर राजा के साजिंदे पास से गुजर रहे होंगे। दरअसल एक नन्ही लिनट चिड़िया उसकी खिड़की पर बैठी गा रही थी। चूँकि उसने अपने बाग में किसी चिड़िया को गाते हुए बहुत दिनों से नहीं सुना था, इसलिए उसे यह संसार का सबसे मधुर संगीत लगा। फिर तूफान ने उसके सिर पर नाचना बंद कर दिया और उसकी खिड़की से एक सोंधी खुशबू अंदर आई। ''मेरे खयाल से आखिरकार वसंत आ ही गया।'' वह बोला। फिर वह अपने बिस्तर से उठा और उसने बाहर झाँका।

उसने क्या देखा?

उसे एक अत्यंत आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया। दीवार के एक छेद से बच्चे अंदर घुस आए थे। वे पेड़ों की डालियों पर बैठे थे। उसने जहाँ तक देखा, हर पेड़ पर एक छोटा बच्चा था। बच्चों को वापस आया पाकर पेड़ इतने खुश हुए कि उनपर फूल खिल आए थे और वे उनसे भर गए थे। वे बच्चों के सिर पर प्यार से अपनी डालें हिला रहे थे। चिड़ियाँ चहचहाती हुई उड़ान भर रही थीं। फूल हरी घास में से उगकर इधर-उधर झाँक रहे थे। वे खूब हँस रहे थे। सारा दृश्य बड़ा ही सुहावना था, लेकिन बाग के एक कोने में अभी भी जाड़ा पसरा हुआ था। यह बाग का सबसे दूरवाला कोना था और वहाँ एक नन्हा सा लड़का खड़ा था।

बच्चा इतना छोटा था कि उसके हाथ पेड़ की डालों तक नहीं पहुँच रहे थे। वह उसके चारों तरफ घूमता हुआ बुरी तरह रो रहा था। बेचारा पेड़ अभी भी कोहरे और बर्फ से ढका हुआ था और उत्तरी हवा गरजती हुई उसमें होकर बह रही थी। ''आ जा, ऊपर चढ़ जा नन्हे बच्चे।'' पेड़ बोला। उसने, जितना बन पड़ा, अपनी टहनियाँ नीचे झुकाईं, लेकिन बच्चा बहुत छोटा था।

यह सब देखकर दानव का दिल पिघल गया। ''मैं कितना स्वार्थी था'', वह बोला, ''अब मुझे पता चला है कि वसंत यहाँ क्यों नहीं आ रहा था।'' वह बोला, ''मैं इस छोटे से लड़के को पेड़ के ऊपर बैठा दूँगा, चारदीवारी गिरा दूँगा और मेरा बाग सदा-सदा के लिए बच्चों के खेल का मैदान बना रहेगा।'' उसने जो कुछ किया था, उसका उसे बहुत दु:ख था।

सीढ़ियों से नीचे आकर उसने आहिस्ता से दरवाजा खोला और बाग में आ गया, लेकिन उसे देखकर बच्चे डर के मारे भाग खड़े हुए और बाग में फिर से जाड़ा हो गया। सिर्फ वह छोटा लड़का नहीं भागा। उसकी आँखें आँसुओं से इतनी भरी हुई थीं कि उसने दानव को आते हुए नहीं देखा।

दानव चुपचाप उसके पीछे आया। उसने लड़के को बड़े प्यार से अपने हाथों में उठाकर पेड़ पर बैठा दिया। देखते-देखते पेड़ पर फूल खिल आए। चिड़ियाँ वहाँ आकर गीत गाने लगीं। छोटे लड़के ने अपनी दोनों बाँहें फैलाकर दानव के गले में डाल दीं और प्यार से उसका चुंबन ले लिया। बाकी बच्चों ने भी जब देखा कि यह दानव अब दुष्ट नहीं रहा। तो वे भी भागकर वापस आ गए। उनके साथ ही वसंत भी लौट आया। ''नन्हे बच्चो, आज से यह तुम्हारा बाग है।'' दानव बोला। फिर उसने एक बड़ी कुल्हाड़ी उठाई और उससे तोड़कर चारदीवारी गिरा दी।

बारह बजे जब लोग बाजार जा रहे थे तो उन्होंने एक अत्यंत सुंदर बाग में, जैसा कि उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था, दानव को बच्चों के साथ खेलते देखा।

दिनभर वे खूब खेले। शाम को सब दानव से विदा लेने आए।

''तुम्हारा वह नन्हा साथी कहाँ है'', उसने पूछा'', जिसे मैंने पेड़ पर बैठाया था?'' दानव उसे सबसे ज्यादा चाहता था, क्योंकि उसने दानव का चुंबन लिया था।

''पता नहीं'', बच्चों ने जवाब दिया, ''वह तो चला गया।''

''तुम लोग उसे कहना न भूलना कि कल जरूर आए।'' दानव बोला। लेकिन बच्चों ने जवाब में कहा कि उनको कुछ पता नहीं कि वह कहाँ रहता है। उन्होंने तो इससे पहले उसे कभी देखा भी नहीं। यह सुनकर दानव बहुत उदास हो गया।

हर रोज दोपहर बाद, स्कूल से छुट्टी होने पर बच्चे आकर दानव के साथ खेलते, लेकिन जिस नन्हे बालक को दानव प्यार करता था, वह फिर कभी दिखाई नहीं दिया। दानव सब बच्चों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता था। पर वह अपने नन्हे दोस्त को बहुत याद करता और अकसर उसके बारे में बात किया करता। ''काश, वह कभी मिलने आए।'' वह कहा करता।

बरसों गुजर गए। अब दानव बहुत बूढ़ा और कमजोर हो गया था। अब वह खेल नहीं सकता था। वह एक बड़ी सी आरामकुरसी पर बैठकर बच्चों को खेलते देखता और अपने सुंदर बाग की तारीफ करता। ''मेरे बाग में बहुत से सुंदर फूल हैं'', वह कहता, ''लेकिन सबसे सुंदर फूल तो ये बच्चे हैं।''

जाड़े की एक सुबह, जब दानव कपड़े पहनकर तैयार हो रहा था, उसने अपनी खिड़की से बाहर झाँका। अब वह जाड़े से नफरत नहीं करता था। क्योंकि वह जानता था कि यह तो वसंत सो रहा है और फूल आराम कर रहे हैं।

अचानक वह हैरानी से अपनी आँखें मल-मलकर देखने लगा। यह सचमुच बड़ा ही सुंदर नजारा था। उसके बाग के दूर एक कोने में एक पेड़ सुंदर सफेद फूलों से भरा हुआ था। उसकी सभी टहनियाँ सुनहरी थीं और रुपहले फल उन पर लटक रहे थे। और उस पेड़ के नीचे वह नन्हा बालक खड़ा था, जिसे दानव इतना प्यार करता था।

दानव की खुशी का पारावार न रहा। वह सीढ़ियों से दौड़ता हुआ बाहर बाग में आया। वह बाग में भी तेजी से दौड़कर उस नन्हे बालक के पास पहुँचा। जब वह बहुत पास आया तो उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। ''किसने तुम्हें घायल करने की हिम्मत की?'' वह गुस्से से चीख पड़ा, क्योंकि बच्चे की हथेलियों पर दो कीलों के निशान थे। उसके नन्हे पैरों पर भी कीलों के दो वैसे ही निशान थे।

''तुम्हें घायल करने की हिम्मत किसने की?'' दानव चिल्लाया, ''मुझे बताओ, मैं अपनी बड़ी तलवार से उसे काट डालूँगा।''

''नहीं'', बच्चे ने जवाब दिया, ''ये तो प्यार के घाव हैं।''

''आप कौन हैं?'' अचानक दानव विस्मित होकर बोला और वह बच्चे के आगे घुटनों के बल झुक गया।

बच्चा मुसकराकर बोला, ''एक बार आपने मुझे अपने बाग में खेलने दिया था, आज आप मेरे साथ मेरे बाग में चलेंगे, जो स्वर्ग है।''

उस दिन दोपहर बाद जब बच्चे दौड़ते हुए उस बाग में आए तो उन्होंने देखा कि दानव उस पेड़ के नीचे मरा हुआ पड़ा था। उसका सारा शरीर सफेद फूलों से ढका था।

❑

सच्चा दोस्त

एक दिन सुबह-सवेरे बूढ़े पनचूहे ने अपना सिर बिल से बाहर निकालकर झाँका। उसकी मनकों सी चमकदार आँखें थीं। उसकी कड़क सफेद मूँछें थीं और उसकी दुम भारतीय रबर के लंबे काले टुकड़े जैसी थी। छोटी बत्तखें तालाब में तैर रही थीं। वे पीली कनारी चिड़ियों के झुंड जैसी लग रही थीं। उनकी सफेद परों और लाल सुर्ख पंजोंवाली माँ उनको पानी में सिर के बल खड़ा होना सिखा रही थी।

''अगर तुम सब अपने सिरों पर खड़ा होना नहीं सीखोगी तो समाज में कभी भी सर्वश्रेष्ठ नहीं समझी जाओगी।'' माँ उनसे बार-बार कह रही थी। फिर वह थोड़ी-थोड़ी देर के बाद उनको दिखा रही थी कि ऐसा कैसे करते हैं, लेकिन नन्ही बत्तखें उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दे रही थीं। वे इतनी छोटी थीं कि इस बात को नहीं समझती थीं कि समाज में होने का महत्त्व क्या होता है।

''कैसी आदेश न माननेवाली बच्चियाँ हैं'', बूढ़ा पनचूहा बोला, ''इनको तो डूब जाना चाहिए।''

''ऐसी बात नहीं है'', बतख बोली, ''हर किसी को कहीं-न-कहीं से शुरुआत करनी होती है। और माँ-बाप को तो सब्र करना ही चाहिए।''

''आह! मैं तो माता-पिता की भावनाओं के बारे में कुछ नहीं जानता'', पनचूहा बोला, ''मेरा कोई परिवार जो नहीं। न तो मेरी शादी हुई है और न ही मेरा ऐसा कोई इरादा है। प्यार सचमुच अच्छी भावना है, लेकिन दोस्ती उससे भी ऊँची होती है। मैं संसार में ऐसी कोई चीज नहीं जानता, जो सच्ची दोस्ती से भी महान् और दुर्लभ हो।''

''और तुम्हारे विचार से किसी सच्चे दोस्त के कर्तव्य क्या होते हैं?'' एक हरी लिनेट ने पूछा। वह पास के बेंत के पेड़ पर बैठी सारी बातचीत सुन रही थी।

''हाँ, यही तो मैं भी जानना चाहती हूँ'', बतख बोली। फिर वह तैर कर तालाब के दूसरे छोर पर चली गई और वहाँ सिर के बल खड़ी होकर अपने बच्चों को इस कला का एक अच्छा नमूना दिखाने लगी।

''कैसा बेवकूफी भरा सवाल है। मैं चाहूँगा कि मेरा सच्चा दोस्त मेरे प्रति समर्पित रहे और क्या!'' पनचूहा बोला।

''और बदले में तुम क्या करोगे?'' नन्ही चिड़िया ने एक रुपहली टहनी पर झूलते हुए अपने छोटे पंख फड़फड़ाकर पूछा।

''मैं कुछ समझा नहीं।'' पनचूहा बोला।

''तुम्हें इस बारे में एक कहानी सुनाती हूँ।'' लिनेट ने कहा।

''क्या यह कहानी मेरे बारे में है?'' पनचूहे ने पूछा, ''अगर ऐसा है तो मैं जरूर सुनूँगा, क्योंकि मुझे कहानियाँ सुनना बहुत पसंद है।''

''यह तुम पर लागू होती है।'' लिनेट ने जवाब दिया। वह उड़कर किनारे पर आ बैठी और उसने सच्चे दोस्त की कहानी सुनानी शुरू कर दी।

''एक जमाने की बात है'', लिनेट बोली, ''एक छोटा ईमानदार आदमी था। उसका नाम था हैंस।''

''क्या वह कोई विशिष्ट व्यक्ति था?'' पनचूहे ने पूछा।

''नहीं'', लिनेट ने जवाब दिया, ''मेरे खयाल से वह विशिष्ट नहीं था। सिवा इसके कि वह बहुत सहृदय और गोल, हँसमुख चेहरेवाला था। वह एक छोटे से कॉटेज में अकेला रहता था और अपने बगीचे में मेहनत किया करता था। सारे देहात में उसके जैसा सुंदर बगीचा दूसरा न था। वहाँ भित्तिपुष्प खिलते, रजिकाबंधु खिलते, शेफड्स् पर्स खिलते और राँस के सुंदर सुनहरे फूल खिलते। वहाँ दमिश्की गुलाब, पीले गुलाब, जामुनी क्रोकस खिलते और

बैंगनी, सफेद व सुनहरे पाटल खिलते।
''जैसे-जैसे मौसम बीतता उसके अनुरूप उस बगीचे में एक के बाद एक फूल आते। गुलकबूतर, लेडीस्मॉक, मुरवा, वन्यतुलसी, गोतरु, नरगिस, गुलाबी लवंगपुष्प आदि अपने मौसम के अनुरूप वहाँ बारी-बारी से खिलते। वहाँ हमेशा सुंदर फूल और भीनी सुगंध रहती।
''छोटू हैंस के बहुत से दोस्त थे, लेकिन सबसे जिगरी दोस्त चक्की मालिक बड़ा हेग था। वह इतना निष्ठावान मित्र था कि जब कभी उसके बगीचे से गुजरता तो फूलों का एक बड़ा सा गुलदस्ता तोड़ लेता, ढेर सारी सुगंधित बूटियाँ उखाड़ लेता या फिर फलों का मौसम हो तो अपनी जेबें आड़ू और चैरी से भर लेता।
'''सच्चे दोस्तों की हर चीज साझी होनी चाहिए।' चक्की मालिक कहा करता। छोटू हैंस सहमति में सिर हिलाता और मुसकराता। उसे गर्व था कि उसका एक ऐसे नेक विचारोंवाला दोस्त भी था।
''कई बार पड़ोसियों को यह देखकर विचित्र सा लगता कि बड़ा हेग कभी भी बदले में छोटू हैंस को कुछ नहीं देता था। हालाँकि उसकी चक्की में आटे की सौ बोरियाँ रखी थीं। उसके पास छह दुधारू गायें थीं और ऊनवाली भेड़ों का एक बड़ा रेवड़ था, लेकिन हैंस ने कभी भी इन बातों में सिर नहीं खपाया। उसे तो नि:स्वार्थ सच्ची दोस्ती के बारे में उसकी कही असाधारण बातें सुनने में बहुत आनंद आता था।
''छोटू हैंस अपने बाग में कड़ी मेहनत करता रहता। वसंत, ग्रीष्म और शरद ऋतुओं में वह बहुत खुश रहता, लेकिन जब कड़ा जाड़ा आता तो उसके पास मंडी में ले जाने के लिए फल या फूल न होते। भूख और सर्दी के मारे वह बेहाल हो जाता। अकसर रातों को वह भोजन के बिना ही रह जाता—कुछ सूखी नाशपातियाँ या गिरी खाकर। जाड़े में वह बहुत अकेलापन भी महसूस करता, क्योंकि चक्कीवाला उसे कभी इन दिनों मिलने नहीं आता।
'''जब तक बर्फ पड़ती है, मेरे छोटू हैंस के यहाँ जाने से कोई लाभ नहीं', चक्कीवाला अपनी पत्नी से कहा करता, ''क्योंकि जब कोई कष्ट में हो तो उसे अकेला छोड़ देना चाहिए। उसके यहाँ जाकर उसे परेशान नहीं करना चाहिए। दोस्ती के बारे में कम-से-कम मेरा तो यही विचार है। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं सही हूँ। इसलिए मैं वसंत के आने तक इंतजार करूँगा और तभी उसके यहाँ जाऊँगा। तब वह मुझे एक बड़ी डलिया भर वसंती गुलाब दे सकेगा। और इससे उसे कितनी खुशी होगी!'
'तुम सचमुच दूसरों के बारे में कितना सोचते हो', पत्नी ने देवदार के अलाव के पास अपनी आरामकुरसी पर बैठते हुए जवाब दिया, 'वाकई तुम्हारी सोच बहुत अच्छी है। तुम्हारे विचार सुनकर कितना अच्छा लगता है। मेरे खयाल से इतनी उत्तम बातें पादरी भी नहीं कह सकते, जितनी तुम कहते हो। हालाँकि वे तिमंजले मकान में रहते हैं और अपनी उँगली में सोने की अँगूठी भी पहनते हैं।'
'पर क्या हम छोटू हैंस को अपने यहाँ रहने को नहीं बुला सकते?' चक्कीवाले का छोटा बेटा बोला, 'अगर बेचारा हैंस कष्ट में है तो मैं उसे अपना आधा दलिया दे दूँगा और उसे अपने सफेद खरगोश भी दिखाऊँगा।'
'कैसा बेवकूफ लड़का है', चक्कीवाला चिल्लाया, 'मुझे समझ में नहीं आता कि तुमको स्कूल भेजने का आखिर फायदा क्या हुआ। लगता है, तुम वहाँ कुछ नहीं सीखते।
'देखो, अगर छोटू हैंस यहाँ आकर हमारे आग के सुखद अलाव को देखे, हमारा बढ़िया रात का खाना देखे, हमारा लाल मदिरा से भरा बड़ा ड्रम देखे तो उसे हमसे ईर्ष्या होगी? और ईर्ष्या तो बहुत ही बुरी होती है, वह किसी के भी स्वभाव को बिगाड़ सकती है। मैं कभी नहीं चाहूँगा कि हैंस का स्वभाव बिगड़े। मैं उसका सबसे अच्छा दोस्त हूँ। मैं हमेशा उसपर नजर रखूँगा और इस बात का खास खयाल रखूँगा कि वह किसी तरह के प्रलोभन में न पड़े। इसके अलावा अगर हैंस यहाँ आता है तो हो सकता है कि वह मुझसे कुछ आटा उधार माँग ले, जो मैं उसे दे नहीं सकता।

आखिर आटा आटा है और दोस्ती दोस्ती है। इस मामले में किसी भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। आखिर इन दोनों के हिज्जे अलग-अलग हैं और उच्चारण भी अलग-अलग हैं। इतना तो हर कोई समझ सकता है।'

'तुम कितनी अच्छी व्याख्या करते हो', चक्कीवाले की पत्नी एक बड़े गिलास में अपने लिए बीयर डालते हुए बोली, 'मुझे तो झपकी आने लगती है। यह तो गिरजाघर में होने जैसा अनुभव है।'

'बहुत से लोग सही तरीके से काम तो कर लेते हैं', चक्कीवाला बोला, 'लेकिन अच्छी बातें करना बहुत कम को ही आता है। जिससे सिद्ध होता है कि इन दोनों में बात करना अधिक कठिन है। और अधिक परिष्कृत भी।' फिर उसने मेज की दूसरी तरफ बैठे अपने छोटे बेटे को घूरकर देखा। लड़के ने शर्म से सिर झुका लिया। उसके गाल सुर्ख हो गए और आँसू उसकी आँखों से टपककर उसकी चाय में गिरने लगे।

''बहरहाल वह अभी इतना छोटा था कि माफी लायक था।

''क्या यह कहानी का अंत है?'' पनचूहे ने पूछा।

''बिलकुल नहीं'', लिनेट ने जवाब दिया, ''यह तो उसकी शुरुआत है।''

''तब तो तुम जमाने से बहुत पीछे हो'', पनचूहा बोला, ''आजकल हर अच्छा कहानी सुनाने वाला उसे अंत से शुरू करता है, फिर वहाँ से आरंभ पर जाता है और उसके मध्य पर जाकर अपनी बात खत्म करता है। नया तरीका यही है। यह सब मैंने एक बहुत अच्छे आलोचक के मुँह से सुना, जो तालाब के किनारे एक युवक के साथ टहल रहा था। उसने इस बारे में विस्तार से चर्चा की। मुझे पूरा विश्वास है कि वह सही कह रहा था। क्योंकि उसने नीले रंग का चश्मा पहन रखा था और उसका सिर गंजा था। इतना ही नहीं, जब भी वह युवक कोई टिप्पणी करता तो वह 'उँह' में जवाब देता था। खैर, तुम अपनी कहानी सुनाओ। मुझे चक्कीवाला बहुत अच्छा लग रहा है। मुझमें भी अनेक प्रकार की सुंदर भावनाएँ हैं। इस दृष्टि से हम दोनों में बहुत सामंजस्य है।''

''तो फिर'', लिनेट ने कभी एक टाँग पर खड़े होकर और कभी दूसरी पर होकर कहा, ''जब जाड़ा खत्म हुआ और वसंती गुलाबों ने अपनी पँखुरियाँ खोलनी शुरू कर दीं तो चक्कीवाले ने अपनी पत्नी से कहा कि अब वह छोटू हैंस से मिलने जा रहा है।''

''आह, तुम्हारा दिल कितना उदार है'', पत्नी बोली, ''हमेशा दूसरों का कितना खयाल करते हो। और फूलों के लिए बड़ीवाली टोकरी ले जाना न भूलना।''

''फिर चक्कीवाले ने अपनी चक्की के दोनों पंखों को लोहे की मजबूत जंजीर से बाँध और टोकरी उठाकर पहाड़ी के नीचे की ओर चल दिया।

''नमस्कार, छोटू हैंस'', चक्कीवाला बोला।

''नमस्कार।'' अपने फावड़े पर झुके हुए छोटू हैंस ने मुसकराकर जवाब दिया।

''जाड़े के दिनों में तुम्हारा क्या हालचाल था?'' चक्कीवाले ने पूछा।

''आह, तुम कितने अच्छे हो, जो यह पूछ रहे हो, वाकई बहुत अच्छे हो'', छोटू हैंस बोला, ''मेरा वक्त खराब ही गुजरा, लेकिन अब वसंत आ गया है। अब मैं खुश हूँ। मेरे सब फूल अच्छे खिल रहे हैं।''

''जाड़े के दिनों में हम अकसर तुम्हारी बात किया करते थे'', चक्कीवाला बोला, ''और सोचते थे कि आखिर तुम कैसे हो?''

''यह तुम्हारा स्नेह है'', छोटू हैंस बोला, ''मैं तो सोचता था कि कहीं तुम मुझे भूल तो नहीं गए हो।''

''मैं तुम्हारी इस बात पर बड़ा हैरान हूँ हैंस'', चक्कीवाला बोला, ''दोस्ती कभी भुलाती नहीं। यही तो उसकी विशेषता है, लेकिन तुम शायद जीवन की कविता को समझते नहीं। तुम्हारे ये वसंती गुलाब साथ-साथ खिले कितने

सुंदर लग रहे हैं।''
''वे वाकई बहुत सुंदर हैं'', हैंस बोला, ''यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे पास ढेर सारे हैं। मैं इन्हें बाजार में ले जाकर नगरपति की बेटी को बेचूँगा और उस धन से अपना एकपहिया ठेला फिर से खरीदूँगा।''
''फिर से खरीदूँगा? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुमने अपना एकपहिया ठेला बेच दिया था? यह कैसा नासमझी का काम किया।''
''असल में बात यह है'', छोटू हैंस बोला, ''कि मुझे मजबूरन ऐसा करना पड़ा। आखिर जाड़ा मेरे लिए बहुत बुरा वक्त था। मेरे पास रोटी खरीदने के लिए भी पैसा न था। इसलिए पहले तो मैंने अपने रविवारवाले कोट के चाँदी के बटन बेचे। फिर मैंने अपनी चाँदी की चेन बेची। फिर बड़ा पाइप बेचा और आखिर में एकपहिया ठेला भी बेच दिया, लेकिन अब मैं वह सब दोबारा खरीद लूँगा।''
''हैंस'', चक्कीवाला बोला, ''मैं तुम्हें अपना ठेला दे दूँगा। वह बहुत अच्छी हालत में तो नहीं है। उसका एक हिस्सा टूट गया है। पहियों की तीलियाँ भी ठीक नहीं। फिर भी मैं वह तुम्हें दे दूँगा। मैं जानता हूँ यह मेरी उदारता होगी। बहुत से लोग सोचेंगे कि मैं कितना मूर्ख हूँ, जो इसे यों दे रहा हूँ, लेकिन मैं बाकी जमाने जैसा तो नहीं। मेरे विचार में उदारता दोस्ती का सार तत्त्व है। और मैंने अपने लिए एक नया ठेला खरीद भी लिया है, इसलिए तुम निश्चिंत हो जाओ। मैं तुम्हें अपना एकपहिया ठेला दे दूँगा।''
''सचमुच तुम कितने उदार हो'', हैंस बोला और उसका गोल चेहरा खुशी से खिल उठा, ''मैं आसानी से उसकी मरम्मत कर लूँगा। मेरे पास लकड़ी का एक तख्ता है।''
''लकड़ी का तख्ता?'' चक्कीवाला बोला, ''अरे, वही तो मुझे अपने गोदाम की छत के लिए चाहिए। उसमें बहुत बड़ा छेद हो गया है। अगर मैंने उसे बंद नहीं किया तो सारा अनाज सील जाएगा। मेरी कितनी खुशकिस्मती है कि तुमने इसका जिक्र किया। एक अच्छे काम से दूसरा अच्छा काम उपजता है। मैंने तुमको अपना ठेला दिया और अब तुम मुझे अपना लकड़ी का तख्ता देने जा रहे हो। हालाँकि ठेला उस तख्ते से कहीं ज्यादा कीमती है, लेकिन सच्ची दोस्ती ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देती। कृपया उसे तुरंत ले आओ। मैं आज ही गोदाम की मरम्मत का काम शुरू कर दूँगा।''
''जरूर, जरूर।'' छोटू हैंस बोला। वह भागकर अंदर गया और लकड़ी का तख्ता घसीटता हुआ ले आया।
''यह तो छोटा सा है'', उसे देखते हुए चक्कीवाला बोला, ''मेरे खयाल में छत की मरम्मत के बाद ठेले की मरम्मत के लिए थोड़ी सी भी लकड़ी न बचेगी। पर इसमें मेरी क्या गलती है! अब चूँकि मैंने तुम्हें हथठेला दे दिया है, तुम मुझे बदले में कुछ फूल तो जरूर दोगे। यह लो टोकरी और इसे पूरी तरह भर देना।''
''पूरी भर दूँ।'' छोटू हैंस जरा दु:खी मन से बोला। क्योंकि टोकरी बहुत बड़ी थी और अगर वह उसे पूरी भर देता तो बाजार में बेचने के लिए उसके पास एक फूल न बचता और वह अपने चाँदी के बटन वापस लेने को बहुत बेचैन हो रहा था।
''असल में'', चक्कीवाला बोला, ''अब जबकि मैंने तुम्हें अपना ठेला दे दिया है, बदले में थोड़े से फूल माँगना बहुत बड़ी बात तो नहीं। मैं शायद गलत हूँ, मुझे सोचना चाहिए था कि सच्ची दोस्ती हर तरह के स्वार्थ से परे होती है।''
''मेरे दोस्त, मेरे सबसे अच्छे दोस्त'', छोटू हैंस बोला, ''तुम मेरे बाग के सारे फूल ले सकते हो। मेरे चाँदी के बटनों के बजाय मुझे जल्दी ही तुम्हारी कोई अच्छी राय मिलेगी।'' इसके बाद उसने दौड़-दौड़कर सारे सुंदर वसंती गुलाब तोड़कर चक्कीवाले की टोकरी भर दी।

''विदा छोटू हैंस।'' चक्कीवाला बोला। उसने कंधे पर तख्ता रख लिया और हाथ में टोकरी उठाकर पहाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया।

''विदा।'' छोटू हैंस बोला। फिर वह खुशी-खुशी गुडाई करने लगा। एकपहिया ठेले के बारे में सोचकर वह बहुत प्रसन्न हो रहा था।

''अगले दिन जब वह ड्योढ़ी में कील जड़कर मधुमालती की लता उससे बाँधने में लगा हुआ था, उसे सड़क से चक्कीवाले की पुकार सुनाई दी। वह सीढ़ी से तेजी से उतरा, बाग को दौड़कर पार किया और दीवार के पार देखा। वहाँ चक्कीवाला आटे का एक बड़ा बोरा पीठ पर उठाए खड़ा था।''

''प्यारे छोटू हैंस'', चक्कीवाला बोला, ''क्या तुम मेरे लिए यह बोरा मंडी तक ले चलोगे?''

''ओह, मुझे अफसोस है'', हैंस बोला, ''पर मैं आज सचमुच बहुत व्यस्त हूँ। मुझे अपनी सभी लताओं को कीलों से बाँधना है, सभी फूलों को पानी देना है और सारी घास पर बेलन फेरना है।''

''सच्ची!'' चक्कीवाला बोला, ''मैं तुम्हें ठेला दे रहा हूँ। मेरे खयाल में ऐसे में इस तरह मना करना तो दोस्ती न हुई।''

''ऐसा मत कहो'', छोटू हैंस बोला, ''मैं किसी भी हालत में तुम्हारे साथ गैरदोस्तीवाला सलूक नहीं कर सकता।'' उसने दौड़कर अपनी टोपी ली और फिर वह बड़ा बोरा कंधे पर उठाकर घिसट-घिसटकर चलना शुरू कर दिया।

''उस दिन बहुत गरमी थी और सड़क भी धूल भरी थी। छठे मीलपत्थर तक पहुँचते-पहुँचते हैंस इतना थक गया कि उसे बैठकर साँस लेनी पड़ी। पर वह फिर हिम्मत करके चल पड़ा। आखिरकार वह मंडी तक पहुँच गया। थोड़े इंतजार के बाद वह आटे का बोरा अच्छे दाम में बेचने में सफल रहा। फिर वह तुरंत घर के लिए चल पड़ा। उसे डर था कि देर हो जाने पर रास्ते में डाकू मिल सकते हैं।

''आज का दिन बहुत थका देनेवाला था'', रात को सोने के लिए जाते समय छोटू हैंस अपने आप से बोला, ''लेकिन मुझे खुशी है कि मैंने चक्कीवाले को मना नहीं किया। आखिर वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है और वह मुझे अपना ठेला भी देनेवाला है।''

अगले दिन सुबह-सवेरे चक्कीवाला अपने आटे के बोरे के पैसे लेने आ गया, लेकिन छोटू हैंस इतना थका हुआ था कि अभी बिस्तर से नहीं उठा था।

''कसम से'', चक्कीवाला बोला, ''तुम बहुत आलसी हो। असल में यह सोचकर कि मैं तुम्हें अपना ठेला देनेवाला हूँ, तुम्हें और मेहनत करनी चाहिए। आलस करना बहुत बड़ा पाप है। और मैं नहीं चाहता कि मेरे दोस्तों में से कोई भी आलसी या सुस्त हो। मेरे इस तरह स्पष्ट बोलने का बुरा मत मानना। अगर मैं तुम्हारा दोस्त न होता तो ऐसा व्यवहार करने का सपना भी न देखता, लेकिन जो हम कहना चाहते हैं, ठीक वैसा ही न बोलें तो फिर दोस्ती का मतलब ही क्या है! अच्छी-अच्छी बातें कहकर कोई भी खुश कर सकता है या चापलूसी कर सकता है, लेकिन सच्चा दोस्त तो हमेशा अप्रिय लगनेवाली खरी-खरी बात ही कहेगा। अगर वह सच्चा दोस्त है तो इसी को तरजीह देगा, क्योंकि वह जानता है कि उसके दोस्त के लिए यह अच्छा है।''

''माफी चाहता हूँ'', छोटू हैंस अपनी आँखें मलते हुए और टोपी उतारते हुए बोला, ''लेकिन मैं इतना थक गया था कि सोचा कुछ देर और पड़ा-पड़ा नन्ही चिड़ियों का गाना सुनूँ। जानते हो, चिड़ियों का गाना सुनने के बाद मैं हमेशा पहले से भी अच्छा काम करता हूँ।''

''मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा'', चक्कीवाला उसकी पीठ थपथपाकर बोला, ''क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम तैयार होकर जल्दी-से-जल्दी मेरे यहाँ आ जाओ और मेरे गोदाम में छत की मरम्मत कर दो।''

''बेचारा छोटू हैंस जल्दी-से-जल्दी अपने बाग में जाना चाहता था, क्योंकि उसने अपने फूलों को दो दिन से पानी नहीं दिया था, लेकिन चक्कीवाले को मना करना भी उसे अच्छा नहीं लग रहा था। आखिर वह उसका इतना अच्छा दोस्त जो था।

''अगर मैं कहूँ कि व्यस्त हूँ तो क्या तुम उसे गैरदोस्ताना समझोगे?'' उसने शरमाते हुए धीमी आवाज में पूछा।

''बात दरअसल यह है'', चक्कीवाला बोला, ''मैं कुछ ज्यादा माँग तो नहीं कर रहा, तब जबकि मैं तुम्हें अपना एकपहिया ठेला दे रहा हूँ। फिर भी अगर तुम मना करते हो तो मैं खुद जाकर वह काम कर लूँगा।''

''अरे, नहीं-नहीं।'' छोटू हैंस चिल्ला पड़ा। वह जल्दी से तैयार होकर गोदाम पर पहुँच गया।

''वह दिनभर काम करता रहा, जब तक कि शाम हो गई। शाम को चक्कीवाला देखने आया कि कैसा काम हो रहा है।

''छोटू हैंस, क्या तुमने छत के सुराख की मरम्मत कर दी है?'' उसने चहकते हुए पूछा।

''हाँ, अब यह बिलकुल दुरुस्त हो गया है।'' छोटू हैंस सीढ़ी से नीचे उतरते हुए बोला।

''आह'', चक्कीवाला बोला, ''किसी काम में भी उतना आनंद कहाँ, जितना आनंद दूसरों के लिए काम करने में आता है।''

''तुम्हारी बातें सुनना तो बहुत बड़ा सौभाग्य है'', छोटू हैंस अपने माथे का पसीना पोंछते हुए बोला, ''सचमुच बहुत बड़ा सौभाग्य, लेकिन इतने सुंदर विचार शायद मेरे मन में कभी नहीं आएँगे।''

''आएँगे, आएँगे'', चक्कीवाला बोला, ''लेकिन इसके लिए तुम्हें थोड़ी और तकलीफ उठानी होगी। अभी तुम दोस्ती का व्यवहारिक पक्ष ही सीख रहे हो। फिर इसके सिद्धांत भी सीख जाओगे।''

''क्या सचमुच मैं सीख पाऊँगा?'' छोटू हैंस ने पूछा।

''मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं'', चक्कीवाला बोला, ''अब चूँकि तुमने छत की मरम्मत कर दी है, घर जाकर आराम करो। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम कल पहाड़ पर मेरी भेड़ें चराने के लिए ले जाओ।''

''बेचारा छोटू हैंस इसपर डर के मारे कुछ न बोला। अगले दिन सुबह चक्कीवाला अपनी भेड़ें लेकर उसके यहाँ आ पहुँचा और छोटू हैंस उन्हें लेकर पहाड़ पर चराने के लिए चल दिया। वहाँ पहुँचने और लौटने में उसे सारा दिन लग गया। जब वह लौटा तो इतना थक गया था कि अपनी कुरसी पर ही सो गया और सुबह धूप निकलने पर ही उसकी आँख खुली।

''आज मुझे अपने बाग के लिए कितना अच्छा समय मिलेगा।'' उसने मन-ही-मन कहा और तुरंत काम पर चल दिया।

लेकिन कुछ-न-कुछ ऐसा होता कि वह अपने फूलों की देखभाल कर ही न पाता। उसका दोस्त चक्कीवाला हमेशा आ धमकता। वह उसे किसी-न-किसी काम पर बहुत दूर भेज देता या चक्की पर मदद करने के लिए ले जाता। छोटू हैंस इससे कई बार बहुत निराश हो जाता। उसे चिंता होती कि उसके फूल कहेंगे कि उसने उन्हें भुला ही दिया है, लेकिन तभी उसके मन में यह विचार भी कौंधता कि चक्कीवाला उसका सबसे अच्छा दोस्त है। इसके अलावा वह उसे ठेला भी तो देनेवाला है, जो उसकी उदारता है।

''लिहाजा छोटू हैंस चक्कीवाले के लिए काम करता रहा और चक्कीवाला दोस्ती के बारे में सुंदर-सुंदर लच्छेदार बातें करता रहा। हैंस उन बातों को अपनी एक कॉपी में लिख लेता और रात को पढ़ा करता। वह एक अच्छा छात्र था।

''फिर एक रात ऐसा हुआ कि छोटू हैंस जब आग के अलाव के पास इत्मीनान से बैठा था, तभी किसी ने जोर से

दरवाजा थपथपाया। यह बहुत भयानक रात थी। इतनी तेज आँधी चल रही थी और घर के चारों तरफ घूम रही थी कि उसने सोचा यह हवा के थपेड़े ही होंगे, लेकिन दूसरी बार फिर थपथपाहट हुई और फिर तीसरी बार हुई।

''कोई बेचारा राहगीर है।'' छोटू हैंस अपने-आप से बोला और दरवाजे की तरफ दौड़ पड़ा।

''देखा तो वहाँ एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में बड़ी सी छड़ी लिये चक्कीवाला खड़ा था।

''प्यारे छोटू हैंस'',चक्कीवाला बोला, ''मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। मेरा छोटा बेटा सीढ़ी से गिर पड़ा है और उसे काफी चोट आई है। मैं डॉक्टर के पास जा रहा हूँ। पर वह बहुत दूर रहता है और यह रात बड़ी खराब है। मुझे अभी-अभी खयाल आया कि अगर तुम मेरी जगह जाओ तो बेहतर होगा। तुम्हें पता है कि मैं तुम्हें अपना ठेला देनेवाला हूँ। इसलिए बदले में तुम मेरे लिए कुछ करो तो ठीक रहेगा।''

''जरूर'', छोटू हैंस बोला, ''यह तुम्हारा स्नेह ही है कि मेरे पास आए। मैं अभी चल पड़ता हूँ, लेकिन तुम मुझे अपनी लालटेन दे दो, क्योंकि यह बहुत अँधेरी रात है। मुझे डर है कि किसी गड्ढे में न गिर पड़ूँ।''

''माफ करना'', चक्कीवाला बोला, ''मेरी लालटेन एकदम नई है। अगर इसे कुछ हो गया तो मेरा बहुत बड़ा नुकसान होगा।''

''चलो, कोई बात नहीं, मैं इसके बिना ही गुजारा कर लूँगा।'' छोटू हैंस बोला। उसने अपना बड़ा फर का कोट निकाला, अपनी गरम लाल टोपी ली, गले में मफलर लपेटा और चल पड़ा।

कैसा भयानक तूफान था। रात इतनी काली थी कि छोटू हैंस के लिए कुछ भी देखना मुश्किल हो रहा था। आँधी का इतना जोर था कि उसके लिए अपने पैरों पर खड़ा रहना मुश्किल हो रहा था। पर वह था बहुत बहादुर। करीब तीन घंटे तक लगातार चलने के बाद डॉक्टर के दरवाजे पर पहुँचकर उसने दस्तक दी।

''कौन है?'' डॉक्टर अपने सोने के कमरे की खिड़की से सिर बाहर निकलाकर चिल्लाया।

''छोटू हैंस, डॉक्टर।''

''क्या बात है, छोटू हैंस?''

''चक्कीवाले का बेटा सीढ़ी से गिरकर घायल हो गया है और चक्कीवाले ने आपको तुरंत बुलाया है।''

''अच्छा, ठीक है।'' डॉक्टर ने कहा। उसने अपना घोड़ा मँगवाया। अपने बड़े बूट और लालटेन भी मँगवाई। वह सीढ़ियाँ उतरकर आया और घोड़े पर सवार होकर चक्कीवाले के घर की तरफ चला। छोटू हैंस घिसटता हुआ उसके पीछे चल पड़ा।

''लेकिन तूफान और भी तेज होता गया। मूसलधार बारिश भी होने लगी। छोटू हैंस को अब दिखाई नहीं दे रहा था कि वह जा किधर रहा है। उससे घोड़े का साथ भी छूट गया। वह रास्ता भूलकर दलदल में भटक गया। यह बहुत खतरनाक जगह थी, जिसमें जगह-जगह गहरे गड्ढे थे। बेचारा छोटू हैंस वहाँ डूब गया। उसका मृत शरीर अगले दिन पानी के ऊपर तैर आया था। कुछ गड़ेरियों ने उसे देखा तो उसे उसके घर पर ले आए।

''हर कोई छोटू हैंस के अंतिम संस्कार में गया। सब लोग उसे बहुत पसंद करते थे। चक्कीवाला प्रमुख मातमी था।

''चूँकि मैं उसका सबसे अच्छा दोस्त था, सबसे अच्छा स्थान मुझे मिलना चाहिए।'' इतना कहकर वह उसकी अंतिम यात्रा में सबसे आगे-आगे चला। उसने बड़ा सा काला कोट पहना हुआ था और जरा-जरा देर में एक बड़े रूमाल से अपने आँसू पोंछ रहा था।

अंतिम संस्कार समाप्त हो जाने के बाद सब लोग जब आराम से एक सराय में बैठे मीठे केक खा रहे थे और तीखी शराब पी रहे थे, तब लोहार बोला, ''छोटू हैंस का जाना सबके लिए एक व्यक्तिगत क्षति है।''

''मेरे लिए तो बहुत बड़ी क्षति'', चक्कीवाले ने कहा, ''मैं तो उसे अपना एकपहिया ठेला लगभग दे चुका था। अब

मेरी समझ में नहीं आता कि उसका करूँ क्या? यह तो मेरे घर में एक अड़ंगा ही है। वह इतना टूट-फूट गया है कि अगर मैं बेचना चाहूँ तो कुछ भी न मिलेगा। अब मैं ध्यान रखूँगा कि कभी किसी को कुछ दूँ नहीं। उदार होना कितना कष्ट देता है।''

''और फिर?'' काफी देर के बाद पनचूहे ने पूछा।

''और फिर यह कहानी का अंत है।'' लिनेट ने कहा।

''लेकिन फिर उस चक्कीवाले का क्या हुआ?'' पनचूहे ने पूछा।

''ओहो, मुझे नहीं मालूम'', लिनेट ने कहा, ''ना ही मुझे इस बात की परवा है।''

''इससे साफ जाहिर होता है कि तुममें हमदर्दी बिलकुल नहीं।'' पनचूहा बोला।

''लगता है, तुम इस कहानी की सीख को नहीं पकड़ पाए।'' लिनेट ने कहा।

''क्या...क्या नहीं?'' पनचूहा चिल्ला उठा।

''सीख।''

''क्या तुम कहना चाहते हो कि इस कहानी में कोई सीख भी थी?''

''बिलकुल।'' लिनेट ने कहा।

''ओह, अच्छा'', पनचूहा गुस्सा गया, ''बेहतर होता कि तुमने कहानी शुरू करने से पहले ही मुझे यह बताया होता। अगर तुमने ऐसा किया होता तो मैं तुम्हारी कहानी कभी न सुनता। तब तो मैं उस आलोचक की तरह 'हुँह' ही कहता। चलो, यह तो मैं अब भी कह ही सकता हूँ।'' फिर वह जोर से बोला, ''हुँह।'' उसने अपनी दुम हिलाई और फिर अपने बिल में घुस गया।

''और तुम्हें पनचूहा कैसा लगा?'' बतख ने पूछा, जो कुछ देर बाद तैरती हुई वहाँ आ पहुँची थी, ''उसमें कुछ अच्छाइयाँ हैं। असल में मैं एक माँ का दिल रखती हूँ ना। मैं किसी चिर अविवाहित को अपनी आँखें नम किए बिना नहीं देख पाती।''

''मुझे लगता है, मैंने उसे नाराज कर दिया है'', लिनेट ने कहा, ''दरअसल उस कहानी में एक शिक्षा भी थी।''

''आह, ऐसा करना कभी भी खतरे से खाली नहीं होता।'' बतख बोली।

और मैं उससे पूरी तरह सहमत हूँ।

❑

किशोर राजा

वह उसकी ताजपोशी से पहले की रात थी। किशोर राजा अपने आलीशान कमरे में अकेला बैठा था। उसके सभी दरबारी उस जमाने के रिवाज के मुताबिक उसके सामने जमीन तक सिर झुकाकर विदा ले चुके थे। वे सब राजसी आचार के विशेषज्ञ प्रोफेसर से आखिरी सबक लेने के लिए महल के बड़े हॉल में चले गए थे। उनमें से कुछ बिलकुल स्वाभाविक आचार-व्यवहार जानते थे, जो बहुत गंभीर किस्म का दोष माना जाता है।

लड़का—वह सोलह साल का लड़का ही तो था, उनके जाने से उदास न था। अपने सुंदर कढ़ाईवाले काउच की नरम गद्दियों पर लेटकर उसने इत्मीनान की साँस ली। आँखें फाड़े और मुँह बाए वह किसी हिरन के बच्चे या दूसरे जंगली जानवर सा लगता था, जो ताजा-ताजा शिकारियों के जाल में फँसा हो।

सचमुच शिकारियों ने ही उसे खोज निकाला था। वह उन्हें अचानक मिल गया था। हाथ में बाँसुरी लिये, उघाड़ बदन एक गरीब बकरीवाले का रेवड़ चराता हुआ। इस बकरीवाले ने ही उसे पालपोसकर बड़ा किया था। वह खुद को उसी का बेटा समझता था। दरअसल वह बूढ़े राजा की इकलौती बेटी की औलाद था। राजकुमारी ने चोरी-छिपे अपने से बहुत नीचे स्तर के एक युवक से ब्याह रचा लिया था। कुछ लोगों का कहना था कि वह युवक वीणा बजाने में बहुत कुशल था और राजकुमारी उसके इसी गुण पर मोहित होकर उससे प्रेम कर बैठी थी। दूसरों का कहना था कि वह बहुत अच्छा कलाकार था। राजकुमारी उसका बहुत अधिक आदर-मान करती थी। फिर एक दिन वह अपना महागिरजाघर का काम अधूरा छोड़कर अचानक शहर से गायब हो गया। यह लड़का अभी सात दिन का ही था। तभी रात को जब उसकी माँ सो रही थी, उसे चोरी से उसके पास से उठाकर एक गरीब किसान दंपती के हवाले कर दिया गया। यह निस्संतान दंपती शहर से घुड़सवारी के एक दिन से ज्यादा की दूरी पर जंगल में रहता था।

जागने के एक घंटे के अंदर ही उसे जन्म देनेवाली सुंदर लड़की भी चल बसी थी। राजवैद्य के अनुसार उसकी मौत का कारण दुःख या प्लेग था, अन्य लोगों के अनुसार शराब में मिलाया गया तीखा इतालवी जहर। जिस समय उस बच्चे को ले जानेवाला विश्वस्त हरकारा अपने थके हुए घोड़े से उतरकर गड़ेरिए की झोंपड़ी के अनगढ़ दरवाजे पर दस्तक दे रहा था, एक वीरान अहाते की कब्र में राजकुमारी का मृत शरीर उतारा जा रहा था। कहा जाता है कि नगर द्वार से दूर इस अहाते की उस कब्र में एक अत्यंत रूपवान विदेशी युवक का मृत शरीर भी रखा था, जिसके हाथ एक रस्सी से पीठ पीछे बँधे हुए थे। उसकी छाती पर छुरे के अनेक गहरे घावों के लाल निशान थे।

कुछ ऐसी ही कहानी थी, जो आम लोग एक-दूसरे को फुसफुसाकर सुनाया करते थे। उसके बाद बूढ़े राजा ने अपने महान् पाप के प्रायश्चित्त के लिए या फिर इस विचार से कि उसका राजपाट उसके वंश में ही रहे, लड़के को लाने का आदेश दिया और अपने सभी सभासदों की उपस्थिति में उसे उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

ऐसा लगता है कि इस मान्यता के पहले दिन से ही उसने उस सुंदरता के प्रति गहरा अनुराग दिखाना शुरू कर दिया, जिसने उसके जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाया था। जो उसके साथ उसके लिए आरक्षित कक्षों में जाते थे, वे देखते कि वह किस तरह जवाहरात की दमक और वहाँ की आलीशान साज-सज्जा देखकर खुशी के मारे चिल्ला पड़ता है। उन्होंने यह भी देखा कि किस तरह खुशी के अतिरेक में उसने अपनी चमड़े की कुरती और गड़ेरिए का मामूली लिबास उतार फेंका था। लेकिन कई बार उसे जंगल के अपने आजादी के दिन याद आते। रोज देर तक चलनेवाले दरबार के उबाऊ उत्सवों के दौरान वह हमेशा अपनी खीज भी जाहिर किया करता, लेकिन राजमहल की शानदार आनंदित करनेवाली सभी वस्तुएँ, जिनका वह अब स्वामी था, उसे एक नई दुनिया की तरह लगतीं। वह

उनमें नई ताजगी महसूस करता। वह दरबार या मंत्रणा कक्ष से निकलकर कई बार काँसे के शेरों से दोनों ओर सजी लाल पोरफरी पत्थर की सीढ़ियाँ भागकर उतरता और एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक गलियारे से दूसरे गलियारे में घूमा करता। जैसे कोई इस सुंदरता में दर्द-निवारक खोज रहा हो। जैसे किसी बीमारी में राहत पा रहा हो।

वह इनको अपनी खोज यात्राएँ कहता। वे उसके लिए एक आलीशान प्रदेश की खोज-यात्राएँ तो थीं ही। कई बार उसके साथ अपने लहराते लबादों और फड़फड़ाते रिबनोंवाले छरहते बदन के भूरे बालोंवाले छोकरे सेवक रहते, लेकिन अकसर वह अकेला ही होता। उसे यह भावना अभिभूत सा कर देती कि कला के रहस्य, रहस्यमय तरीके से ही खोजे जा सकते हैं और बुद्धिमानी की तरह सुंदरता भी अकेले पुजारी को पसंद करती है।

उस समय उसके बारे मे अनेक विचित्र कहानियाँ प्रचलित हो गई थीं। कहा जाता था कि एक बार जब हृष्टपुष्ट नगरप्रधान नगरवासियों की ओर से उसे संबोधित करने आया था तो वह वेनिस से आए एक नए चित्र को झुककर देखने में लीन रहा। उसमें कुछ देवताओं की पूजा का दृश्य चित्रित किया गया था। एक और अवसर पर वह कई घंटों तक गायब रहा। बहुत खोजने पर अंतत: उसे महल के उत्तरी भाग के छोटे कक्ष में एक यूनानी जवाहर में तराशी गई एडोनिस देवता की प्रतिमा को एकटक निहारते पाया गया। कहानी के मुताबिक उसे एक बार एक पुरानी प्रतिमा के संगमरमर के माथे को चूमते हुए देखा गया। यह पत्थर के पुल के निर्माण के समय नदी में मिली थी और इसे हैड्रियन के किसी दास की प्रतिमा बताया गया था। उसने एक पूरी रात एंडीमियन की चाँदी की प्रतिमा पर चाँदनी के प्रभाव को देखने में बिता दी थी।

सभी दुर्लभ और बहुमूल्य चीजें स्वभावत: उसे सम्मोहित सा कर देती थीं। उन्हें पाने के लिए वह कई बार व्यापारियों को दूर-दराज के मुल्कों में भेज देता। कुछ को वह अंबर के बदले उत्तरी सागर के मत्स्य उत्पादन का विनिमय करने के लिए भेज देता तो कुछ को दुर्लभ हरा फिरोजा लेने मिस्र भेज देता, जो केवल राजाओं के मकबरों में पाया जाता है और जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें जादुई गुण होते हैं। कुछ को वह रेशमी कालीन और रंग-बिरंगे चिकनी मिट्टी के बरतन खरीदने के लिए फारस भेजता तो कुछ को जाली, हाथी दाँत, मूनस्टोन, जेड के कंगन, नीली तामचीनी और उत्तम किस्म के ऊन की शॉल लेने के लिए भारत भेजता।

लेकिन उसका सबसे अधिक ध्यान उस राजसी पहनावे पर था, जो उसने ताजपोशी के दिन पहनना था। यह सुनहरी जरी की पोशाक थी। इसके साथ माणिक जड़ा ताज था और उसका राजदंड मोती के चक्रों से जड़ा था। आज रात अपने आरामदेह काउच पर लेटा हुआ अँगीठी में जलती देवदार की लकड़ियों की तरफ देखता हुआ वह इसी बारे में सोच रहा था। उस समय के प्रसिद्ध कारीगरों के बनाए डिजाइन महीनों पहले उसे पेश किए गए थे। उसने आदेश दिए थे कि कारीगर इनपर रात-दिन काम करें और इन डिजाइनों के अनुरूप जवाहरात सारी दुनिया से खोज-खोज कर मँगाए जाएँ। अपनी कल्पना में वह खुद को महागिरजाघर के मंच पर राजसी पोशाक में खड़ा देख रहा था। उसके किशोर होंठों पर एक मुसकान ठहर गई और उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों में चमक उठीं।

कुछ समय बाद वह अपने स्थान से उठा। चिमनी की महराब से टिककर उसने मद्धम रोशनीवाले उस कमरे पर नजर दौड़ाई। उसकी दीवारें बेहतरीन टेपेस्ट्री से सजी हुई थीं। एक कोने में गोमेद और नीलम से जड़ी अलमारी रखी थी। खिड़की के सामने की तरफ सोने की पच्चीकारीवाले पट्ट से सजे लाक्षा के दिल्लोंवाली एक पेटी रखी थी। उसके ऊपर वेनिस के शीशे के जाम और गहरी धारियोंवाला सुलेमानी पत्थर का बड़ा सा प्याला रखा था।

बिस्तर के रेशमी पलंगपोश पर पीले फूलों की कढ़ाई थी। ऐसा लगता था जैसे वे नींद के अलसाए हाथों से गिर पड़े हों। हाथीदाँत की लंबी डंडियों पर मखमली छतरी टिकी थी, जिससे शुतरमुर्ग के परों के बड़े-बड़े गुच्छे लटक रहे थे। वे नक्काशीदार छत में मढ़े चाँदी के झाग जैसे लग रहे थे। हरित काँसे की एक हँसती हुई सुंदरी अपने सिर पर

चमकदार आईना उठाए खड़ी थी। मेज पर एमिथिस्ट का एक चौरस प्याला रखा था।

बाहर उसे महागिरजाघर का बड़ा गुंबद दिखाई दे रहा था, जो धुँधले से दिखनेवाले घरों पर एक बड़े बुलबुले सा लग रहा था। नदी किनारे की कोहरे से ढकी छत पर थके-थके से संतरी घूमते हुए पहरा दे रहे थे। दूर एक फलों के बाग में बुलबुल गा रही थी। खुली हुई खिड़की से जुही की हलकी सी खुशबू अंदर आई। उसने अपने माथे से भूरे बालों की लट हटाई और वीणा उठा ली। उसकी उँगलियाँ उसके तारों पर थिरकने लगीं। उसकी बोझिल पलकें मुँद गईं और विचित्र प्रकार की विह्वलता उसमें व्याप्त हो गई। इससे पहले उसने कभी भी सुंदर वस्तुओं के प्रति इस प्रकार के जादू या रहस्यमयता अथवा आनंदातिरेक का अनुभव नहीं किया था।

घंटाघर की घड़ी ने जब आधी रात होने की सूचना दी तो उसने एक घंटी बजाई। तुरंत उसके छोकरे सेवक आ गए। उन्होंने बड़े विधि-विधान के साथ उसके राजसी वस्त्र उतारे। उसके हाथों को गुलाब जल से धोया और उसके तकिए पर फूल बिछा दिए। उनके कमरे से जाने के कुछ समय बाद वह सो गया।

नींद में उसने एक सपना देखा। और यह था उसका सपना—

उसने देखा कि वह नीची छतवाली एक लंबी परछत्ती में खड़ा है। वहाँ बहुत से करघों के चलने का शोर हो रहा है। जालीदार खिड़कियों से छनकर दिन की मद्धम रोशनी आ रही है। उसमें उसने अपने काम पर झुके बुनकरों की दुबली उँगलियाँ देखीं। आड़ी कड़ियों पर पीले चेहरोंवाले बीमार दिखनेवाले बच्चे लिटाए गए थे। जब भरनी ताने में से होकर गुजरती तो वे भारी तख्तों को ऊपर उठाते और फिर भरनी के रुकने पर उनको नीचे गिरने देते और धागों को एक-दूसरे से सटाते।

उनके चेहरे भुखमरी के मारे हुए थे और उनके कमजोर हाथ काँप रहे थे। कुछ मरियल सी औरतें एक मेज पर बैठी सिलाई कर रही थीं। सारी जगह एक भयानक दुर्गंध से भरी थी। हवा बदबूदार और बोझिल थी। नम दीवारों से पानी टपक रहा था।

किशोर राजा एक बुनकर के पास गया और उसे काम करते देखने लगा।

बुनकर ने उसकी तरफ गुस्से से देखा और बोला, ''आप मुझ पर क्यों निगरानी कर रहे हैं। क्या आपको हमारे मालिक ने यहाँ जासूसी करने के लिए भेजा है?''

''आपका मालिक कौन है?'' किशोर राजा ने पूछा।

''हमारा मालिक'',बुनकर कड़वाहट से बोला, ''वह भी मेरे जैसा इनसान ही है। मुझमें और उसमें बस फर्क यह है कि वह बहुत उम्दा कपड़े पहनता है, जबकि मैं ये चीथड़े पहनता हूँ। मैं भूख के मारे दुर्बल हूँ और वह जरूरत से ज्यादा खाकर भी अघाता नहीं।''

''यह स्वतंत्र देश है'', किशोर राजा बोला, ''और आप किसी के गुलाम नहीं हैं।''

''युद्ध में'', बुनकर ने जवाब दिया, ''ताकतवर कमजोरों को गुलाम बनाते हैं। शांतिकाल में अमीर गरीबों को अपना गुलाम बनाते हैं। जिंदा रहने को हमारे लिए काम करना जरूरी है, लेकिन वे हमें इतना कम मेहनताना देते हैं कि हम मर जाते हैं। हम उनके लिए दिनभर जी-तोड़ मेहनत करते हैं और वे अपने खजाने सोने से भर लेते हैं। हमारे बच्चे समय से पहले ही कुम्हला जाते हैं और उन्हें प्यार करनेवालों के चेहरे सख्त और कुरूप हो जाते हैं। अंगूर हम पैदा करते हैं और उसकी मदिरा दूसरे पीते हैं। धान हम बोते हैं और हमारे ही दस्तरखान खाली रहते हैं। हम जंजीरों में जकड़े हुए हैं, हालाँकि कोई आँख उन्हें देख नहीं पाती। हम गुलाम हैं, लेकिन लोग हमें आजाद कहते हैं।''

''क्या सबका यही हाल है?'' उसने पूछा।

''सबका ऐसा ही हाल है'', बुनकर ने जवाब दिया, ''जवानों का भी और बूढ़ों का भी। आदमियों का भी और औरतों का भी। छोटे बच्चों का भी और जिनको बुढ़ापे ने जर्जर कर दिया है उनका भी। व्यापारी हमें पीस डालते हैं और हमें उनकी लगाई बोली कुबूल करनी पड़ती है। पादरी भी माला फेरता हुआ हमारे सामने से अपनी सवारी में निकल जाता है। किसी को हमारी परवा नहीं है। हमारी अँधेरी गलियों में गरीबी अपनी भूखी आँखों से रेंगती है और अपना सूजा हुआ चेहरा लिये पाप उसके पीछे-पीछे चलता है। विपत्ति हमें सुबह जगाती है और शर्म रात को हमारे साथ बैठा करती है, लेकिन आपके लिए ये बातें क्या मानी रखती हैं? आप तो हममें से एक नहीं। आपका चेहरा तो खुशी से खिला हुआ है।'' उसने नाक-भौं चढ़ाते हुए अपना मुँह फेर लिया। जब उसने भरनी को करघे की तरफ धकेला तो किशोर राजा ने देखा कि उसमें सोने के तार थे।

एक भयानक डर ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। उसने बुनकर से पूछा, ''आप यह किसकी पोशाक बुन रहे हैं?''

''यह किशोर राजा की ताजपोशी की पोशाक है'', बुनकर बोला, ''लेकिन आपको इससे क्या लेना-देना है?''

इसपर किशोर राजा जोर से चिल्ला पड़ा और उसकी आँख खुल गई। अरे, वह तो अपने कक्ष में था। उसने खिड़की से बाहर झाँका। धूसर आसमान में शहद के रंग का चाँद टँगा हुआ था।

उसे फिर से नींद आ गई। फिर उसने एक सपना देखा। वह सपना यह था—

उसने देखा कि वह एक बड़े पोत के डेक पर लेटा हुआ है। उसके चप्पू एक सौ गुलाम चला रहे हैं। उसके पास के कालीन पर इन गुलामों का स्वामी बैठा था। वह आबनूस की तरह काला था और लाल रेशमी पगड़ी पहने था। चाँदी की बड़ी-बड़ी बालियाँ उसके कान की मोटी लोर को नीचे को खींचे हुए थीं। उसके हाथ में हाथी दाँत का काँटा था।

गुलाम नंगे थे। उनके तन पर सिर्फ मामूली कपड़े की लँगोटियाँ भर थीं। हर आदमी जंजीर से अपने साथवाले से बँधा हुआ था। सूरज की तेज धूप उनपर पड़ रही थी। गलियारे के आगे-पीछे दौड़ते हब्शी उनको चमड़ों के कोड़ों से पीट रहे थे। वे अपनी दुबली बाँहें फैलाकर पानी में भरी चप्पू चला रहे थे। उन चप्पुओं से खारा पानी टपक रहा था।

अंतत: वे एक छोटी बंदरगाह पर पहुँचे और पानी की थाह लेने लगे। किनारे से हवा के हलके झोंके आ रहे थे। सारा डेक और पतवार लाल रंग की बारीक धूल से अँट गया। वनगधों पर सवार तीन अरब उनके पास से निकले। उन्होंने उनपर अपने भाले फेंके। पोत के स्वामी ने अपने हाथों में एक रंगीन धनुष पकड़ा और उनमें से एक की गरदन में तीर मारा।

वह धड़ाम से समुद्र की लहरों में जा गिरा। उसके साथी तेजी से भाग निकले। ऊँट पर सवार पीले बुरके में लिपटी एक औरत धीरे-धीरे उनके पीछे चली आ रही थी। वह बार-बार उस मृत शरीर की तरफ देखती थी।

जैसे ही उन्होंने लंगर डाला और पतवार को नीचे उतारा, हब्शी नीचे गोदामघर से एक रस्सी से बनी सीढ़ी ऊपर लाए। यह सीसे से भारी की गई थी। पोत के मालिक ने इसे एक किनारे से नीचे फेंका। फिर उसके दोनों किनारों को मजबूती के साथ लोहे के सीखचों से बाँध दिया गया। हब्शियों ने सबसे युवा गुलाम को पकड़कर उसकी जंजीर हटा दी। फिर उन्होंने उसके नथुनों और कानों में मोम भर दी और उसकी कमर में एक बड़ा पत्थर बाँध दिया। वह थके-माँदे हाल में सीढ़ी से नीचे उतरा और समुद्र में गायब हो गया। जहाँ उसने डुबकी लगाई थी, वहाँ से कुछ बुलबुले ऊपर उठे। कुछ अन्य गुलाम उत्सुकता से उस तरफ झाँकने लगे। पोत के अगले हिस्से में एक शार्क मछलियों को लुभाकर बुलानेवाला आदमी बैठा था। वह एक सुर में अपना ढोल बजा रहा था।

कुछ देर बाद गोताखोर पानी की सतह से ऊपर आया। उसने सीढ़ी के सहारे लटककर खुद को टिकाया। उसके दाहिने हाथ में एक मोती था। हब्शियों ने वह मोती उसके हाथ से लेकर उसे वापस पानी में धकेल दिया। गुलाम अपने चप्पुओं के सहारे सो गए।

वह बार-बार ऊपर आता। हर बार उसके हाथ में एक खूबसूरत मोती होता था। पोत के मालिक ने उनको तौलकर हरे चमड़े की एक थैली में डाल लिया।

किशोर राजा ने बोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी जीभ मानो तालू से चिपक गई थी और उसके होंठ हिलने से इनकार कर रहे थे। हब्शी आपस में बातचीत कर रहे थे। वे एक मनकों की माला को लेकर आपस में झगड़ने लगे। दो सारस पोत के चारों ओर मँडराते रहे थे।

गोताखोर आखिरी बार ऊपर आया। इस बार जो मोती वह लाया था, वह अब तक के मोतियों में सबसे सुंदर था। यह पूर्णिमा के चंद्रमा सा गोल और भोर के तारे से भी अधिक सफेद था, लेकिन गुलाम का चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। वह डेक पर आकर गिर पड़ा। उसके कान और नथुनों से खून बहने लगा। वह थोड़ी देर काँपकर शांत हो गया। हब्शियों ने अपने कंधे उचकाए और फिर उसके मृत शरीर को समुद्र में फेंक दिया।

पोत का मालिक हँस पड़ा। उसने हाथ बढ़ाकर मोती ले लिया। उसे देखने के बाद उसने सिर झुकाकर मोती को अपने माथे से लगाया। ''यह किशोर राजा के राजदंड के लिए ठीक रहेगा।'' वह बोला। फिर उसने हब्शियों को लंगर उठाने का इशारा किया।

इतना सुनते ही किशोर राजा बहुत जोर से चीख पड़ा। उसकी नींद खुल गई। उसने खिड़की से देखा कि भोर की लंबी उँगलियाँ तारों को अपने चंगुल में दबोच रही हैं।

उसे फिर नींद आ गई और एक बार फिर उसने सपना देखा। उसका इस बार का सपना यह था—

उसने देखा कि वह एक जंगल में घूम रहा है। वहाँ रोशनी बहुत मद्धम थी और पेड़ों पर विचित्र प्रकार के फल तथा सुंदर जहरीले फूल लटक रहे थे। जब वह पास से गुजरता तो जहरीले साँप उसपर फुफकारते। चटक रंगोंवाले तोते टाँय-टाँय करते हुए एक डाली से दूसरी पर उड़ रहे थे। गरम कीचड़ पर बड़े-बड़े कछुए सोए हुए थे। पेड़ों पर बेशुमार बंदर और मोर बैठे थे।

वह आगे बढ़ता रहा और अंत में जंगल के छोर पर जा पहुँचा। वहाँ उसने बहुत बड़ी संख्या में आदमियों को एक सूखी नदी के तल में कड़ी मेहनत करते हुए देखा। उस पथरीले तल पर उनके झुंड चींटियों की तरह फैले हुए थे। वे जमीन में गहरे गड्ढे खोदकर उनमें उतर जाते। इनमें से कुछ चट्टानों को भारी कुल्हाड़ियों से तोड़ते, कुछ रेत में टटोलते दिखाई देते।

वे कैक्टस को जड़ से उखाड़ते और उसके लाल फूलों को पैरों तले रौंदते। वे एक-दूसरे को पुकारते हुए जल्दबाजी में थे और उनमें से कोई भी बेकार नहीं बैठा था।

एक गुफा के अँधेरे से मौत और लालच उन्हें देख रहे थे। लोभ ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''वे मेरे गुलाम हैं।''

इस पर मौत ने कहा, ''तुम्हारे हाथ में क्या है?''

''मेरे हाथ में अनाज के तीन दाने हैं'',उसने जवाब दिया, ''तुम्हारे लिए ये क्या हैं?''

''मुझे इनमें से एक अपने बगीचे में बोने के लिए दे दो'', मौत ने कहा, ''सिर्फ उनमें से एक और मैं यहाँ से चली जाऊँगी।''

''मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगा'', लोभ बोला और उसने अपना हाथ चोगे में छिपा लिया।

मौत ने हँसकर एक प्याला उठाया और उसे पानी में डुबो दिया। उस प्याले से शीतज्वर निकला। उसने उस भारी भीड़ का एक चक्कर लगाया और उनमें से एक तिहाई मर गए। उसके साथ ही एक ठंडा कोहरा छा गया और पानी के साँप उसके साथ-साथ दौड़ने लगे।

लोभ ने जब देखा कि एक तिहाई लोग मर गए हैं तो वह छाती पीट-पीटकर रोने लगा। उसने अपनी उघड़ी छाती पीटी और जोर-जोर से चिल्लाया, ''तुमने मेरे एक तिहाई गुलामों को मार डाला है। यहाँ से दफा हो जाओ। तातार के पहाड़ों में युद्ध हो रहा है। दोनों तरफ के राजा तुम्हें पुकार रहे हैं। अफगानों ने काले साँड़ को मार दिया है और अब वे युद्ध के लिए आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने अपने भालों से अपनी ढालों को खनखनाया है और सिर पर लोहे के टोप पहन लिये हैं। मेरी यह घाटी तुम्हारे लिए क्या है, जो तुम यहाँ रुको। यहाँ से दफा हो जाओ और फिर कभी यहाँ मत आना।''

''नहीं'', मौत ने कहा, ''जब तक तुम मुझे अनाज का एक दाना नहीं दोगे, मैं यहाँ से नहीं जानेवाली।''

लेकिन लोभ ने दाँत पीसते हुए अपनी मुट्ठी बंद कर ली। ''मैं तुम्हें कुछ न दूँगा।'' वह बड़बड़ाया।

मौत ने हँसकर एक काला पत्थर उठाया और उसे जंगल में फेंका। वहाँ के विषगर्जर के झुरमुट से बुखार एक ज्वाला की तरह निकला। वह उस भीड़ में से कुछ लोगों को छूता हुआ निकला। उसने जिस किसी को छुआ वह मर गया। वह जहाँ-जहाँ से गुजरा उसके पाँवों के नीचे की घास जलकर खत्म हो गई।

यह देखकर लोभ ने अपने सिर में राख डाल ली और काँपने लगा। ''तुम निर्दय हो'', उसने चिल्लाकर कहा, ''भारत के चारदीवारीवाले शहरों में अकाल पड़ा हुआ है और समरकंद के पानी के कुंड सूख गए हैं। मिस्र के चारदीवारीवाले शहरों में अकाल पड़ा है और वहाँ रेगिस्तान से टिड्डीदल आ गया है। नील अपने किनारों से ऊपर आकर नहीं बही है और पुजारी ग्रह-नक्षत्रों को कोस रहे हैं। तुम वहाँ जाओ, जिनको तुम्हारी जरूरत है और मेरे गुलाम मेरे पास रहने दो।''

''नहीं'', मौत ने कहा, ''जब तक तुम मुझे अनाज का एक दाना नहीं दे देते मैं नहीं जानेवाली।''

''मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगा।'' लोभ बोला।

मौत फिर हँस पड़ी। उसने अपनी उँगलियों से सीटी बजाई तो एक औरत हवा में उड़ती हुई प्रकट हो गई। उसके माथे पर प्लेग लिखा था। उसके चारों तरफ गिद्ध मँडरा रहे थे। उसने सारी वादी को अपने पंखों के साए में ले लिया और एक भी आदमी जिंदा नहीं बचा।

लोभ चिल्लाता हुआ जंगल के रास्ते भागा। मौत भी अपने लाल घोड़े पर सवार होकर भाग निकली। उसकी सरपट चाल हवा से भी तेज थी।

वादी के निचले हिस्से में कीचड़ में ड्रैगन और हर तरह के भयानक जीव रेंग रहे थे। रेत में से घिसटते हुए गीदड़ आए। वे अपने नथुनों से हवा को सूँघ रहे थे।

किशोर राजा रोकर बोला, ''ये लोग कौन थे और वे क्या खोज रहे थे?''

''राजा के ताज के लिए माणिक खोज रहे थे।'', उसके पीछे खड़े एक आदमी ने जवाब दिया।

उसने मुड़कर देखा तो वहाँ एक राहगीर खड़ा था। उसके हाथ में एक चाँदी का आईना था।

यह सुनकर उसका चेहरा पीला पड़ गया और पूछ बैठा, ''कौन सा राजा?''

राहगीर बोला, ''इस आईने में देखो तो तुमको उसकी शक्ल दिखाई दे जाएगी।''

किशोर राजा ने आईने में अपनी ही शक्ल देखी तो जोर से चिल्ला पड़ा और इसके साथ ही उसकी नींद खुल गई। कमरे में सूरज की तेज रोशनी आ चुकी थी। पेड़ों पर से और उपवन में चिड़ियाँ चहचहा रही थीं।

महाप्रतिहार और दूसरे वरिष्ठ दरबारियों ने आकर उसे झुककर प्रणाम किया। सेवक उसके लिए सोने की जरी के राजसी वस्त्र लाए और उसका ताज तथा राजदंड उसके सामने रखा।

किशोर राजा ने उनकी तरफ देखा। सबकुछ बहुत सुंदर था। उसने अब तक जो कुछ देखा था, उससे भी सुंदर। उसे अपने सपनों की याद आ गई तो अपने सामंतों से बोला, ''ये सब ले जाइए, क्योंकि मैं इनको नहीं पहनूँगा।''

इसपर दरबारी हैरान हो गए। वे हँस पड़े। उन्होंने सोचा वह मजाक कर रहा है।

लेकिन वह फिर से उनसे कड़ाई से बोला, ''इन चीजों को ले जाकर मेरी नजरों से दूर कर दीजिए। भले ही वह मेरा ताजपोशी का दिन हो, मैं इनको नहीं पहनूँगा, क्योंकि मेरी यह राजसी पोशाक दु:ख के करघे पर दर्द के सफेद हाथों से बुनी गई है। माणिकों के अंदर खून है और मोतियों के अंदर मौत है।'' इसके बाद उसने उनको अपने तीन सपने कह सुनाए।

दरबारियों ने यह सब सुनकर एक-दूसरे की तरफ देखा। वे फुसफुसाए, ''यह पागल हो गया है। आखिर सपना, महज सपना ही तो होता है और उसमें जो कुछ देखते हैं, वह काल्पनिक दृश्य ही तो होता है। वे कोई असली बातें तो नहीं कि उनकी तरफ ध्यान दिया जाए। फिर जो हमारे लिए मेहनत करते हैं, उनकी जिंदगियों से हमें क्या लेना-देना? क्या हम जब तक बोनेवाले को देख न लें, रोटी नहीं खानी चाहिए या फिर जब तक बनानेवाले को न देख लें मदिरा नहीं पीनी चाहिए?''

महाप्रतिहार ने राजा को संबोधित करते हुए कहा, ''महाराज, आप इन बुरे विचारों को मन से निकाल दें। इन सुंदर वस्त्रों को धारण करें और अपने सिर पर ताज पहनें। क्योंकि अगर आप राजा के वस्त्राभूषणों से सुसज्जित न होंगे तो लोग कैसे जानेंगे कि आप राजा हैं?''

किशोर राजा ने उसकी तरफ देखा। ''क्या वाकई ऐसा है?'' उसने सवाल किया, ''अगर मैं राजचिह्न न पहनूँ तो क्या लोग मुझे राजा नहीं जानेंगे?''

''महाराज, वे नहीं जानेंगे।'' महाप्रतिहार ने कहा।

''मैं सोचता था कि ऐसे लोग भी रहे हैं, जो राजा जैसे थे'', वह बोला, ''लेकिन आप कहते हैं तो ऐसा ही होगा, फिर भी मैं यह राजसी वस्त्र नहीं पहनूँगा। न ही सिर पर ताज पहनूँगा। जैसे मैं इस महल में आया था, वैसे ही चला जाऊँगा।''

फिर उसने उन सबसे कहा कि उसे अकेला छोड़ दें। सिर्फ एक छोकरे सेवक को पास रहने दिया, अपने साथी के तौर पर। वह उम्र में उससे भी एक साल छोटा था। उसे उसने अपनी सेवा के लिए रहने दिया। साफ पानी से नहाने के बाद उसने एक पेटी खोली। उसमें से उसने अपनी कमीज और भेड़ की खाल का चोगा निकाला, जिसे वह पहाड़ पर भेड़ों की निगरानी करते समय पहना करता था। उसने इनको पहना और अपने हाथ में गड़ेरिए का खुरदरा डंडा पकड़ा।

छोटे सेवक ने अपनी नीली आँखें हैरानी से फैलाते हुए कहा, ''महाराज मैं आपके राजसी वस्त्र और राजदंड तो देख रहा हूँ, लेकिन आपका ताज कहाँ है?''

इसपर किशोर राजा ने छज्जे तक बढ़ आई जंगली लता की एक टहनी तोड़कर उसे गोलाकार मोड़ा और अपने सिर पर सजा लिया।

''यही मेरा ताज होगा।'', उसने जवाब दिया।

इस तरह का पहनावा पहनकर वह अपने कक्ष से निकलकर बड़े हॉल में गया जहाँ सामंत उसका इंतजार कर रहे थे।

सामंतों ने उसका मजाक उड़ाया। उनमें से कुछ ने उससे चिल्लाकर कहा, ''महाराज, प्रजा अपने राजा का इंतजार कर रही है और आप उसे एक भिखारी दिखाना चाहते हैं।'' कुछ बहुत गुस्से से बोले, ''वह हमारे देश को शर्मिंदा कर रहा है और हमारा स्वामी बनने लायक नहीं।'' उसने उनकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया। वह संगमरमर की चमकदार सीढ़ियाँ उतरता हुआ काँसे के दरवाजे से बाहर आकर अपने घोड़े पर सवार हुआ और महागिरजाघर की तरफ चल दिया। सेवक छोकरा उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

प्रजाजन उसे देखकर हँसे और बोले, ''यह राजा का विदूषक है।'' और उसकी हँसी उड़ाने लगे।

उसने अपने घोड़े की लगाम खींची और बोला, ''नहीं, मैं राजा ही हूँ।'' फिर उसने उनको अपने तीन सपने सुनाए।

तभी एक आदमी भीड़ से निकलकर आया और बड़ी कड़वाहट से उससे बोला, ''हजूर, आपको पता नहीं कि अमीरों के विलास में से ही गरीबों की जीविका निकलती है। आपकी शान से ही हमें पोषण मिलता है। आपके दुर्व्यसन ही हमें हमारी रोटी देते हैं। किसी कठोर स्वामी के लिए मेहनत करना दु:खदायी होता है, लेकिन मेहनत करने के लिए कोई स्वामी न हो तो स्थिति और भी दु:खदायी हो जाती है। आप क्या सोचते हैं कि काले कौए हमें रोटी खिलाएँगे? आपके पास इन चीजों का क्या इलाज है? क्या आप खरीदार से कह सकेंगे, 'तुम इन चीजों को इस भाव पर खरीदो।' या फिर बेचनेवाले से कह सकेंगे, 'तुम इन चीजों को इस भाव पर बेचो।' मैं समझता हूँ, नहीं। इसलिए अपने महल लौट जाइए और अपनी उत्तम रेशमी पोशाक पहनिए। आपको हमसे या हमारे दु:ख-दर्द से क्या लेना-देना है?''

''क्या अमीर और गरीब भाई नहीं हैं?'' किशोर राजा ने सवाल किया।

''हैं'', उस आदमी ने जवाब दिया, ''और बड़े भाई का नाम हत्यारा है।''

यह सुनकर किशोर राजा की आँखें आँसुओं से भर गईं। वह लोगों की फुसफुसाहट से होता हुआ अपने घोड़े पर आगे बढ़ गया। छोकरे सेवक ने डर के मारे उसका साथ छोड़ दिया।

जब वह महागिरजाघर के विशाल द्वार पर पहुँचा तो संतरियों ने अपने फरसे तानते हुए कहा, ''यहाँ क्या लेने आए हो? इस द्वार से राजा के सिवा और कोई प्रवेश नहीं कर सकता।''

उसका चेहरा गुस्से से तमतमा गया। उसने कहा, ''मैं ही राजा हूँ।'' उनके फरसे एक तरफ हटाकर वह द्वार से अंदर चला गया।

बूढ़े पादरी ने जब उसे गड़रिए के लिबास में आते देखा तो हैरान हो गए। वे अपनी गद्दी से उठकर उससे मिलने आए। ''मेरे बेटे'', वे बोले, ''क्या यह किसी राजा की पोशाक है? मैं किस ताज से आपकी ताजपोशी करूँगा और कौन सा राजदंड आपके हाथ में दूँगा? यह आपके लिए हर्ष-उल्लास का दिन है, अनादर का दिन नहीं।''

''क्या हर्ष-उल्लास के लिए वह पहनना जरूरी है, जिसे दु:ख ने बनाया हो।'' किशोर राजा बोला और इसके साथ ही उसने पादरी को अपने तीन सपने सुना दिए।

यह सब सुनकर पादरी के माथे पर बल पड़ गए। वे बोले, ''मेरे बेटे, मैं बूढ़ा अपने जीवन के शीतकाल में हूँ। मैं जानता हूँ कि इस दुनिया में क्या-क्या बुरे काम किए जाते हैं। पहाड़ों से आकर खूँखार डाकू बच्चों को उठा ले जाते हैं और उन्हें बर्बर हब्शियों को बेच देते हैं। शेर कारवानों की घात में रहते हैं और ऊँटों पर झपट पड़ते हैं। घाटी में जंगली सूअर अनाज को जड़ से खोद डालते हैं और लोमड़ियाँ पहाड़ी पर अंगूर की बेलों को कुतरकर नष्ट कर देती हैं। समुद्री डाकू समुद्र तट को लूट-खसोट कर नष्ट कर डालते हैं और मछुआरों की नावों को जला देते हैं। वे उनके जाल छीन लेते हैं। कोढ़ी खारी दलदलों में रहते हैं। वे सरकंडे की टट्टियों से बने घरों में रहते हैं। कोई उनके नजदीक नहीं जाता। भिखारी शहर में दर-दर भटकते फिरते हैं और कुत्तों के साथ भोजन करते हैं। क्या आप ऐसा

कर सकते हैं कि यह सब न हो? क्या आप किसी कोढ़ी को अपने बिस्तर पर सोने देंगे? क्या किसी भिखारी को दस्तरख्वान पर अपने साथ बैठाएँगे? क्या शेर को अपने आदेश का पालन करनेवाला और जंगली सूअर को अपना आज्ञाकारी बना सकेंगे? क्या उस महाशक्ति ने दु:ख विपत्ति को आपसे अधिक चतुर नहीं बनाया है? इसलिए आपने जो कुछ किया है, उसके लिए मैं आपकी प्रशंसा नहीं करता और आपसे अनुरोध करता हूँ कि अपने घोड़े पर वापस महल लौटकर राजसी वस्त्र धारण कर लें। फिर मैं आपको सोने का ताज पहनाऊँगा और मोतियों जड़ा राजदंड आपके हाथ में दूँगा। जहाँ तक आपके सपनों का सवाल है, अब और उनके बारे में मत सोचिए। इस संसार का भार उठाना एक आदमी के बस की बात नहीं और इस संसार का दु:ख इतना अधिक है कि एक आदमी का हृदय उसे सहन नहीं कर सकता।''

''आप खुदा के घर में बैठकर ऐसी बातें कर रहे हैं।'' किशोर राजा बोला और पादरी के पास से होकर आगे बढ़ गया। वह वेदी की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ईसा की मूर्ति के सामने जा खड़ा हुआ।

वह ईसा की मूर्ति के सामने खड़ा था। उसके दाईं और बाईं ओर सोने के भव्य कलश थे। पीत मदिरा के प्याले रखे थे और पवित्र तेल की कुप्पियाँ थीं। वह ईसा की मूर्ति के आगे झुक गया। जवाहरात से सुसज्जित उस पवित्र स्थान में बड़ी मोमबत्तियाँ जल उठीं। सुगंधियों का धुआँ गोलाकार उठता हुआ गुंबद की ऊँचाइयों तक जा पहुँचा। उसने प्रार्थना में अपना सिर झुकाया और कलफ लगे लबदोंवाले पादरी धीरे से वेदी से खिसक गए।

अचानक बाहर सड़क से भयानक हो-हल्ला अंदर आया। उसके बाद अपनी तलवारों और चमकदार इस्पात की ढालों से लैस सामंत अंदर दाखिल हुए। ''वह सपने देखनेवाला आखिर है कहाँ?'' वे चिल्लाए, ''भिखारियों का भेस बनाए वह राजा कहाँ है? वह लड़का जो हमारे राज के लिए शर्म का कारण है। हम उसे काट के रख देंगे, क्योंकि वह हम पर शासन करने लायक नहीं।''

किशोर राजा ने अपना सिर फिर से झुकाया और प्रार्थना की। वह प्रार्थना करके उठा और उसने उनकी तरफ उदास नजरों से देखा।

और देखो! रंगीन खिड़कियों से सूर्य की सुनहरी किरणें उसपर पड़ीं। उन किरणों ने उसके लिए जालीदार वस्त्र बुन दिए जो उसके लिए बनी राजसी पोशाक से भी सुंदर थे। ठूँठ डंडा खिल उठा। उसपर खिले कुमुदिनी के फूल मोतियों से भी सुंदर और सफेद थे और उनकी टहनियाँ चाँदी की थीं। सिर की कँटीली लता भी खिल उठी। उसपर आए गुलाब के फूल माणिक से भी सुंदर लाल थे और उनकी टहनियाँ सोने की थीं।

वह वहाँ अपने राजसी वस्त्रों में खड़ा था। तभी जवाहरात से सजी पवित्र वेदिका के द्वार अपने आप खुल गए। भाँति-भाँति की किरणें बिखेरनेवाली स्फटिक की प्रदर्शिका से एक भव्य रहस्यमय प्रकाश विकीर्णित होने लगा। वह वहाँ अपनी राजसी पोशाक में खड़ा था और सारा स्थान ईश्वर की महिमा से परिपूर्ण हो गया। ऐसा लगा कि संत भी अपने पवित्र स्थलों में हिल उठे थे। एक राजा की भव्य पोशाक में वह उनके सामने खड़ा था और वाद्य उसके लिए बज उठे। भेरियाँ बज उठीं और गानेवाले लड़कों ने गाना आरंभ कर दिया।

श्रद्धा और विस्मय से अभिभूत लोग अपने घुटनों के बल झुक गए। सामंतों ने अपनी तलवारें म्यान में रख लीं और उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। पादरी का चेहरा पीला पड़ गया था और उनके हाथ काँप रहे थे। ''मुझसे कहीं अधिक महान् ने आपकी ताजपोशी की है।'' वे बोले और उसके सामने आदर से झुक गए।

किशोर राजा उस ऊँचे मंच से नीचे उतरा। वह प्रजाजनों के बीच से होकर निकला, लेकिन किसी की हिम्मत उसके चेहरे की तरफ देखने की न हुई, क्योंकि उसका चेहरा किसी फरिश्ते के चेहरे जैसा था।

❑

राजकुमारी का जन्मदिन

आज राजकुमारी का जन्मदिन था। वह अभी बारह साल की ही थी। महल के बागों में सूरज की धूप चमक रही थी। हालाँकि वह सचमुच स्पेन की राजकुमारी थी, लेकिन उसका भी साल में एक ही जन्मदिन पड़ता था, बिलकुल गरीब बच्चों की तरह। इसलिए यह सारे देश के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था कि उसका यह दिन बहुत अच्छा गुजरे और यह निश्चय ही एक बहुत अच्छा दिन था। नलिनी के फूल अपनी लंबी डंडियों पर संतरियों की तरह सीधे खड़े थे। वे नीचे घास में उगे गुलाबों की तरफ उपेक्षा से देखकर कह रहे थे, ''सुंदरता में हम भी तुमसे कम नहीं।''

बैंगनी रंग की तितलियाँ अपने पंखों पर सुनहरा पराग लिये इधर-से-उधर उड़ रही थीं। वे बारी-बारी से हर फूल पर जातीं। नन्ही गिरगिटें दीवारों से निकल कर धूप सेंक रही थीं। धूप की गरमी से अनार दरककर फूट गए थे और वे अपने लाल रक्तिम हृदय दिखा रहे थे। यहाँ तक कि जालियों और तोरणपथ की मिट्टी में उगनेवाले पीले नीबुओं का रंग भी सूर्य का प्रकाश पाकर निखर आया था। मैग्नोलिया के पेड़ों ने भी अपने गोल हाथीदाँत के रंग के फूल खिलाकर हवा को सुगंध से भर दिया था।

छोटी राजकुमारी अपने साथियों के साथ छत पर इधर-से-उधर घूम रही थी। वह पत्थर के विशाल कलशों और काई लगी मूर्तियों के इर्द-गिर्द लुका-छिपी का खेल खेल रही थी। आम दिनों में उसे केवल अपने स्तर के बच्चों के साथ खेलने की ही अनुमति दी जाती थी। इसलिए उसे अकेले ही खेलना पड़ता था। पर उसका जन्मदिन इस नियम का अपवाद था। राजा ने आदेश दिया था कि वह चाहे तो अपने किसी भी हमउम्र दोस्त को आमंत्रित करके उसके साथ अपना मन बहला सकती है। इन छरहरे स्पेनिश बच्चों में एक विशेष प्रकार का लालित्य था। लड़कों ने बड़े परोंवाले हैट और छोटे लहराते लबादे पहन रखे थे। लड़कियाँ अपने लंबे कढ़ाईदार गाउन सँभाले और अपनी आँखों को सूरज की धूप से बचाने के लिए बड़े काले व रुपहले पंखें लिये घूम रही थीं।

राजकुमारी इन सबसे अधिक प्यारी और सुंदर दिख रही थी। उसने आज के फैशन के अनुरूप सबसे अच्छी पोशाक पहन रखी थी। उसका लिबास स्लेटी साटिन का था। उसकी स्कर्ट और बड़े-बड़े फुलाववाली आस्तीनें चाँदी के तिल्ले से कढ़ी हुई थीं। जब वह चलती तो उसके लिबास में से गुलाबों के आकार के सजावटवाले स्लीपर झाँकते। उसका बड़ा सा पंखा गुलाबी और मोती के रंग का था। उसके सुनहरे बाल उसके पीले चेहरे को चारों ओर से स्वर्ण प्रभामंडल की तरह घेरे हुए थे।

महल की एक खिड़की से उदास बैठा राजा उनको देख रहा था। उसके पीछे उसका भाई एरेगान का डॉन पेड्रो खड़ा था, जिससे वह घृणा करता था। उसके पास उसके धर्मगुरु गेनाडा के महान् धर्मरक्षक बैठे थे। वह राजकुमारी को देखकर और भी उदास हो रहा था, जब वह अपने मुकाबले खेलनेवालों के सामने बड़ी अदा से झुकती थी या फिर अपने पंखे की ओट करके अलकर्क की ड्यूक-पत्नी पर हँसती थी, जो हर समय उसके साथ रहती थी। राजा को राजकुमारी की माँ युवा रानी की याद आ गई। उसे ऐसा लगा कि वह कुछ अरसा पहले ही रांस के जिंदादिल देश से आई थी, लेकिन वह स्पेन के वैभवशाली राजमहल में आने के बाद कुम्हलाकर लुप्त हो गई। वह अपनी बच्ची को जन्म देने के छह महीने बाद ही चल बसी। इससे भी पहले कि वह बगीचे में दो बार तो बादाम को फलते देख लेती या फिर घास से भरे आँगन में खड़े पुराने अंजीर के पेड़ से दूसरे साल का फल तोड़ सकती। राजा उससे इतना अधिक प्यार करता था कि उसे रानी को कब्र में दफनाना भी गवारा न हुआ, क्योंकि कब्र उसे उसकी नजरों से छिपा लेती।

उसका शव-संलेपन एक हब्शी हकीम ने किया था, जिसकी जान इस सेवा के बदले बख्श दी गई थी। उसकी

कथित जादू-टोने की हरकतों की वजह से उसे मौत की सजा दी गई थी, ऐसा लोगों का कहना था। उनका यह भी कहना था कि उसका मृत शरीर अभी भी काले पत्थर के प्रार्थनागृह में उसकी टेपेस्ट्री की शैया पर रखा हुआ था। ठीक उसी तरह जैसे कि मठवासी संन्यासियों ने उसे आज से लगभग बारह साल पहले मार्च के उन हवाओं के दिनों में रखा था। हर महीने में एक दिन राजा एक काला लबादा पहनकर और हाथ में एक ढकी हुई लालटेन लेकर कक्ष में जाता था। वह उसके सामने घुटने टेककर बैठता और बार-बार 'मेरी रानी, मेरी रानी' पुकारता। कई बार तो वह स्पेन के रीति-रिवाजों का उल्लंघन करता हुआ, जो कि राजा को भी उसके दु:ख में अपनी सीमाओं में बाँधते हैं, उसका जवाहरात से सुसज्जित हाथ चूमते हुए सदा की नींद सोए ठंडे लेपन किए चेहरे को जगाने की कोशिश करता।

आज उसे लगा कि एक बार फिर उसे देख रहा है, जैसा कि उसने पहले-पहल उसे फाउंटेनब्लू के किले में देखा था। तब वह केवल पंद्रह साल का था और रानी तो और भी छोटी थी। उस अवसर पर उनकी विधिवत सगाई हो गई थी। यह रस्म पोप के धर्मदूत ने फ्रांस के राजा और उसके सभी दरबारियों की उपस्थिति में संपन्न कराई थी। और वह भूरे बालों की एक नन्ही सी लट और दो बच्चों जैसे होंठों की याद लिये लौटा था, जिन्होंने उसके बग्घी में सवार होते समय उसके हाथों का चुंबन लिया था। उसके बाद बहुत जल्दी ही दोनों देशों की सीमाओं के निकटवर्ती बर्गोस नाम के एक छोटे से कस्बे में उनका विवाह भी हो गया था। उसके बाद मैड्रिड में बड़ी धूमधाम से उन्होंने प्रवेश किया। ला अटोशा के गिरजाघर में रिवाज के मुताबिक संगीतमय महापूजा का आयोजन किया गया। उसके बाद संपूर्ण विधि-विधान के साथ धर्माधिकरण की दंडाज्ञा का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 300 विधर्मी पापियों को, जिनमें से अनेक अंग्रेज थे, राज्याधिकारी को जलाने के लिए सौंप दिया गया।

निश्चय ही वह उससे पागलपन की हद तक प्यार करता था। कइयों के विचार में यह देश के लिए अनर्थकारी था, क्योंकि उस समय स्पेन नई दुनिया पर अधिकार के लिए इंग्लैंड के साथ युद्ध में संलग्न था। वह रानी को अपनी नजरों से जरा देर के लिए भी दूर नहीं होने देता। उसके प्यार के चलते वह राज्य के अत्यंत गंभीर मामलों को भी भूल गया था। प्रेम के अपने इस आवेश में वह इतना अंधा हो गया था कि यह भी न देख पाया कि जिस रहस्यमय रोग से वह पीड़ित थी, वह उसे प्रसन्न करने की नीयत से आयोजित किए जानेवाले समारोहों के कारण बढ़ रहा था। उसकी मृत्यु होने पर कुछ समय के लिए तो वह अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठा था। अगर उसे नन्ही राजकुमारी को अपने भाई की कृपा पर छोड़ने का भय न होता तो वह निश्चय ही राजपाठ त्यागकर ग्रेनाडा के उस मठ में चला जाता, जिसका कि वह मानद मठाध्यक्ष था। उसके भाई की क्रूरता तो स्पेन में भी कुख्यात थी। कुछ लोगों का यह भी कहना था, उसी ने रानी को मारा था। जब रानी अरागान के किले में उसके यहाँ पधारी थी तो उसने उसे भेंट में जहरीले दस्ताने दिए थे।

रानी की मृत्यु के बाद उसने अपने सारे राज्य में तीन साल का राजकीय शोक मनाने का आदेश दिया था, लेकिन इन तीन सालों के बाद भी उसने अपने मंत्रियों को किसी तरह के नए रिश्ते की बात करने की अनुमति नहीं दी। जब स्वयं सम्राट् ने अपनी रूपवती भतीजी बोहीमिया की आर्चडचेस का रिश्ता उसके लिए भेजा तो राजा ने सम्राट् के राजदूत को यह कहकर विदा कर दिया कि स्पेन के राजा का विवाह पहले ही दु:ख के साथ हो चुका है। हालाँकि दु:ख एक बाँझ दुलहन की तरह होता है, लेकिन मैं उसे सुंदरता से भी अधिक प्रेम करता हूँ। इस जवाब की कीमत उसे नीदरलैंड के समृद्ध प्रांत गँवाकर अदा करनी पड़ी। वहाँ सम्राट् के उकसाने पर गिरजाघर में सुधार के दुराग्रहियों ने विद्रोह कर दिया था।

ऐसा लगता था कि राजकुमारी को छत पर खेलते देख उसका सारा वैवाहिक जीवन अपने समस्त आमोद-प्रमोद

और घोर दु:ख के साथ आज लौट आया था। राजकुमारी में रानी की सभी राजसी अदाएँ थीं। वह उसी की तरह अपना सिर एक ओर झटकती थी। उसका अपनी माँ जैसा ही गर्वीला गोल मुख था। वह उसी विशिष्ट फ्रांसीसी मुसकराहट के साथ खिड़कियों की तरफ देखती थी या फिर स्पेन के सामंतों के चूमने के लिए अपना नन्हा हाथ आगे बढ़ाती थी, लेकिन बच्चों की पैनी हँसी उसके कानों को अप्रिय लग रही थी और सूर्य की तेज निष्ठुर किरणें उसके दु:ख का उपहास कर रही थीं और कुछ मसालों की दुर्गंध—वही मसाले जो शव-संलेपन में इस्तेमाल किए जाते हैं, वातावरण को दूषित कर रही थी। या फिर यह उसकी अपनी कल्पना मात्र थी? उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया और जब बच्चों ने दोबारा उस तरफ देखा तो परदा खिंचा हुआ था और राजा चले गए थे।

राजकुमारी ने अपने कंधे उचकाकर निराशा की हलकी सी खीज प्रकट की। आखिर राजा को उसके जन्मदिन पर उसके साथ रहना चाहिए था। राजकाज के नीरस मामलों का महत्त्व ही क्या है। या फिर वह उस उदासी भरे प्रार्थनागृह में तो नहीं चले गए, जहाँ हर समय मोमबत्तियाँ जलती रहती हैं और जहाँ जाने की उसे कभी भी अनुमति नहीं दी जाती? इस समय जबकि धूप इतनी अच्छी खिली हुई है और हर कोई इतना खुश है, ऐसी हरकत कितनी मूर्खतापूर्ण है! इसके अलावा वह नकली साँड़ से लड़ाई भी नहीं देख पाएँगे, जिसकी शुरुआत की घोषणा करनेवाली तुरही भी बज रही है। इसके अलावा कठपुतली का तमाशा और दूसरे भी कितने ही दिलचस्प खेल होनेवाले हैं।

उसके चाचा और महाधर्मपरीक्षक कहीं अधिक समझदार थे। वे बाहर छत पर निकल आए थे। उन दोनों ने उसकी खूब तारीफ की। फिर उसने अपना सुंदर सिर अपनी खास अदा से एक ओर झुकाया। फिर डॉन पेड्रो का हाथ पकड़कर धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरती हुई बगीचे के अंत में बनाए गए बैंगनी रेशम के लंबे मंडप की तरफ चल पड़ी। बाकी के बच्चे अपने-अपने रुतबे के क्रम से उसके पीछे चल रहे थे। सबसे लंबे नामोंवाले इनमें सबसे आगे थे।

साँड़ से भिड़नेवालों के वेश में सजे हुए बहुत से सामंतों के बच्चे उसके स्वागत के लिए आगे आए। लगभग चौदह साल के अत्यंत रूपवान बालक टेएरा-नुएवा के अत्यंत रूपवान काउंट ने स्पेन के राजसी शिष्टाचार के अनुरूप अपना हैट सिर से उतारकर उसका अभिवादन किया। उसके बाद स्पेन के उच्चाधिकारी ने उसे वितान में बने ऊँचे मंच पर रखी सोने और हाथी दाँत की छोटी सी सुंदर कुरसी पर बैठाया। बच्चे चारों तरफ अपने पंखे डुलाते हुए बातें करने लगे। प्रवेशद्वार पर खड़े उच्च धर्मपरीक्षक और डॉन पेड्रो यह सब देखकर हँस रहे थे। सख्त नाक-नक्शे और रूखे स्वभाववाली कमेरा मेयोर की डचेज के झुर्रियों भरे चेहरे और सूखे होंठों पर भी मुसकराहट सी दिखाई पड़ रही थी।

साँड़ों की नकली लड़ाई वाकई बहुत शानदार रही। जब पर्मा के ड्यूक उसके पिता से मिलने आए थे और सचमुच की साँड़ से लड़ाई का खेल हुआ था, यह तो बच्चों को उससे भी बढ़कर लगी। खूबसूरत साज और काठियों से सजे कठघोड़ों पर सवार कुछ बच्चे अपने भड़कीले रिबनों से सुसज्जित चमकीले भाले लहरा रहे थे। दूसरे पैदल ही साँड़ के आगे अपने लाल लबादे लहरा रहे थे। जब साँड उनपर हमला करता तो वे धीरे से अखाड़े का घेरा फलाँग जाते। जहाँ तक साँड़ का सवाल था, वह तो असली साँड़ सा लग रहा था। हालाँकि उसे तीलियों पर मढ़ी लचीली खाल से सजाकर साँड़ बनाया गया था। कई बार तो वह अपनी पिछली दो टाँगों के बल पर खड़ा होकर सारे अखाड़े का चक्कर काटता, जबकि कोई असली साँड़ ऐसा करने का सपना भी नहीं देख सकता।

वह लड़ा भी बहुत ही शानदार तरीके से। बच्चे यह सब देखकर इतने रोमांचित हो गए कि वे अपनी बेंचों पर खड़े हो गए। वे अपने-अपने लेस से सजे रूमाल हवा में लहराते हुए उसी तरह ''वाह, वाह...शाबाश लड़ाको'', चिल्ला रहे थे, जैसे बड़े चिल्लाते हैं। आखिरकार लंबी लड़ाई के बाद, जिसमें बहुत से कठघोड़ों को सींग भोंककर साँड़ ने

नष्ट कर दिया था और उनके सवार अपने घोड़ों से उतरने को मजबूर हो गए थे, टिएरा नुएवा के किशोर काउंट ने साँड़ को घुटनों के बल गिरा दिया और फिर राजकुमारी की अनुमति पाकर जानवर की गरदन में अपनी लकड़ी की तलवार घुसा दी। उसने ऐसा जबरदस्त प्रहार किया था कि जानवर का सिर अलग हो गया। इससे मेड्रिड में फ्रांस के राजदूत के बेटे महोदय द लोराने का हँसता-खिलखिलाता चेहरा प्रकट हो गया।

इसके बाद तालियों की घड़घड़ाहट के साथ अखाड़ा खाली हुआ। मरे हुए कठघोड़ों को पूरे अदब-कायदे के साथ काली-सफेद वरदीवाले दो हब्शी छोकरे सेवकों ने हटाया। फिर थोड़े अंतराल के बाद, जिसमें एक फ्रांसीसी करतब दिखानेवाले ने तनी हुई रस्सी पर अपने करतब दिखाए, इस अवसर के लिए विशेष रूप से बनाए गए एक छोटे रंगमंच पर कुछ इतालवी कठपुतलियाँ प्रकट हुईं। उन्होंने सोफोनिशाबा की अर्धत्रासदी का मंचन किया। उनका प्रदर्शन इतना अच्छा था कि इसके अंत में राजकुमारी की आँखें आँसुओं से नम हो गईं। कुछ बच्चे तो सचमुच रोने लगे और उनको मिठाइयाँ खिलाकर दिलासा दिया गया। स्वयं महाधर्मपरीक्षक भी प्रदर्शन से प्रभावित होकर डॉन पेड्रो से बोले कि यह तो बरदाश्त से बाहर की बात है कि काठ की बनी और मोम तथा रंगों से रँगीं तारों के सहारे नचाई जानेवाली बेजान चीजें भी इतनी दु:खी हों और उनको भी ऐसा दुर्भाग्य झेलना पड़े।

फिर एक अफ्रीकी बाजीगर आया। वह अपने साथ लाल कपड़े से ढकी एक बड़ी सपाट टोकरी लाया था। उसने टोकरी अहाते के बीचोबीच रख दी। फिर वह अपनी पगड़ी से एक विचित्र सी बीन निकालकर बजाने लगा। जरा देर में उस कपड़े में हरकत होने लगी। बीन की आवाज तीखी होती गई और उसके साथ ही कपड़े में से दो हरे और सुनहरे रंग के साँप अपने फन उठाए हुए निकले। वे धीरे-धीरे ऊपर उठ रहे थे। वे बीन की धुन पर अपने सिर इधर-से-उधर हिलाते हुए डोल रहे थे। उनकी लपलपाती जीभों और उठे हुए फन देखकर बच्चे सहम गए। उनके चेहरों पर फिर से खुशी की चमक आ गई, जब जादूगर ने रेत में से एक छोटा सा संतरे का पेड़ उगा दिया। उसमें सुंदर सफेद फूल उग आए और असली फल के गुच्छे लग गए। उसने माक्यूइस द लास टोरेस की नन्ही बेटी का पंखा लेकर उसे नीली चिड़िया में बदल दिया। चिड़िया ने पूरे मंडप का एक चक्कर लगाया और सबको अपना मीठा गाना सुनाया। यह देखकर बच्चों की हैरानी का ठिकाना न रहा। नुएस्ट्रा सेनोरा डेल पिलर गिरजाघर से आए बच्चों का पवित्र नृत्य भी बहुत आकर्षक था। राजकुमारी ने इससे पहले कभी यह आकर्षक समारोह नहीं देखा था, जो हर साल मई के महीने में कुँआरी मरियम की ऊँची वेदी के सामने उनके सम्मान में होता था, लेकिन स्पेन के राजघराने का कोई भी सदस्य सारागोटा के महागिरजाघर में उस दिन के बाद कभी नहीं गया, जब एक पागल पादरी ने, जो कइयों के अनुमान के अनुसार इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ का वेतनभोगी था, एस्टूरिया के राजकुमार को एक रोटी के टुकड़े में जहर देने की कोशिश की थी। इसलिए उसने केवल 'हमारी माता मरियम का नृत्य' के नाम से प्रसिद्ध इस नाच के बारे में सुन रखा था। यह निश्चय ही देखने लायक था। लड़कों ने पुराने रिवाज के दरबारी फैशनवाले सफेद मखमल के कोट पहने हुए थे। उनकी विचित्र सी तिकोनी टोपियों पर चाँदी के तिल्ले का काम था और शुतुरमुर्ग के परों की कलगियाँ लगी हुई थीं। नृत्य के दौरान धूप में चमकती उनकी सफेद पोशाकें उनके साँवले चेहरों और लंबे काले बालों के कारण और भी आकर्षक हो जाती थीं। नृत्य के दौरान वे जिस गरिमा के साथ संचलन करते और अपना सिर झुकाते थे, उसने सबको बहुत प्रभावित किया। नृत्य समाप्त होने पर जब उन्होंने राजकुमारी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए अपनी बड़ी टोपियाँ उतारीं तो उसने उनके इस आदर-भाव को बहुत शिष्टता के साथ स्वीकार किया। उसने यह भी निश्चय कर लिया कि माता मरियम ने उसे जो आनंद का अवसर दिया है, उसके प्रतिदान में वह गिरजाघर में एक बड़ी सी मोमबत्ती जलाने के लिए भेजेगी।

उसके बाद मिस्रवासियों का एक दल, जैसा कि उन दिनों जिप्सियों को कहा जाता था, रंगभूमि में आया। वे एक

घेरे में पालथी मारकर बैठ गए और अपनी-अपनी सितारों पर राग बजाना आरंभ कर दिया। वे सुरों के साथ-साथ अपने सिर भी उनके अनुरूप हिलाते थे और बड़ी मद्धम आवाज में गुनगुनाते थे। जब उनकी नजर डॉन पोड्रो पर पड़ी तो कुछ ने उसकी तरफ गुस्से से घूरा तो कुछ डर के मारे सहम गए। कुछ ही सप्ताह पहले उनके दो कबीलेवालों को साविले के बाजार में जादू-टोना करने के आरोप में फाँसी पर लटका दिया गया था, लेकिन उनको छोटी राजकुमारी बहुत अच्छी लगी। वह पीछे की ओर टेक लगाए हुए अपनी नीली आँखों से जिस अदा से अपने पंखे को देख रही थी, उससे उनको लगा कि उस जैसी मासूम कभी किसी के साथ निर्दयता नहीं कर सकती।

इसलिए वे बहुत कोमलता से अपने राग बजाते रहे। उनके लंबे नाखून सितार के तारों को छेड़ रहे थे और वे अपने सिर इस तरह नीचे झुका रहे थे, मानो उनको नींद आ रही हो। अचानक उन्होंने ऐसा जोर का चीत्कार किया कि बच्चे चौंक गए और डॉन पेड्रो का हाथ अपने खंजर की गोमेद जड़ी मूठ पर चला गया। वे उछलकर खड़े हो गए थे और पागलों की तरह रंगभूमि के चक्कर लगाते हुए अपने मृदंग बजाते हुए, अपनी विचित्र भाषा में कोई प्रणय गीत गा रहे थे। फिर एक और संकेत के साथ वे सबके-सब जमीन पर औंधे लेट गए। वे वहाँ एकदम निश्चल पड़े रहे। उनके सितारों के हलके सुर ही उस शांति को भंग कर रहे थे। कई बार इसे दोहराने के बाद वे वहाँ से गायब हो गए। कुछ ही देर बाद वे फिर लौटे। इस बार वे अपने साथ जंजीर में बँधा एक भूरा झबरा भालू लेकर आए थे। उनके कंधे पर छोटे बंदर थे। भालू बड़ी गंभीरता के साथ सिर के बल खड़ा हो गया और झुर्रीदार बंदरों ने दो लड़कों के साथ मिलकर, जो उनके कलंदर थे, कई तरह के मजेदार करतब दिखाए। वे छोटी तलवारों के साथ लड़े, उन्होंने बंदूकें चलाईं और राजा के अंगरक्षकों की तरह संतरियों के समान परेड की। वाकई जिप्सी अपने प्रदर्शन में बहुत सफल रहे।

लेकिन उस सुबह के सारे मनोरंजन में छोटे बौने का नाच सबसे ज्यादा हँसाने वाला था। जब उसने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी टाँगों पर चलते हुए और अपने जिस्म से बहुत बड़े सिर को एक तरफ से दूसरी तरफ हिलाते हुए रंगभूमि में प्रवेश किया तो बच्चे खुशी के मारे चीख पड़े। स्वयं राजकुमारी भी इतना हँसी कि उसे याद दिलाना पड़ा कि हालाँकि राजघराने के शिष्टाचार के अनुरूप राजकुमारियों को अपने समकक्षों के सामने रोने के तो कई पूर्व उदाहरण हैं, लेकिन अपने से निचले स्तरवालों की उपस्थिति में इस तरह हँसने का एक भी पूर्व उदाहरण नहीं, लेकिन यह बौना तो बस लाजवाब ही था। हालाँकि स्पेन का राजदरबार भयानक आकृति के जीवों के प्रति दिलचस्पी दिखाने के लिए मशहूर था, लेकिन किसी ने भी इस तरह का छोटा विरूप प्राणी कभी नहीं देखा था। फिर यह तो उसका पहला प्रदर्शन था।

उसका पता एक दिन पहले ही लगा था। वह जंगल में बेतहाशा भाग रहा था, जब शिकार के लिए गए दो सामंतों ने उसे देखा। वे उस राजकुमारी को आश्चर्य में डालने के लिए अपने साथ ले आए। उसका गरीब बाप कोयला बनानेवाला था। वह इस तरह के कुरूप और निकम्मे बच्चे से छुटकारा पाकर खुश ही था। शायद उसके बारे में सबसे मनोरंजक बात यह थी कि उसे अपने टेढ़े-मेढ़े अंगों और भयंकर कुरूपता की तनिक भी जानकारी न थी। वह काफी खुश और जोशीला नजर आता था। जब बच्चे हँसते वह भी खुलकर उनकी तरह ही हँसता। वह इस तरह मुसकराता और सिर हिलाता, जैसे उनमें से एक हो। उसे जरा भी एहसास न था कि कुदरत ने अपने किसी मजाक के मूड में उसे दूसरों के लिए उपहास का पात्र बना डाला था।

राजकुमारी पर तो वह पूरी तरह मोहित हो गया था। वह उससे अपनी आँखें हटा ही नहीं पा रहा था। लगता था कि वह केवल उसी के लिए नाच रहा है। जब उसका प्रदर्शन समाप्त हुआ तो उसने पोप द्वारा राजा के दु:ख का उपचार करने के लिए मेड्रिड भेजे प्रसिद्ध इतालवी गायक को याद किया जिसके गायन के बाद राजदरबार की

संभ्रांत महिलाओं ने कैसे उसकी तरफ फूल फेंके थे। अंशत: मजाक के तौर पर, अंशत: केमेरिरा को चिढ़ाने के लिए उसने अपने बालों से सफेद गुलाब निकालकर बौने की तरफ फेंका। उसने सारे मामले को बहुत गंभीरता से लिया और गुलाब को अपने खुरदरे होंठों से लगाते हुए उसे सीने से लगा लिया। वह राजकुमारी के सामने एक घुटने के बल बैठ गया। उसकी बाँछें खिल गईं और आँखें खुशी से चमक उठीं।

इससे राजकुमारी की गंभीरता ऐसी लुप्त हुई कि वह बौने के रंगमंच से जाने के बाद बहुत देर तक हँसती रही। फिर उसने अपने चाचा की मार्फत कहला भेजा कि यह प्रदर्शन दोबारा होना चाहिए, लेकिन केमेरिरा ने कहा कि धूप बहुत तेज हो गई है और अब राजकुमारीजी को महल में पधारना चाहिए, जहाँ उनके लिए शानदार भोज तैयार हो चुका है। इसके साथ जन्मदिन का वह सुंदर केक भी है, जिस पर चीनी से उनका नाम अंकित किया गया है और ऊपर एक चाँदी का झंडा भी लगाया गया है। इसपर राजकुमारी अपनी पूरी गरिमा के साथ उठी और उसने घोषणा की कि छोटा बौना उसके दोपहर के आराम के बाद फिर से उसके लिए नृत्य करेगा। उसने टिएरा नोवा के किशोर काउंट को उसके शानदार रिसेप्शन के लिए धन्यवाद दिया और अपने महल की तरफ लौट चली। बच्चे जिस क्रम से आए थे, उसी क्रम से उसके पीछे चल पड़े।

जब छोटे बौने को यह पता चला कि उसे राजकुमारी के आदेश के अनुसार फिर से नृत्य करना है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह खुशी से पागल होकर सफेद गुलाब को बार-बार चूमता हुआ बगीचे में इधर-उधर दौड़ने लगा और अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए भोंड़े अंदाज में तरह-तरह की हरकतें करने लगा।

अपने सुंदर घर में उसके अनधिकार प्रवेश पर फूल बहुत नाराज हुए। जब उन्होंने उसे चहलकदमी के लिए बने रास्तों पर हवा में हाथ उठाए अजीब हरकतें करते हुए दौड़ते देखा तो वे अपनी भावनाएँ छिपा न सके।

''वह इतना कुरूप है कि उसे ऐसे किसी स्थान पर खेलने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए, जहाँ हम लोग हों।'' नलिनी का फूल चिल्लाया।

''उसे अफीम पीकर हजार सालों के लिए सो जाना चाहिए।'' लाल कुमुदिनी ने गुस्से में कहा।

''वह कितना डरावना है'', कैक्टस बोला, ''वह टेढ़ा-मेढ़ा और गोल-मटोल सा है। उसका सिर उसकी टाँगों के अनुपात में कितना बड़ा है। मुझे तो उसे देखकर झुरझुरी सी हो रही है। अगर वह मेरे नजदीक आ जाए तो उसे अपने काँटों से बींध डालूँगा।''

''और उसे मेरा सबसे अच्छा फूल मिला है'', सफेद गुलाब का पौधा बोला, ''यह तो मैंने आज सुबह ही राजकुमारी को उसके जन्मदिन के उपहारस्वरूप दिया था। उसने यह उससे चुरा लिया है।'' इसके बाद वह जोर-जोर से उसे ''चोर, चोर'', पुकारने लगा।

यहाँ तक कि जिरेनियम का लाल फूलोंवाला वृक्ष भी, जिसे आम तौर पर अपनी तारीफ करने की आदत नहीं थी और जिसके खुद के बहुत से गरीब रिश्तेदार थे, उसे देखकर मुँह बिचकाए बिना न रह सका। नीलपुष्पों ने भी दबी आवाज में कहा कि हालाँकि वह अत्यधिक साधारण था, लेकिन इसमें उसका क्या दोष था। उन्होंने उचित ही कहा कि किसी पर इसलिए टिप्पणी नहीं करनी चाहिए कि उसका उपचार असाध्य है। कुछ नीलपुष्पों ने यह भी कहा कि हालाँकि छोटे बौने की कुरूपता प्रदर्शनीय है, फिर भी अच्छा होता कि वह इस तरह खुशी से उछलने और मूर्खतापूर्ण हरकतें करने के बजाय गंभीर या उदास दिखाई देता।

महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्ववाली धूपघड़ी भी, जिसने किसी जमाने में सम्राट् चार्ल्स पंचम जैसी महान् हस्ती को भी समय बताया था, छोटे बौने का नाकनक्शा देखकर ऐसी हक्की-बक्की रह गई अपनी छाया कि लंबी उँगलियों से पूरे दो मिनट तक समय बताना ही भूल गई। उसने जंगले पर बैठकर धूप सेंकते हुए बड़े सफेद मोर से कहा कि हर कोई

जानता ही है कि राजाओं के बच्चे राजाओं के बच्चे होते हैं और कोयला बनानेवालों के बच्चे कोयला बनानेवालों के बच्चे ही होते हैं। ऐसा नहीं है, कहना तो मूर्खता ही होगी। उससे पूरी तरह सहमत मोर जोर से चीखा, ''बिलकुल, बिलकुल।'' उसकी चीख इतनी तेज थी कि ठंडे फव्वारे के तल में रहनेवाली सोन मछलियाँ भी पानी से बाहर अपने सिर निकालकर पत्थर की विशाल परिधि से पूछ बैठीं कि आखिर बात क्या है?

लेकिन चिड़ियों को वह अच्छा लगा। उन्होंने उसे कई बार जंगल में लहलहाती-बलखाती पत्तियों के साथ नाचते हुए देखा था। या फिर किसी ओक के पेड़ की खोखल में लेटकर गिलहरियों के साथ काष्ठफल खाते देखा था। वे उसकी कुरूपता का बुरा नहीं मानती थीं। संतरे के बाग में इतना मीठा गानेवाली बुलबुल भी, जिसका गाना सुनने के लिए चंद्रमा भी कई बार नीचे झुक आता था, देखने में सुंदर तो न थी। इसके अलावा वह उनके प्रति बहुत दयाभाव भी रखता था। कड़े जाड़े में, जब पेड़ों पर फल नहीं रहते थे, जब धरती लोहे जैसी कठोर हो जाती थी, जब भेड़िए खाने की तलाश में बस्तियों के छोर तक आ जाते थे, तब भी वह कभी उनको भूला नहीं। वह हमेशा अपनी काली रोटी में से छोटे टुकड़े उन्हें देता था और अपने मामूली नाश्ते को भी उनके साथ बाँटता था।

इसलिए वे उसके चारों तरफ मँडराती रहीं। वे उड़ती हुई अपने परों से उसके गालों को छू लेती थीं और आपस में चहचहाती थीं। छोटा बौना इससे इतना खुश हुआ कि उसने उनको अपना सुंदर सफेद गुलाब दिखाया और बोला कि खुद राजकुमारी ने मुझे यह दिया है, क्योंकि वह मुझसे प्यार करती है।

उसके मुँह से निकला एक भी शब्द चिड़ियों की समझ में नहीं आया, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने अपने सिर एक तरफ इस तरह झुकाए जैसे सबकुछ समझ रही हों, और ऐसा करना कुछ समझने के बजाय कहीं अधिक आसान भी था।

गिरगिटों ने भी उसे बहुत पसंद किया। जब वह नाचने-कूदने के बाद थककर आराम करने के लिए घास पर लेट गया तो वे उसके चारों तरफ घूमकर उसका दिल बहलाने लगीं। ''हर कोई गिरगिट की तरह सुंदर तो नहीं हो सकता न'', वे बोलीं, ''ऐसी उम्मीद रखना तो बेकार ही है। हालाँकि ऐसा कहना अटपटा है, लेकिन वह इतना ज्यादा कुरूप भी नहीं, बशर्ते कोई अपनी आँखें मूँद ले और उसकी तरफ ना ही देखे।'' इन गिरगिटों का स्वभाव अत्यंत दार्शनिक था। जब कोई और काम न होता या जब इतनी तेज बारिश होती कि बाहर जाना संभव न होता तो वे घंटों विचारमग्न रहतीं।

फूल उनके और चिड़ियों के इस व्यवहार से बहुत नाराज हो गए। ''इससे तो यही पता चलता है कि उड़ने और इस तरह इधर-उधर दौड़ने का कितना दुष्प्रभाव होता है। सभी अच्छे संस्कारोंवाले लोग हमेशा हमारी तरह एक ही जगह पर बने रहते हैं। किसी ने हमको कभी चहलकदमी के रास्तों पर उछल-कूद करते हुए या पतंगों पर झपटते हुए नहीं देखा। जब हमें कुछ हवा बदलने की इच्छा होती है तो हम माली को बुला लेते हैं, वह हमें दूसरी क्यारियों में ले जाता है।

यह गरिमामय है। ऐसा ही होना भी चाहिए, लेकिन चिड़ियों या गिरगिटों को एक स्थान पर शांति से रहने की तमीज नहीं। चिड़ियों का तो कोई स्थायी पता तक नहीं होता। वे तो जिप्सियों की तरह घुमंतू ही होती हैं। इसलिए उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने अपनी नाक हवा में ऊपर उठा ली। वे काफी गुस्से में लग रहे थे। जब छोटा बौना घास से उठकर महल की तरफ चल दिया तो वे बहुत खुश हुए।

''उसकी बाकी जिंदगी तक उसे अंदर ही रखा जाना चाहिए'', वे बोले, ''जरा उसके कूबड़ और टेढी-मेड़ी टाँगों को तो देखो।'' वे आपस में गपशप करने लगे।

लेकिन छोटे बौने को इस बारे में कुछ भी पता ना था। उसे चिड़ियाँ और गिरगिटें बहुत अच्छी लगी थीं। फूल

राजकुमारी के अलावा दुनिया की सबसे सुंदर चीजों में से थे। और राजकुमारी ने उसे सुंदर सफेद गुलाब दिया था, क्योंकि वह उससे प्यार करती थी। आह, उसकी राजकुमारी के साथ ही जाने की कितनी इच्छा थी! वह उसे अपने दाहिने रखती, उसपर मुसकराती। वह कभी उसका साथ नहीं छोड़ता और उसके साथ खेलता। वह उसे हर तरह के मजेदार करतब सिखाता। हालाँकि वह इससे पहले कभी किसी महल में नहीं गया, लेकिन वह और बहुत सी मजेदार बातें जानता था।

वह जलबेंत के ऐसे पिंजरे बना सकता था, जिसमें बैठकर टिड्डे गाना गा सकें। वह बाँस की बाँसुरियाँ बना सकता था, जिनका संगीत रसिकजन सुन सकें। वह हर चिड़िया का चहचहाना पहचानता था। वह फुनगी पर बैठी तिलियर को या झील से बगुले को पुकार सकता था। वह हर जानवर के पैरों के निशान पहचानता था। वह खरगोश के हलके कदमों के निशानों को और कुचली हुई पत्तियों से भालू के पदचिह्नों को पहचान सकता था। उसे सभी जंगली नृत्य आते थे। वह शरद का लाल वस्त्रोंवाला उन्मत्त नृत्य जानता था। वह फसल पर नीले सैंडल पहनकर किए जानेवाला धीमा नृत्य जानता था। वह श्वेत पुष्पमाला के साथ जाड़े का नृत्य और वसंत में उपवनों में किया जानेवाला कलिका नृत्य भी जानता था। वह जानता था कि जंगली कबूतर अपना घोंसला कहाँ बनाते हैं। एक बार जब किसी बहेलिए ने कबूतर-कबूतरी को जाल में फँसा लिया तो उसने उनके बच्चों को खुद पालकर बड़ा किया और उनके लिए एक ठूँठ देवदार के खोखल में छोटा सा दड़बा भी बना दिया। वे बहुत पालतू हो गए थे और हर सुबह उसके हाथों से दाना चुगते थे। वह उन्हें पसंद करेगी। लंबी घास में फुदक-फुदककर दौड़नेवाले खरगोश, फौलादी रंग के पंखों और काली चोंचवाले नीलकंठ, अपने आपको कँटीले गोले में बदल देनेवाले साही और अपने सिर डुलाते, नर्म पत्तियाँ चबाते हुए धीमी चाल से चलनेवाले सयाने कछुए। इन सबको भी वह जरूर पसंद करेगी।

हाँ, उसे जरूर उसके साथ खेलने के लिए जंगल में आना चाहिए। वह उसे अपना छोटा बिस्तर दे देगा और खुद सुबह होने तक खिड़की से झाँकता हुआ पहरा देगा, ताकि अरना भैंसा उसे चोट न पहुँचाए और भेड़िए झोंपड़ी के पास न खिसक आएँ। सुबह होने पर वह कपाट पर दस्तक देकर उसे जगाएगा। फिर वे दोनों बाहर जाकर दिनभर एक साथ नाचेंगे। जंगल में जरा भी अकेलापन महसूस नहीं होता। कभी-कभी कोई पादरी भी अपने सफेद खच्चर पर सवार अपनी रंगीन किताब से कुछ पढ़ता हुआ वहाँ से निकलता है। कई बार बाज से शिकार करनेवाले हरी मखमल की टोपियाँ और हिरन की खाल की जर्किन पहने वहाँ से निकलते हैं। मुँह पर टोपियाँ पहनाए बाज उनकी कलाई पर होते हैं। अंगूर की फसल के समय यहाँ अंगूर के व्यापारी आते हैं। सिरपेचे की चमकदार लताओं से उलझकर उनके हाथ-पैर बैंगनी हो जाते हैं। वे शराब टपकाती मशकें लिये होते हैं। कोयला बनानेवाले रातों को बड़ी अँगीठियों के पास बैठकर लकड़ी के लट्ठों को धीमी आग में सुलगकर कोयला बनते देखते रहते हैं। वे अंगारों पर चेस्टनट भूनते रहते हैं। डाकू अपनी गुफाओं से निकलकर आते हैं और उनके साथ मिलकर आमोद मनाते हैं। एक बार तो उसने टोलेडो जानेवाली लंबी धूल भरी सड़क से होकर जानेवाला एक सुंदर जलूस भी उधर से जाते देखा था।

सुनहरे क्रॉसवाले संत वहाँ से अपने चमकीले बैनर लिये मीठे स्वरों में गाते हुए निकलते हैं। उसने एक बार वहाँ से रुपहले कवच पहने बरछे और तोड़ेदार बंदूकें लिये सिपाही भी जाते देखे। उनके बीच में विचित्र से पीले कपड़े पहने, अपने हाथों में जलती मोमबत्तियाँ लिये, तीन आदमी नंगे पाँव चल रहे थे। निश्चय ही जंगल में देखने लायक बहुत कुछ है। फिर जब वह थक जाएगी तो वह उसके लिए ढेर सारी नर्म हरियाली ढूँढ़ लेगा। या फिर उसे अपनी बाँहों में उठा लेगा, क्योंकि वह बहुत मजबूत है, हालाँकि वह जानता है कि लंबा नहीं है।

वह उसके लिए शिववल्ली की लाल बेरियों की माला बनाएगा। वह अपनी पोशाक के साथ जो सफेद बेरी पहने

हुए है, ये उसी की तरह सुंदर होंगी। जब वह उनसे तंग आ जाएगी तो उनको फेंक सकती है। वह उसके लिए और बना देगा। वह उसके सुनहरे बालों में सितारों की तरह सजाने के लिए बाजफल और ओस में भीगे पवनपुष्प लाएगा।

लेकिन वह है कहाँ? उसने सफेद गुलाब से पूछा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। सारा महल सोया हुआ सा लग रहा था। जहाँ पल्ले बंद नहीं किए गए थे, वहाँ भी धूप को अंदर आने से रोकने के लिए खिड़कियों पर भारी परदे खींच दिए गए थे। वह चारों तरफ किसी ऐसी जगह ढूँढ़ने के लिए घूमने लगा जहाँ से अंदर जा सके। अंत में उसे एक छोटा निजी दरवाजा खुला हुआ मिल गया। वह वहाँ से अंदर आ गया। उसने देखा कि वह एक बड़े और सुंदर हॉल में है। उसे लगा कि यह तो जंगल से भी अधिक सुंदर है। यहाँ चारों तरफ सुनहरी सजावट थी और फर्श भी रंगीन पत्थरों का था, जो किसी ज्यामितीय आकार में एक-दूसरे से जोड़े गए थे, लेकिन छोटी राजकुमारी वहाँ नहीं थी। सिर्फ कुछ आकर्षक सफेद मूर्तियाँ थीं। जैस्पर की चौकियों से वे अपनी सूनी आँखों और मुसकराते होंठों से उसकी तरफ देख रही थीं।

हॉल के अंत में सूरज और सितारोंवाली कढ़ाई से सजा काली मखमल का एक परदा लगा हुआ था। ये प्रतीक राजा को बहुत प्रिय थे और काला उसका मनपसंद रंग था। शायद वह इसके पीछे छिपी हुई थी। वह हर हाल में कोशिश करेगा।

उसने दबे पाँव वहाँ तक जाकर परदा एक ओर हटा दिया। वहाँ सिर्फ एक और कमरा था। पहले से भी सुंदर कमरा। दीवारें हरी टेपेस्ट्री से सजी थीं, जिन पर शिकार के दृश्योंवाली सुई-धागे की कढ़ाई थी। यह किसी कलाकार की कलाकृति थी, जिसने इसकी परिकल्पना और इसे तैयार करने में सात साल लगाए थे। यह कभी जीन लॉ फाउ, जैसा कि उस दीवाने राजा को पुकारते थे, का निजी कक्ष होता था। वह शिकार का इतना शौकीन था कि उसे अपने कद्दावर घोड़े पर सवार होकर किसी हिरन पर झपटते शिकारी कुत्तों के साथ अपने शिकार का शंखनाद करके उस भागते जानवर पर खंजर से वार करते दिखाया गया था। यह अब मंत्रणाकक्ष था। कमरे के केंद्र में रखी मेज पर मंत्रियों के लाल पत्रधन रखे थे। इन पर स्पेन की ट्यूलिप की सुनहरी मुहरें और हैप्सबर्ग वंश का राजचिह्न लगा था।

छोटे बौने ने हैरानी से चारों ओर देखा। आगे बढ़ने में उसे थोड़ा डर लग रहा था। वहाँ वनाली में दौड़ते घोड़े देखकर, जिनकी टपों से जरा भी आवाज नहीं हो रही थी, उसे उन भूतों की याद आ गई, जिनके बारे में उसने कोयला बनानेवालों से सुना था। वे जंगल में रात को घूमते थे। अगर उनको कोई आदमी मिल जाए तो उसे हिरनी में बदल देते और फिर शिकार करने के लिए उसका पीछा करते, लेकिन फिर उसे सुंदर राजकुमारी की याद आ गई, जिसने उसमें साहस का संचार कर दिया। वह उसे अकेले में ही खोजकर बताना चाहता था कि मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ। शायद वह इससे आगेवाले कमरे में थी।

वह नरम कालीनों पर दौड़कर आगे बढ़ा और दरवाजा खोल दिया। ना, वह तो यहाँ भी नहीं थी। कमरा बिलकुल खाली था।

यह दरबार हॉल था, जहाँ विदेशी राजदूतों का स्वागत होता था, लेकिन अब काफी अरसे से किसी राजदूत को राजा ने मिलने का अवसर नहीं दिया था। बहुत पहले कभी यहीं इंग्लैंड का राजदूत सम्राट् के सबसे बड़े बेटे से अपनी महारानी की शादी का प्रबंध करने आया था। वहाँ सोने के कामवाले चमड़े के परदे लटके हुए थे और सोने का एक दीपदान काली सफेद छत से लटक रहा था, जिसमें तीन सौ मोमबत्तियाँ जल रही थीं। सोने की जरी के एक विशाल छत्र के नीचे, जिस पर मोतियों से शेर और किले के मीनार कढ़े हुए थे, सिंहासन रखा था। वह चाँदी और

मोतियों की झालरवाली भारी काली मखमल से मढ़ा था। सिंहासन की दूसरी सीढ़ी पर चाँदी की जरीवाले कपड़े से मजी गद्दीवाली राजकुमारी के लिए घुटनों के बल बैठनेवाली चौकी रखी थी। छत्र की सीमा के बाहर पोप के धर्मदूत की कुरसी रखी थी। सार्वजनिक समारोहों के दौरान केवल उसे ही राजा की उपस्थिति में बैठने की अनुमति थी। उसके सामने रखी एक बैंगनी चौकी पर उसकी लाल फुँदनोंवाली लंबी टोपी रखी हुई थी। सिंहासन के सामनेवाली दीवार पर शिकारी वेश में चार्ल्स पंचम की आदमकद तसवीर लगी थी। उनके साथ एक बहुत बड़ा शिकारी कुत्ता था। दूसरी दीवार के मध्य में फिलिप्स दोयम की तसवीर लगी थी, जिसमें वह नीदरलैंड का आदर-सम्मान स्वीकार कर रहे थे। खिड़कियों के बीच आबनूस की एक पेटी रखी थी, जिस पर हाथी दाँत की पच्चीकारी थी। इस पर हाल्बीन के मृत्यु-नृत्य की नक्काशी थी, जो कहा जाता था कि प्रसिद्ध कलाकार के हाथों से की गई थी।

लेकिन छोटे बौने ने इस सारी भव्यता की कोई परवा नहीं की। वह छत्र में जड़े सारे मोतियों के बदले भी अपना गुलाब न देता। न ही पूरे सिंहासन के बदले अपने गुलाब की एक सफेद पंखड़ी देता। वह तो मंडप में वापस जाने से पहले राजकुमारी को देखना चाहता था, ताकि उससे कह सके कि जब मेरा नृत्य समाप्त हो जाए तो तुम मेरे साथ चली आना। यहाँ महल में तो हवा बंद और गुम सी थी, लेकिन जंगल में हवा खुली और तेज बहती थी। वहाँ सूर्य की किरणें अपने सुनहरे हाथों से कँपकँपाती पत्तियों को हटाती थीं। जंगल में फूल भी थे। शायद यहाँ के बाग जैसे सुंदर नहीं, लेकिन इनसे कहीं अच्छी सुगंधवाले। वहाँ वसंत के आरंभ में संबुल थे, जो ठंडी घाटी में और घास के टीलों पर अपनी बैंगनी छवि में लहराते थे। वसंती गुलाब थे, जो ओक वृक्षों के झुरमुटों में उनकी जड़ों के आस-पास खिलते थे। वहाँ श्वेत अर्कपुष्प थे, चटक नीलपुष्प थे और कई प्रकार के इंद्रधनुषी व सुनहरे फूल थे। वहाँ बादामों पर स्लेटी रंग के बौर थे और घंटीनुमा फाक्सग्लो फूल थे, जो अपने पराग पर मँडरानेवाली मधुमक्खियों के भार से झड़ जाते थे।

चेस्टनट की अपनी सितारों जैसी फुनगियाँ थीं और वनसंजली की अपनी पीली चंद्रमाओं जैसी आभा थी। अगर वह उसे ढूँढ़ पाया तो वह जरूर आएगी। जंगल की सुंदरता की खातिर जरूर आएगी और मैं उसकी खुशी की खातिर दिन भर नाचूँगा। यह सोचकर उसकी आँखों में खुशी की चमक आ गई और उसने अगले कमरे में प्रवेश किया।

अब तक के सभी कमरों में यह सबसे चमकदार और सुंदर था। दीवारें रेशम पर गुलाबी फूलों और बेलबूटों की कढ़ाई से सजी हुई थीं। उनपर चिड़ियों के प्रारूप के साथ चाँदी के फूल कढ़े थे। चाँदी का भारी फर्नीचर था, जिसमें फूलों के तोरण थे। अँगीठी के सामने दो बड़े परदे थे, जिन पर तोते और मोर काढ़े गए थे। हरे रंग के सुलेमानी पत्थर का फर्श दूर तक जाता दिखाई देता था। यहाँ वह अकेला न था। उसने देखा कि कमरे के आखिरी छोर पर कोई छोटी आकृतिवाला उसे देख रहा है। उसका दिल काँप गया। उसके होंठों से खुशी की एक किलकारी निकली और वह सूरज की रोशनी में आ गया। उसके साथ ही वह आकृति भी वहाँ आ गई और अब वह उसे साफ-साफ दिखाई दी।

राजकुमारी! नहीं यह तो कोई डरावनी आकृति थी। ऐसी कुरूप शक्ल-सूरत तो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसका चेहरा-मोहरा और शरीर आम लोगों जैसा न था। वह कुबड़ा और टेढ़ी-मेढ़ी टाँगोंवाला था। उसका बहुत बड़ा गोल-मटोल इधर-उधर लुढ़कनेवाला सिर था और काले बालों के अयाल थे। छोटे बौने ने उसे देखकर मुँह बिचकाया तो जवाब में उस डरावनी और कुरूप आकृति ने भी मुँह बिचकाया। बौना हँसा तो वह भी उसके साथ हँसा। जिस तरह बौने ने अपने हाथ अपनी बगलों में रखे थे, उसने भी वैसा ही किया हुआ था। उसने उसका मजाक उड़ाने के लिए झुककर अभिवादन किया तो उस भयानक जीव ने भी वैसा ही किया। वह उसकी तरफ बढ़ा तो वह

भी उसके पास आ गया। वह जो कुछ करता था, यह कुरूप आकृति हूबहू वैसा ही करती थी। जब बौना रुकता तो वह भी रुक जाता। उसने खुशी से चिल्लाकर अपना हाथ उस आकृति की तरफ बढ़ाया। उसने अपना हाथ छुआ तो आकृति ने भी अपना हाथ छुआ।

वह डर के मारे सहम गया। उसने अपना हाथ उस तरफ बढ़ाया तो डरावनी आकृति ने भी तुरंत वैसा ही किया। वह उसे छूने के लिए और आगे बढ़ा तो किसी सख्त और चिकनी चीज ने उसे रोक दिया। अब उस भयानक आकृति का चेहरा बौने के चेहरे के बहुत करीब था। वह डर से सहमा सा लग रहा था। उसने अपनी आँखों पर से अपने बाल हटाए तो आकृति ने फौरन उसकी नकल की। उसने उसपर चोट की तो उसने भी जवाब में हर चोट का वैसा ही जवाब दिया। उसने नफरत से उसकी तरफ देखा तो आकृति ने भी उसी तरह बुरा सा मुँह बनाया। वह पीछे हटा, आकृति भी पीछे हट गई।

यह क्या है? उसने जरा देर सोचा। उसने बाकी कमरे पर एक नजर डाली। बड़ी हैरानी की बात थी, उस साफ पानी की सी दीवार में कमरे की हर चीज की नकल थी। हाँ, हर तसवीर की, काउच की प्रतिकृति थी। दरवाजे के पास जो हिरन का बच्चा था, उसका जुड़वाँ भाई वहाँ मौजूद था। सूरज की रोशनी में वीनस की जो मूर्ति थी, इस दीवार में भी वैसी ही सुंदर मूर्ति उसी तरह बाँहें फैलाए खड़ी थी।

क्या यह प्रतिध्वनि थी? उसने एक बार घाटी में जोर की आवाज दी थी तो उसने उसी तरह एक-एक शब्द दोहरा दिया था। क्या वह दृष्टि की भी इसी तरह नकल कर सकती है, जैसी कि आवाज की? क्या वह असली दुनिया के हूबहू एक नकली दुनिया बना सकती है? क्या चीजों की छाया में रंगीन हो सकती है और हिलडुल सकती है? क्या ऐसा हो सकता है कि...?

उसने फिर से शुरू किया। उसने अपनी छाती से सुंदर सफेद गुलाब हटाया और घूमकर उसे चूम लिया। उस भयानक और कुरूप शक्ल के पास भी अपना एक गुलाब था, जिसकी एक-एक पंखड़ी उसके गुलाब जैसी ही थी। उसने भी उसी की तरह गुलाब को चूमकर डरावनी हरकत करते हुए उसे छाती से लगा लिया।

जब उसे सच्चाई समझ में आई तो बौने ने हताशा में एक जोर की चीख मारी। वह फर्श पर गिरकर सिसकने लगा। तो यह वह खुद था, जो कुबड़ा, डरावना और कुरूप नाक-नक्शेवाला था। विकृत अंगोंवाला, जिसे देखकर नफरत हो। वह खुद ही डरावनी शक्लवाला था और सब बच्चे उसी पर हँस रहे थे। और छोटी राजकुमारी, जिसके बारे में वह सोचता था कि उसे प्यार करती है, वह भी उसकी कुरूपता का मजाक उड़ा रही थी और उसके विकृत अंगों पर हँस रही थी। उसने उसे जंगल में क्यों नहीं रहने दिया। वहाँ तो उसे यह बतानेवाला कोई आईना न था कि वह कितना घृणास्पद है? उसके पिता ने उसे शर्म के हाथों बेचने के बजाय मार क्यों नहीं डाला? उसके गालों पर गरम आँसू बह रहे थे और उसने सफेद गुलाब को तोड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

उसकी प्रतिकृत के दानव ने भी वैसा ही किया और फूल की पँखुरियाँ हवा में उछाल दीं। वह जमीन पर औंधा लेट गया और उसने बौने की तरफ दर्द भरे चेहरे के साथ देखा। बौना वहाँ से दूर खिसक गया, ताकि उसे न देख सके। उसने अपनी आँखें अपने हाथों से ढक लीं। वह किसी घायल की तरह रेंगकर छाया में आ गया और वहाँ सुबकता हुआ पड़ा रहा। उसी समय राजकुमारी अपने साथियों के साथ वहाँ आई। जब उन्होंने बौने को जमीन पर पड़ा हुआ अपने दोनों हाथों से फर्श को पीटता पाया तो वे सब उसके चारों तरफ खड़े होकर उसे देखने लगे। वे सब मारे खुशी के बहुत जोर-जोर से हँसने लगे।

''उसका नाच बड़ा मजेदार था'', राजकुमारी बोली, ''लेकिन उसका यह अभिनय तो उससे भी ज्यादा मनोरंजक है। वह तो कठपुतलियों जैसा ही मजेदार है। बेशक उनकी तरह बहुत स्वाभाविक नहीं।'' उसने अपना पंखा डुलाया

और हँसी।
लेकिन छोटे बौने ने उनकी तरफ नहीं देखा। उसकी सिसकियाँ धीमी होती गईं। अचानक वह अजीब तरह से हाँफा। उसने अपनी पसलियों को पकड़ा और फिर दोबारा फर्श पर गिर गया। अब वह बिलकुल हिलडुल नहीं रहा था।
''इसका जवाब नहीं'', राजकुमारी जरा रुककर बोली, ''लेकिन अब तुम्हें मेरे लिए नाचना होगा।''
''हाँ, हाँ'', सब बच्चे चिल्ला पड़े, ''तुम उठो और नाचो, क्योंकि तुम तो जंगली वनमानुष से भी ज्यादा सयाने हो और उससे कहीं ज्यादा हास्यास्पद भी।'' लेकिन छोटे बौने ने कोई जवाब नहीं दिया।
राजकुमारी ने अपना पैर पटका। फिर उसने बाहर छत पर महाप्रतिहार के साथ टहलते हुए मैक्सिको से आए कुछ संदेश पढ़ते अपने चाचा को आवाज दी। ''मेरा छोटा बौना रूठ गया है। आप उसे उठाकर कहें कि मेरे लिए नाचे।''
वे एक-दूसरे को देखकर मुसकराए। फिर डॉन पेड्रो ने नीचे झुककर बौने के गाल पर अपने कढ़ाईवाले दस्ताने से एक थप्पड़ मारा। ''तुम नाचोगे, निकृष्ट दानव, तुम्हें नाचना होगा। स्पेन की राजकुमारी और उसके साथी मनोरंजन चाहते हैं।''
लेकिन छोटा बौना अपनी जगह से जरा भी नहीं हिला।
''कोड़े लगानेवाले को बुलाया जाए।'' डान पेड्रो ने कहा और वह वापस छत पर चला गया, लेकिन महाप्रतिहार गंभीर हो गया। उसने छोटे बौने के पास झुककर अपना हाथ उसके दिल पर रखा। कुछ देर के बाद वह उठा और उसने अपने कंधे उचकाए। वह राजकुमारी के सामने अदब से थोड़ा झुककर बोला, ''मेरी प्यारी राजकुमारीजी, आपका छोटा बौना अब कभी नहीं नाचेगा।''
यह तो अफसोस की बात है। वह इतना अधिक कुरूप है कि शायद राजा भी उसे देखकर मुसकरा देते।
''वह फिर कभी क्यों नहीं नाचेगा?'' राजकुमारी ने हँसते हुए पूछा।
''क्योंकि उसका दिल टूट गया है।'' महाप्रतिहार ने जवाब दिया।
इस पर राजकुमारी ने मुँह बिचकाया और उसके सुंदर पतले होंठ नफरत से थोड़े सिकुड़ गए। ''आइंदा मेरे साथ खेलने के लिए सिर्फ उनको ही बुलाना, जिनके दिल न हों।'' वह बोली और भागती हुई बगीचे की तरफ चली गई।

❑

मछुआरा और उसकी आत्मा

हर सुबह समुद्र में जाकर वह युवा मछुआरा अपना जाल पानी में फेंकता था। जब हवाएँ तट से समुद्र की ओर बहतीं तो उसके हाथ कुछ न लगता, या बहुत कम लगता। क्योंकि तब ये तीखी और काले पंखोंवाली हवाएँ होतीं, तब प्रचंड लहरें उनसे मिलने के लिए समुद्र से उठतीं, लेकिन जब हवाएँ तट की ओर बहतीं तो मछलियाँ समुद्र में से ऊपर आकर उसके जाल के डोरों में फँस जातीं। वह उनको मंडी में ले जाकर बेचता।

हर शाम वह समुद्र से बाहर आता। एक दिन उसका जाल इतना भारी था कि उसे नाव खींचने में बहुत जोर लगाना पड़ रहा था। वह हँसकर बोला, ''जरूर आज तो मैंने इधर तैरनेवाली सारी-की-सारी मछलियाँ पकड़ ली हैं। या फिर कोई ऐसा बड़ा जीव पकड़ा है, जो लोगों के लिए अजूबा होगा। या फिर कोई ऐसी भयानक चीज होगी, जिसे महारानी पसंद करेंगी।'' उसने सारा जोर लगाकर रस्सियों को ऊपर खींचा जब तक कि किसी काँसे के फूलदान में नीले मीने की लकीरों की तरह उसकी बाँहों में नसें उभर नहीं आईं।

वह पतली रस्सियों को खींचता चला गया, जब तक कि सपाट कार्कों का घेरा उसके पास नहीं आ गया। फिर अंत में जाल भी पानी की ऊपरी सतह पर आया।

लेकिन उसमें एक भी मछली न थी। न ही कोई बड़े आकार का जीव। केवल एक छोटी मत्स्यकन्या थी, जो गहरी नींद में सो रही थी।

उसके बाल पानी में भीगे सोने के ऊन जैसे थे। उनमें से हरेक बाल ऐसा लगता था, जैसे शीशे के सुंदर प्याले में सोने की तार हो। उसका शरीर सफेद हाथी दाँत का सा था। उसकी पूँछ चाँदी और मोती की थी, जिसके चारों तरफ समुद्र की हरी लताएँ लिपटी हुई थीं। उसके कान समुद्र के शंखों जैसे थे और होंठ मूँगे जैसे। समुद्र की ठंडी लहरें उसके ठंडे सीने से टकरा रही थीं और उसकी पलकों पर नमक झिलमिला रहा था।

वह इतनी सुंदर थी कि युवा मछुआरा उसे देखकर आश्चर्य से भर उठा। उसने हाथ बढ़ाकर जाल को अपने पास खींच लिया। फिर एक ओर झुककर मत्स्यकन्या को अपनी बाँहों में ले लिया।

उसके छूते ही मत्स्यकन्या किसी घबराए समुद्री पक्षी की तरह जोर से चीख पड़ी। उसने अपनी भयभीत नीललोहित आँखों से मछुआरे की तरफ देखा और अपने आपको उसकी पकड़ से छुड़ाने के लिए जोर मारने लगी, लेकिन मछुआरे ने उसे कसकर सटाए रखा और अपने से अलग नहीं होने दिया। जब उसने समझ लिया कि इस तरह छूटना संभव नहीं है तो रोकर बोली, ''मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ, मुझे छोड़ दीजिए। क्योंकि मैं राजा की एकलौती बेटी हूँ। मेरे पिता बूढ़े और बिलकुल अकेले हैं।''

इस पर युवा मछुआरे ने जवाब दिया, ''मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूँगा, जब तक यह वादा न करो कि जब भी मैं पुकारूँ तुम आकर मेरे लिए गाओगी, क्योंकि मछलियाँ जलजीवों के गाने से आकर्षित होती हैं, इसलिए तब मेरे जाल उनसे भर जाया करेंगे।

''अगर मैं यह वादा करूँ तो क्या तब आप सचमुच मुझे छोड़ देंगे?'' मत्स्यकन्या ने पूछा।

''मैं सच में तुम्हें मुक्त कर दूँगा।'' युवा मछुआरा बोला।

इसपर उसने जलजीवों की शपथ लेते हुए मछुआरे से वादा कर लिया। मछुआरे ने अपना बाहुपाश खोल दिया और वह किसी अज्ञात भय से काँपती हुई समुद्रतल में उतर गई।

युवा मछुआरा हर शाम समुद्र पर जाकर मत्स्यकन्या को पुकारता। वह पानी में ऊपर आकर उसके लिए गाती। डाल्फिन मछलियाँ उसके चारों तरफ तैरती हुई चक्कर लगातीं और जलपक्षी उसके सिर पर मँडराते।

उसका गाना बहुत ही सुंदर होता। वह समुद्र जीवों का गाना गाती, जो अपने झुंड को एक गुफा से दूसरी तक ले जाया करते हैं। जो छोटे बच्चों को अपने कंधे पर बैठाकर ले जाते हैं। वह हरी दाढ़ियों और बालों भरे सीनेवाले ट्रायटन का गीत गाती, जो राजा की सवारी निकलने पर शंखनाद करते थे। वह तृणमणि से बने राजा के महल का गीत गाती, जिसकी छत नीलम की थी और फर्श चमकदार मोतियों का था। वह समुद्र के बगीचों का गीत गाती, जहाँ दिनभर मूँगे की सुंदर जड़ाऊ झालरें डोलती थीं और मछलियाँ उनमें से होकर चाँदी की चिड़ियों की तरह आती-जाती थीं। जहाँ पवनपुष्प चट्टानों से सटे रहते थे और पीली रेत में गुलाब उगते थे। वह उत्तरी समुद्र से आनेवाली बड़ी ह्वेल मछलियों का गीत गाती, जिनके पंखों से बर्फ के लंबे कतरे चिपके होते थे।
और उन जलपरियों के बारे में गाती, जो ऐसी आकर्षक बातें बतातीं कि व्यापारी अपने कानों को मोम से भर लेते, ताकि वे उन्हें सुनकर पानी में कूदकर डूब न जाएँ। वह उन बड़े मस्तूलोवाले डूबे हुए जहाजों का गीत गाती, जिनके जमे हुए नाविक अभी भी पाल से चिपटे हुए थे और बाँगड़ा मछलियाँ उनके छिद्रों में से तैरती थीं। जहाज की पेंदी से चिपटकर दुनियाभर की सैर करनेवाले नन्हे जलजीवों के गीत और चट्टानों के अगल-बगल रहनेवाली समुद्रफेनी के गीत गाती, जो अपनी काली बाँहें दूर-दूर तक फैलाए रहती है और जब चाहे रात को बुला सकती है। उसने घोंघे का गीत गाया, जिसके पास अपनी रेशमी पालोंवाली उपल की नाव है और वीणा बजानेवाले मत्स्यपुरुषों का गीत गाया, जो अपनी मधुर तान से विशाल समुद्री दानव क्राकेन को सुला सकते थे। उन छोटे बच्चों का गीत गाया, जो हँसते हुए फिसलते सूँस को पकड़कर उसकी पीठ पर सवारी कर लेते हैं, उस मत्स्यकन्या का गीत गाया, जो सफेद झाग में लेटकर अपनी बाँहें नाविकों के लिए फैलाती है। उसने मुड़े हुए दाँतोंवाले जलसिंह और तैरती अयालवाले जलअश्वों के गीत गाए।
जब वह गाती तो सभी बड़ी मछलियाँ समुद्र की गहराई से उसका गीत सुनने के लिए सतह पर आ जातीं। मछुआरा उनपर अपना जाल फेंककर उन्हें पकड़ लेता। जो बाकी बचतीं उनका अपने भाले से शिकार करता। जब उसकी नाव पूरी तरह भर जाती तो मत्स्यकन्या मुसकराती हुई नीचे समुद्र में चली जाती।
लेकिन वह कभी उसके पास न आती कि वह कहीं उसे छू न ले। वह अकसर उसे बुलाता या याचना करता, लेकिन वह उसकी बात न मानती। जब वह उसे पकड़ने की कोशिश करता तो सील मछली की तरह समुद्रतल में गोता लगाती और फिर उस दिन उसे दोबारा दिखाई न देती। दिन-दिन उसकी आवाज मछुआरे के कानों को और भी मधुर लगती। उसकी आवाज इतनी मधुर थी कि मछुआरे को अपने जाल या नाव की भी सुध न रहती। सिंदूरी पंखों और सुनहरी आँखोंवाली बड़ी टनी मछलियों के झुंड उसके सामने से गुजर जाते, पर वह उनकी तरफ ध्यान ही न देता। उसका भाला उसकी बगल में पड़ा रहता। उसकी मुलम्मा चढ़ी खपचियोंवाली टोकरियाँ खाली पड़ी रहतीं। वह हैरान आँखों और खुले होंठों के साथ अपनी नाव में खाली बैठा रहता और तब तक उसका गाना सुनता, जब तक कि समुद्री कुहरा उसे घेर न लेता और घुमक्कड़ चाँद उसके भूरे अंगों को चाँदी जैसा न रँग देता।
एक शाम उसने मत्स्यकन्या को पुकारकर कहा, ''छोटी मत्स्यकन्या, छोटी मत्स्यकन्या, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मुझे अपना दूल्हा बना लो, क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।''
इस पर मत्स्यकन्या ने इनकार में सिर हिलाकर कहा, ''तुम्हारे पास इनसान की आत्मा है। अगर तुम अपनी आत्मा से छुटकारा पा लो तो मैं तुमसे प्यार कर सकती हूँ।''
तब युवा मछुआरे ने खुद से कहा, ''मेरी यह आत्मा किस काम की है? मैं इसे न तो देख सकता हूँ, न छू सकता हूँ। मैं तो इसे जानता तक नहीं। मैं जरूर इसे अपने से दूर भेज दूँगा। तब मुझे आनंद-ही-आनंद मिलेगा।''
इसके साथ ही उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकली। अपनी रंगीन नाव में खड़ा होकर उसने मत्स्यकन्या की

तरफ बाँहें पसार दीं। ''मैं अपनी आत्मा को अपने से दूर भेज दूँगा'', वह बोला, ''तब तुम मेरी दुलहन बनोगी और मैं तुम्हारा दूल्हा। फिर हम दोनों समुद्र की गहराई में साथ रहेंगे। जो कुछ तुमने अपने गीतों में सुनाया है, वह सब मुझे दिखाओगी और जो तुम चाहोगी, वह मैं करूँगा। हमारी जिंदगी अलग-अलग न होगी।''

छोटी मत्स्यकन्या खुशी से चहक उठी और उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया।

''पर मैं अपनी आत्मा को दूर कैसे भेजूँगा?'' मछुआरा बोला, ''मुझे बताओ मैं यह कैसे कर सकता हूँ तो मैं वैसा ही करूँगा।''

''आह! मुझे यह नहीं मालूम'', मत्स्यकन्या ने कहा, ''जलजीवों की आत्मा नहीं होती।'' इतना कहकर वह उसकी तरफ ललचाई नजरों से देखती हुई समुद्र में चली गई।

अगली सुबह जब सूर्य पहाड़ी पर आदमी के हाथ के आकार का ही उगा था, मछुआरे ने पादरी के घर जाकर उसके दरवाजे पर तीन बार दस्तक दी। उसने खिड़की से झाँककर देखा कि कौन है। फिर कुंडी खोलकर बोला, ''अंदर आ जाओ।'' मछुआरा सुगंधित फर्श पर झुक गया। इसके बाद उसने पवित्र पुस्तक से कुछ पढ़ते पादरी से कहा, ''फादर, मैं एक जलकन्या से प्यार करता हूँ, लेकिन मेरी आत्मा मेरी इच्छापूर्ति में बाधक है। मुझे बताइए कि मैं अपनी आत्मा को खुद से दूर कैसे भेज सकता हूँ। दरअसल मुझे इसकी कोई जरूरत भी नहीं। मेरी आत्मा मेरे किस काम की है? मैं उसे न देख सकता हूँ, न छू सकता हूँ। मैं उसे जानता तक नहीं।''

पादरी ने अपनी छाती पीट ली और बोला, ''ओफ, ओफ! तुम पागल हो गए हो या फिर तुमने कोई जहरीली बूटी खा ली है, क्योंकि आत्मा तो इनसान का नेक और उत्कृष्ट हिस्सा है। प्रभु ने हमें यह इसलिए दिया, ताकि हम नेकी के साथ इसका इस्तेमाल करें। मानव आत्मा से मूल्यवान् और कोई चीज नहीं होती। न ही किसी सांसारिक वस्तु से इनकी तुलना की जा सकती है। यह दुनिया में जितना भी सोना है और राजा के पास जितने माणिक हैं, उनसे भी कीमती है। इसलिए मेरे बच्चे, इस मामले में अब ऐसा कुछ कभी न सोचना। क्योंकि यह ऐसा पाप है, जिसकी माफी नहीं होती। जहाँ तक जलजीवों का सवाल है, समझो वे पतित हो चुके हैं। जो उनसे कोई संपर्क रखेंगे वे भी पतित होंगे। वे उन जानवरों की तरह हैं, जो नहीं जानते कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है।''

पादरी के इन कटु वचनों को सुनकर युवा मछुआरे की आँखों में आँसू भर आए। वह अपने घुटनों के बल से उठ खड़ा हुआ और बोला, ''फादर, वन्यप्राणी जंगल में रहते हैं और वे बहुत खुश रहते हैं। मत्स्यपुरुष चट्टानों पर अपनी-अपनी सुनहरी वीणा के साथ बैठते हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे भी उन जैसा ही बनने दो, क्योंकि उनके दिन फूलों जैसे हैं। जहाँ तक मेरी आत्मा का सवाल है, इससे मुझे क्या फायदा अगर यह मेरे और जिससे मैं प्यार करता हूँ, उसके बीच का रोड़ा है?''

''शारीरिक प्रेम बुरा है'', पादरी त्योरी चढ़ाकर बोला, ''इस तरह की बुरी और भ्रष्ट चीजों से प्रभु दूर रहते हैं। जंगली जानवर और समुद्र के गायक शापग्रस्त होते हैं। मैंने उनको रात को सुना है। वे मुझे आकर्षित करके माला जपने से मेरा ध्यान हटाने की कोशिश करते हैं। वे खिड़की पर दस्तक देकर हँसते हैं। वे अपने खतरनाक आनंद की कहानियाँ मेरे कानों में फुसफुसाते हैं। वे मुझे आकर्षक वस्तुओं का लालच देते हैं। जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो वे मेरा मुँह चिढ़ाते हैं। मैं तुम्हें बता रहा हूँ, वे पतित हो चुके हैं। क्योंकि उनके लिए न कोई स्वर्ग है, न नरक। न ही वे इनमें से कहीं भी जाकर प्रभु का गुणगान करेंगे।''

''फादर, आप नहीं जानते कि आप क्या कह रहे हैं'', युवा मछुआरा बोला, ''एक बार मेरे जाल में राजा की बेटी फँस गई थी। वह भोर के तारे से भी सुंदर और चंद्रमा से भी अधिक गोरी है। उसके शरीर के लिए तो मैं अपनी आत्मा का भी बलिदान कर दूँगा। उसके प्रेम पर मैं स्वर्ग भी बलिदान कर दूँगा। जो मैंने आपसे पूछा है, वह बताइए

ताकि मैं शांतिपूर्वक यहाँ से जा सकूँ।''

''ओफ, ओफ!'' पादरी बोला, ''तुम्हारी प्रेमिका का पतन हो चुका है और उसके साथ तुम्हारा भी पतन होगा।''

उसने मछुआरे को कोई आशीर्वाद नहीं दिया और दरवाजे से बाहर धकेल दिया।

युवा मछुआरा वहाँ से चलते-चलते मंडी में जा पहुँचा। वह किसी दु:खी प्राणी की तरह सिर नवाए बहुत धीरे-धीरे चल रहा था।

जब व्यापारियों ने उसे आते देखा तो आपस में कानाफूसी करने लगे। फिर उनमें से एक उससे मिलने के लिए आगे आकर बोला, ''तुम्हारे पास बेचने के लिए क्या है?''

''मैं आपको अपनी आत्मा बेचना चाहता हूँ'', उसने जवाब दिया, ''मेरी आपसे प्रार्थना है कि इसे खरीद लीजिए। क्योंकि मैं इससे तंग आ चुका हूँ। मेरी आत्मा मेरे किस काम की है? मैं इसे न देख सकता हूँ, न छू सकता हूँ। मैं इसे जानता तक नहीं।''

व्यापारी उसपर हँस पड़े और बोले, ''किसी आदमी की आत्मा हमारे किस काम की? इसकी कीमत चाँदी के एक फूटे सिक्के जितनी भी नहीं। हमें अपना शरीर एक गुलाम की तरह बेच दो। हम तुम्हें हरित बैंगनी वस्त्र पहनाकर तुम्हारी उँगली में दासता का छल्ला पहना देंगे। फिर हम तुमको महारानी का सेवक बना देंगे, लेकिन हमारे सामने अपनी आत्मा की बात मत करो। हमारे लिए तो वह है ही नहीं, न ही वह हमारे किसी काम की है।''

इसपर युवा मछुआरे ने मन-ही-मन कहा, ''कैसी अजीब बात है। पादरी कहता है कि आत्मा सारी दुनिया के सोने से भी अधिक मूल्यवान् है और व्यापारी कहते हैं कि इसका मोल चाँदी के एक फूटे सिक्के जितना भी नहीं। वह उन व्यापारियों से आगे बढ़ गया। इसके बाद वह समुद्रतट पर आ पहुँचा। वहाँ जाकर वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। सोचते-सोचते दोपहर हो गई। तभी उसे अचानक याद आया कि व्यापारियों के एक सुगंधित बूटी इकट्ठी करनेवाले साथी ने उससे एक युवा जादूगरनी के बारे में बताया था। वह खाड़ी के मुहाने पर एक गुफा में रहती थी। वह जादू-टोने में बड़ी होशियार थी। वह तुरंत उधर दौड़ पड़ा। वह अपनी आत्मा से पिंड छुड़ाने के लिए बेचैन होकर इतनी तेज दौड़ रहा था कि उसके पीछे धूल के बादल उड़ रहे थे। अपने हाथ में होनेवाली खुजली से युवा जादूगरनी ने जान लिया कि वह आ रहा है। उसने हँसकर अपनी लाल जुल्फें नीचे की तरफ बिखेर लीं। इस तरह अपने लाल बाल नीचे को गिराए हुए वह गुफा के मुँह पर आ खड़ी हुई। उसके हाथ में विषगर्जर की पुष्पित टहनी थी।

''तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हें क्या चाहिए?'' वह चिल्लाई। वह हाँफता हुआ चढ़ाई से ऊपर आया और उसके सामने झुक गया। अपने जाल में उस समय मछलियाँ चाहते हो, जब हवा का रुख अनुकूल न हो? मेरे पास एक छोटी बाँसुरी है। जब मैं इसे बजाती हूँ तो बड़ी मुलेट मछलियाँ तैरती हुई खाड़ी में आ जाती हैं, लेकिन इसकी कीमत होगी, खूबसूरत लड़के, इसकी कीमत होगी। तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हें क्या चाहिए? जहाजों को नष्ट करनेवाला तूफान? समुद्र की लहरें, जो खजाने बहाकर किनारे पर ले आएँ? मेरे पास हवा से भी बड़े तूफान हैं। पानी के एक डोल और छलनी की मदद से मैं बड़े-बड़े जहाजों को समुद्रतल में भेज सकती हूँ, लेकिन इसकी कीमत होगी, खूबसूरत लड़के इसकी कीमत होगी। तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हें क्या चाहिए? मैं वादी में उगनेवाले एक फूल के बारे में जानती हूँ, जिसका मेरे सिवा किसी और को पता नहीं। उसकी पत्तियाँ बैंगनी हैं और उसके दिल में सितारा है। उसका रस दूध सा सफेद होता है। अगर तुम रानी के होंठों से वह फूल छुआ दो तो दुनियाभर में तुम्हारे पीछे-पीछे चली आएगी। अपने राजा के बिस्तर से वह उठेगी और सारी दुनिया में तुम्हारे पीछे चलेगी, लेकिन इसकी कीमत होगी, खूबसूरत लड़के इसकी कीमत होगी। तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हें क्या चाहिए? मैं भेक को खरल करके उसका

शोरबा बना सकती हूँ। उस शोरबे को मरे हुए आदमी के हाथ से हिलाने के बाद जब मैं तुम्हारे सोए हुए दुश्मन पर उसे छिड़क दूँ तो वह जहरीले साँप में बदल जाएगा। फिर उसकी अपनी माँ ही उसे मार डालेगी। एक चक्र की मदद से मैं आसमान से चाँद को खींचकर नीचे ला सकती हूँ और तुम्हें एक बिल्लौर में मौत दिखा सकती हूँ। तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हें क्या चाहिए? अपनी इच्छा मुझे बताओ और मैं तुम्हें वह दूँगी। तुम मुझे उसकी कीमत दोगे, खूबसूरत लड़के, उसकी कीमत दोगे।''

''मेरी आवश्यकता तो बहुत मामूली है'', युवा मछुआरा बोला, ''अगर पादरी मुझसे नाराज होकर मुझे अपने घर से न निकालता तो बहुत मामूली इच्छा थी। व्यापारियों ने भी मेरा मजाक उड़ाया और मुझे इनकार कर दिया। इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, हालाँकि लोग तुम्हें बुरा कहते हैं। तुम्हारी जो भी कीमत होगी, मैं दूँगा।''

''तुम क्या चाहते हो?'' जादूगरनी ने उसके पास आकर पूछा।

''मैं अपनी आत्मा को खुद से दूर भेजना चाहता हूँ।'' युवा मछुआरे ने जवाब दिया।

जादूगरनी यह सुनकर पीली पड़ गई। वह काँप उठी। उसने चेहरा अपने नीले लबादे में छिपा लिया। ''खूबसूरत लड़के, खूबसूरत लड़के, ऐसा करना बहुत भयानक होता है।''

वह अपने भूरे बालों को झटककर हँस पड़ा, ''मेरी आत्मा मेरे लिए बेकार है'', उसने जवाब दिया, ''मैं इसे न देख सकता हूँ, न छू सकता हूँ। मैं इसे नहीं जानता।''

''अगर मैं बता दूँ तो मुझे क्या दोगे?'' जादूगरनी ने अपनी सुंदर आँखों से उसकी तरफ देखते हुए पूछा।

''सोने के पाँच सिक्के'', उसने कहा, ''मेरे जाल और मेरा छप्पर छाया घर, जिसमें मैं रहता हूँ। मेरी रंगीन नाव, जिसमें मैं समुद्र में घूमता हूँ। सिर्फ मुझे इतना बता दो कि मैं अपनी आत्मा से कैसे पिंड छुड़ा सकता हूँ, फिर मेरे पास जो कुछ है, वह सब तुम्हें दे दूँगा।''

वह हँस पड़ी। उसने अपनी विषगर्जर की टहनी से उसे मारा। ''मैं शरत की पत्तियों को सोने में बदल सकती हूँ'', उसने जवाब में कहा, ''और अगर मैं चाहूँ तो चंद्रमा की किरणों को चाँदी में बदल सकती हूँ। जिसकी मैं सेवा करती हूँ, वह दुनिया के सभी राजाओं से अमीर है।''

''तो फिर मैं तुम्हें क्या दूँ?'' वह बोला, ''अगर तुम्हारी कीमत न सोना है, न चाँदी है।'' जादूगरनी ने अपना सफेद हाथ उसके बालों पर फेरा। ''तुम्हें मेरे साथ नाचना पड़ेगा खूबसूरत लड़के।'' यह कहते हुए वह मुसकराई।

''सिर्फ यही, और कुछ नहीं?'' युवा मछुआरा हैरानी से बोला और उठ खड़ा हुआ।

''सिर्फ यही, और कुछ नहीं।'' जादूगरनी ने जवाब दिया और फिर से मुसकराई।

''तो फिर शाम होने पर किसी गुप्त स्थान पर हम दोनों साथ नाचेंगे'', वह बोला, ''और नाचने के बाद तुम मुझे वह बताओगी, जो मैं जानना चाहता हूँ।''

उसने न में सिर हिलाया और बोली, ''जब पूर्णिमा का चाँद निकला हो, जब पूर्णिमा का चाँद निकला हो।'', वह बुदबुदाई। इसके बाद उसने चारों तरफ देखा और सुनने की कोशिश की। एक नीली चिड़िया शोर मचाती हुई अपने घोंसले से निकली और उसने रेत के टीलों के चक्कर काटे। तीन चित्तीदार चिड़ियाँ खुरदरी धूसर घास से सरसराती हुई निकलीं और आपस में चहचहाईं। वहाँ और कोई आवाज न थी, सिवा तट के कंकड़ों से टकराती लहरों की आवाज के। जादूगरनी ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसे अपने पास खींच लिया और अपने सूखे होंठ उसके कान के पास ले गई।

''आज रात तुम पहाड़ की चोटी पर जरूर आना'', वह फुसफुसाई, ''आज विश्राम का दिन है, इसलिए वह वहाँ होगा।''

युवा मछुआरे ने उसकी तरफ देखा तो वह अपने सफेद दाँत दिखाती हुई हँसी। ''वह कौन है, जिसकी तुम बात कर रही हो?'' उसने पूछा।

''तुम्हें इससे मतलब नहीं'', उसने जवाब दिया, ''तुम आज रात वहाँ जाकर पेड़ के साए में खड़े रहना और मेरे आने का इंतजार करना। अगर कोई काला कुत्ता दौड़ता हुआ तुम्हारी तरफ आए तो उसे भिसा के डंडे से मारना। वह भाग जाएगा। अगर कोई उल्लू तुमसे बात करना चाहे तो उसे जवाब न देना। जब चाँद पूरा निकल आएगा, तब मैं आऊँगी और हम घास पर इकट्ठे नाचेंगे।''

''पर क्या तुम मुझे यह बताने की कसम खाती हो कि मैं अपनी आत्मा को कैसे अपने से दूर कर सकूँगा?'' उसने सवाल किया।

वह धूप में निकल आई। उसने अपनी लाल जुल्फें लहराकर हवा में तरंगें पैदा कीं। ''मैं बकरी के खुरों की कसम खाती हूँ।'' उसने जवाब दिया।

''तुम सबसे अच्छी जादूगरनी हो'', युवा मछुआरा बोला, ''आज रात मैं पहाड़ की चोटी पर तुम्हारे साथ अवश्य नाचूँगा। तुमने मुझसे न सोना माँगा, न चाँदी। सिर्फ यह मामूली सी चीज।'' उसने अपनी टोपी उतारकर और सिर झुकाकर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। फिर खुशी से भरा वह शहर की तरफ वापस भागा।

जादूगरनी उसे जाते देखती रही। जब वह आँखों से ओझल हो गया तो वह वापस अपनी गुफा में आ गई। उसने देवदार की नक्काशीदार पेटी से एक आईना निकालकर फ्रेम पर टिका दिया। उसने अंगारों पर गंधबेन जलाया और धुएँ के छल्लों में से देखने लगी। थोड़ी देर बाद उसने गुस्से से अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। ''उसे मेरा होना चाहिए था'', वह बड़बड़ाई, ''मैं भी उतनी ही सुंदर हूँ, जितनी वह है।''

रात को चाँद निकलते ही युवा मछुआरा पहाड़ की चोटी पर आकर पेड़ के साए में खड़ा हो गया। धातु की विशाल चादर की तरह समुद्र नीचे फैला हुआ था। छोटी खाड़ी में नौकाओं के साए हिल रहे थे। एक गंधक के रंग की आँखोंवाले बड़े उल्लू ने उसका नाम लेकर पुकारा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। एक काला कुत्ता दौड़ता हुआ आया और उसपर गुर्राया। मछुआरे ने उसे भिसा के डंडे से पीटा तो वह रिरियाता हुआ भागा।

आधी रात को जादूगरनियाँ चमगादड़ों की तरह हवा में उड़ती हुई आईं। ''ओह, कोई यहाँ है, जिसे हम नहीं जानतीं।'' वे धरती पर उतरते ही चिल्लाईं। उन्होंने इधर-उधर सूँघा, आपस में खुसर-फुसर की और इशारे किए। सबसे बाद में वह लाल जुल्फोंवाली युवा जादूगरनी उड़ती हुई आई। उसने सुनहरे कामवाली मोर की आँखों से सजी पोशाक पहनी हुई थी। उसके सिर पर हरी मखमल की एक छोटी टोपी थी।

''वह कहाँ है, वह कहाँ है?'' उसे देखते ही जादूगरनियाँ चिल्ला पड़ीं, लेकिन वह हँसकर पेड़ की तरफ दौड़ी। मछुआरे का हाथ पकड़कर वह उसे चाँदनी में ले आई और उसके साथ नाचने लगी।

वे चक्करों में घूम रहे थे। युवा जादूगरनी इतनी ऊँची उछल जाती थी कि वह उसके जूतों की लाल एड़ियाँ देख सकता था। फिर ठीक नाचनेवालों के बीच में घोड़े की टापों की आवाज आई, पर कोई घोड़ा दिखाई नहीं दिया। वह डर गया।

''और तेज।'', जादूगरनी ने कहा और अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं। उसकी गरम साँसें वह अपने चेहरे पर महसूस कर रहा था। ''तेज, तेज'', वह चिल्लाई। उसे लगा कि धरती उसके पैरों तले लट्टू की तरह घूम रही है। उसका दिमाग परेशान हो गया और एक अजीब तरह का डर उसके दिल में समा गया। उसे लगा कि कोई दुष्ट चीज उसे घूर रही है। क्योंकि चट्टान के पीछे उसे एक आकृति नजर आ रही थी, जहाँ कुछ देर पहले कोई न था। वहाँ पर स्पेन के फैशन में सिला काली मखमल का सूट पहने एक आदमी था। उसका चेहरा अजीब तरह का जर्द

था, लेकिन उसके होंठ किसी चटक लाल फूल जैसे थे। वह बहुत थका हुआ लग रहा था। वह पीछे टेक लगाकर अपने खंजर के दस्ते से खेल रहा था। पास ही घास पर उसका पंख की कलगीवाला हैट रखा था। साथ ही घुड़सवारी के सोने की लेसवाले मोतियों जड़े दस्ताने रखे थे। उसके लबादे का अस्तर नेवले की खाल का बना था। उसके कोमल सफेद हाथों में रत्न जड़ी अँगूठियाँ थीं और उसकी आँखों पर झुकी पलकें बहुत बोझिल थीं।
युवा मछुआरा उसे किसी जादुई जाल में फँसे प्राणी सा विवश होकर देख रहा था। आखिरकार उनकी आँखें मिलीं। उसके बाद वह कहीं भी नाच रहा हो, उसे लगा कि उस आदमी की आँखें उसकी आँखों पर ही हैं। उसने जादूगरनी की हँसी सुनी तो उसे कमर से पकड़कर चक्कर-दर-चक्कर नाचने लगा।
अचानक जंगल में एक कुत्ता भौंका और नाचनेवाले सभी रुक गए। वे जोड़ों में चलकर नीचे झुके और उस आदमी के हाथ चूम लिये। तब उस आदमी के गर्वीले होंठों पर एक हलकी सी मुसकराहट तैर गई। जैसे किसी चिडि़या के पंख पानी को छूकर उसमें हलकी लहरें जगा देते हैं, लेकिन उसमें तिरस्कार भी था। वह लगातार युवा मछुआरे को घूर रहा था।
''आओ, हम पूजा करें।'' जादूगरनी फुसफुसाई। वह उसे लेकर चली तो उसके पीछे-पीछे चलने की किसी प्रबल इच्छा से बँध वह उसके साथ हो लिया, लेकिन पास आने पर किसी अनजानी प्रेरणा से उसने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाते हुए पवित्र नाम का उच्चारण किया।
उसके ऐसा करते ही जादूगरनियाँ बाज की तरह तेज आवाज में चीखकर भाग खड़ी हुईं। उसे घूरनेवाले आदमी का पीला चेहरा पीड़ा से विकृत हो गया। पेड़ों के एक झुरमुट के पास जाकर उस आदमी ने सीटी बजाई। चाँदी के साजवाला एक घोड़ा दौड़ता हुआ उसके पास आ गया। काठी पर बैठने के बाद उसने मुड़कर युवा मछुआरे की तरफ उदास आँखों से देखा।
लाल जुल्फोंवाली जादूगरनी ने भी भागने की कोशिश की, लेकिन मछुआरे ने उसे कसकर पकड़े रखा।
''मुझे छोड़ दो और जाने दो'', वह चिल्लाई, ''क्योंकि तुमने वह नाम लिया है, नहीं लेना चाहिए था और वह निशान बनाया है, जो नहीं बनाना था।''
''नहीं'', वह बोला, ''जब तक तुम मुझे वह राज नहीं बताओगी, मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा।''
''कैसा राज।'' जादूगरनी उससे अपने को छुड़ाने के लिए किसी जंगली बिल्ली की तरह संघर्ष करते हुए और अपने झाग भरे होंठ काटते हुए बोली।
''तुम जानती हो।'' उसने जवाब दिया।
उसकी हरी घास जैसी आँखों में आँसू आ गए। वह मछुआरे से बोली, ''इसके अलावा मुझसे और कुछ भी माँग लो।''
वह हँस पड़ा। फिर उसे और भी कसकर जकड़ लिया।
जब वह समझ गई कि उससे अपने आपको मुक्त नहीं कर सकती तो फुसफुसाई, ''मैं उन मत्स्यकन्याओं जैसी ही सुंदर और मनोरम हूँ।'' उसने अपना चेहरा उसके चेहरे से सटा लिया और प्रेम जताने लगी।
लेकिन उसने त्योरियाँ चढ़ाते हुए उसे पीछे हटा दिया। ''अगर तुम अपना वादा पूरा नहीं करती हो तो मैं झूठी जादूगरनी मानकर तुम्हें मार डालूँगा।''
वह जूडा पेड़ के फूल की तरह पीली पड़ गई और काँप उठी। ''ऐसा ही सही'', वह बड़बड़ाई, ''यह तुम्हारी आत्मा है, मेरी थोड़े ही है। तुम जैसा चाहो, उसके साथ सुलूक करो।'' उसने अपनी कमर से एक छोटा छुरा निकाला, जिसका दस्ता हरे साँप के चमड़े से मढ़ा हुआ था। उसने छुरा उसे दे दिया।

''यह मेरे किस काम आएगा?'' उसने हैरान होकर जादूगरनी से पूछा।

वह जरा देर चुप रही। उसके चेहरे पर भय साफ नजर आ रहा था। उसने अपने माथे पर आई जुल्फें पीछे हटाईं। फिर विचित्र प्रकार से मुसकराती हुई बोली, ''लोग जिसे शरीर की छाया कहते हैं, वह शरीर की छाया नहीं होती। वह आत्मा का शरीर होता है। समुद्र के किनारे चंद्रमा की तरफ पीठ करके खड़े हो जाना। फिर अपने पैरों के पास से अपनी छाया को काट देना, जो तुम्हारी आत्मा का शरीर है। अपनी आत्मा से कहना कि तुम्हें छोड़ दे तो वह तुम्हें छोड़ देगी।''

युवा मछुआरा काँप उठा। ''क्या यह सच है?'', वह बुदबुदाया।

''यह सच है। काश मैंने तुम्हें यह न बताया होता?'' वह बोली और उसके घुटनों से लिपटकर रोने लगी।

मछुआरे ने उसे खुद से अलग किया और उसे घनी घास में छोड़कर वहाँ से चल दिया। पहाड़ के किनारे की तरफ जाते हुए उसने छुरा अपनी कमर में खोंस लिया और नीचे उतरने लगा।

उसके अंदर बसी आत्मा ने पुकारकर कहा, ''देखो! मैं इतने बरसों से तुम्हारे अंदर वास करती थी। मैं तुम्हारी सेवक थी। मुझे अपने से दूर मत करो। आखिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

युवा मछुआरा हँसकर बोला, ''तुमने मेरा कुछ बुरा नहीं किया। पर मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। यह जगत् बहुत विशाल है। फिर स्वर्ग और नरक भी हैं। इनके बीच में आकाश-गंगा भी है। तुम जहाँ चाहे जाओ, लेकिन मुझे परेशान न करो, क्योंकि मेरा प्यार मुझे पुकार रहा है।''

उसकी आत्मा ने बहुत अनुनय-विनय की, पर उसने उसकी एक न सुनी। वह किसी जंगली बकरी जैसे सधे पाँवों से एक ऊँची चट्टान से दूसरी पर फलाँगता हुआ चलता रहा। अंत में वह समतल धरातलवाले समुद्र के पीले तट पर पहुँच गया।

भूरे और गठे बदनवाला मछुआरा किसी यूनानी के तराशे बुत की तरह रेत पर चंद्रमा की तरफ पीठ करके खड़ा हो गया। फेनिल समुद्र से सफेद बाँहें उसे बुला रही थीं और लहरों से धुँधली आकृतियाँ उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित कर रही थीं। उसके सामने उसकी छाया थी, जो उसकी आत्मा का शरीर था। उसके पीछे शहदरँगी फिजा में चंद्रमा टँगा हुआ था।

उसकी आत्मा उससे बोली, ''अगर तुम वाकई मुझे अपने से अलग करना चाहते हो तो मुझे अपने दिल के बिना मत भेजो। दुनिया बहुत निर्दयी है। मुझे अपना दिल साथ ले जाने दो।''

वह अपना सिर झटककर मुसकराया और बोला, ''अगर मैं तुम्हें अपना दिल दे दूँ तो अपनी प्रेमिका को प्यार किससे करूँगा?''

''नहीं, नहीं'', आत्मा ने कहा, ''मुझे अपना दिल दे दो। यह दुनिया बहुत निर्दयी है। मुझे डर लगता है।''

''मेरा दिल तो मेरी प्रेमिका का है'', वह बोला, ''इसलिए देर मत करो, जाओ।''

''क्या मैं प्रेम न करूँ?'' आत्मा ने पूछा।

''तुम यहाँ से जाओ, क्योंकि मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं।'' युवा मछुआरा बोला। उसने हरे साँप की चमड़ीवाला छुरा निकाला और उससे अपने पैरों के पास से अपनी छाया को काट दिया। वह उठकर उसके सामने खड़ी हो गई। वह उसी के समान दिखती, एक युवा पुरुष सी।

वह पीछे हटा और छुरा वापस अपनी कमर में खोंस लिया। एक भय की भावना उसमें जगी।

''जाओ यहाँ से'', वह बुदबुदाया, ''और फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना।

''नहीं-नहीं, हमें फिर कभी जरूर मिलना चाहिए।'' उसकी आवाज बाँसुरी की तरह मद्धम थी और जब वह बोली

तो उसके होंठ मुश्किल से हिल रहे थे।
''अब हम कैसे मिलेंगे?'' युवा मछुआरा बोला, ''तुम समुद्र की गहराइयों में तो मेरे पीछे नहीं आओगी।''
''हर साल में एक बार मैं इसी जगह पर आकर तुम्हें पुकारा करूँगी'', आत्मा ने कहा, ''हो सकता है, कभी तुम्हें मेरी जरूरत महसूस हो।''
''मुझे तुम्हारी क्या जरूरत हो सकती है?'' युवा मछुआरा बोला, ''लेकिन जैसा तुम चाहो कर सकती हो।'' इतना कहकर वह समुद्र में कूद पड़ा। उसका स्वागत तुरही बजाकर किया गया और छोटी मत्स्यकन्या उससे मिलने के लिए ऊपर आई। उसने मछुआरे के गले में बाँहें डालकर उसका चुंबन लिया।
आत्मा सुनसान समुद्रतट पर खड़ी उन्हें देख रही थी। जब वे समुद्र की गहराइयों में अदृश्य हो गए तो वह रोती हुई दलदली क्षेत्र की तरफ चली गई।
ठीक एक साल बाद आत्मा ने फिर समुद्रतट पर आकर युवा मछुआरे को पुकारा। वह समुद्रतल पर आकर बोला, ''तुमने मुझे क्यों पुकारा?''
उसकी आत्मा ने जवाब में कहा, ''मेरे पास आओ, ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ। मैंने बहुत सी अद्भुत चीजें देखी हैं।''
वह नजदीक आकर उथले पानी पर लेट गया और अपना सिर अपने हाथ पर रखकर उसकी बात सुनने लगा।
आत्मा ने उससे कहा, ''तुम्हें छोड़ने के बाद मैंने पूर्व की यात्रा की। पूर्व से ही सबकुछ समझदारी और ज्ञानवाला आता है। छह दिनों की यात्रा के बाद सातवें दिन मैं तुर्कों के देश की एक पहाड़ी पर पहुँची। मैं धूप से बचने के लिए एक झाऊ के पेड़ के साए में बैठ गई। जमीन सूखी और गरमी से तपी हुई थी। लोग मैदान में इस तरह आ-जा रहे थे, जैसे ताँबे की चमकदार चकती पर चींटियाँ रेंग रही हों।
''दोपहर होते ही मैदान के सपाट किनारे से लाल धूल का एक बादल उठा। यह देखते ही तुर्कों ने रंगीन धनुषों पर डोरी चढ़ा ली और अपने छोटे घोड़ों पर सवार होकर उसका सामना करने के लिए चल पड़े। औरतें चिल्लाती हुईं चौपहिया गाड़ियों की तरफ दौड़ीं और नमदे के परदों के पीछे छिप गईं।
''गोधूलि के समय तुर्क लौटे, लेकिन उनमें से पाँच गायब थे। जो बचे थे, उनमें से कुछ ही घायल नहीं हुए थे। उन्होंने अपने घोड़े गाड़ियों के आगे जोते और जल्दी से वहाँ से भाग निकले। तीन गीदड़ एक गुफा से निकलकर उनकी तरफ देखने लगे। फिर उन्होंने अपने नथुनों से हवा को सूँघा और विपरीत दिशा में भागे।
''चाँद निकला तो मैंने देखा कि मैदान में एक अलाव जल रहा है। मैं उसकी तरफ चल दी। व्यापारियों का एक झुंड कालीनों पर उसके चारों तरफ बैठा था। उनके ऊँट उनके पीछे बँधे हुए थे। उनके हब्शी सेवक रेत में तंबू गाड़ रहे थे और ऊँची कँटीली बाड़ बना रहे थे।
''मेरे उनके पास आते ही व्यापारियों का मुखिया उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और मेरे आने का कारण पूछा।
''मैंने जवाब में कहा कि मैं अपने देश का राजकुमार हूँ और तुर्कों के चंगुल से बच निकला हूँ, जो मुझे गुलाम बनाना चाहते थे। मुखिया मुसकराया। उसने मुझे बाँस पर टाँगे हुए पाँच सिर दिखाए।
''फिर उसने मुझसे सवाल किया कि खुदा का पैगंबर कौन है? मैंने जवाब दिया, मुहम्मद।''
''पैगंबर का नाम सुनते ही उसने सिर झुकाया और मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने पास बैठा लिया। एक हब्शी मेरे लिए एक कठौते में भैंस का दूध और उसके साथ भुने गोश्त का एक टुकड़ा ले आया।
''सुबह होने पर हम अपनी यात्रा पर निकल पड़े। मैं मुखिया के बगल में लाल बालोंवाले एक ऊँट पर सवार थी।

हमारे आगे-आगे एक हरकारा भाला लिये दौड़ रहा था। हमारे दोनों तरफ सैनिक थे और माल से लदे खच्चर पीछे चल रहे थे। इस कारवाँ में चालीस ऊँट थे। खच्चर उनसे दोगुने थे।

''हम तुर्कों के देश से चंद्रमा को कोसनेवालों के देश पहुँचे। वहाँ हमने लोगों को अपने सोने की रखवाली करते हुए और विचित्र अजगरों को अपनी गुफाओं में सोते हुए देखा। जब हम पहाड़ों के बीच से गुजर रहे थे तो इस डर से साँस रोके हुए थे कि हम पर बर्फ न गिरे। हरेक ने अपने चेहरे के आगे जाली का नकाब ओढ़ लिया था। जब हम बौनों की घाटी में से गुजरे तो उन्होंने पेड़ों के खोखल से हम पर तीर छोड़े। रात को हमने जंगलियों को ढोल बजाते सुना। जब हम बंदरों के गढ़ पहुँचे तो हमने उनके सामने फल रख दिए। तब उन्होंने हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। जब हम साँपों के गढ़ पहुँचे तो हमने पीतल के कटोरों में उनके लिए गरम दूध रख दिया। तब उन्होंने हमें जाने दिया। तीन बार हम आक्सेस नदी के किनारे आए। हमने उसे लकड़ी की नावों में पार किया, जिनमें चमड़े के पाल लगे थे। दरियाई घोड़ों ने हम पर हमला करके हमें मारने की कोशिश की। हमारे ऊँट उन्हें देखकर काँपने लगे थे।

''हर शहर के राजा ने हम पर महसूल लगाया, लेकिन हमें अपने द्वार में प्रवेश नहीं करने दिया। वह हमारे लिए दीवार पर से रोटियाँ, शहद में पकाई टिक्कियाँ और खजूर से भरी आटे की टिक्कियाँ फेंकते। हर सौ टोकरियों के बदले हम उन्हें अंबर की एक माला देते।

''जब गाँववासियों ने हमें आते देखा तो वह अपने कुओं में जहर डालकर पहाड़ों में भाग गए। हम मेगाडे लोगों से लड़े, जो बूढ़े पैदा होते हैं, हर साल जवान होते जाते हैं और जब छोटे बच्चे हो जाते हैं तो मर जाते हैं। हम लेक्ट्राइ जाति के लोगों से लड़े जो खुद को शेर की औलाद बताते हैं और अपने को पीले और काले रंग में रँगते हैं। अनंटी कबीलेवालों से लड़े, जो अपने मृतकों के शव अंतिम संस्कार के लिए पेड़ों की चोटी पर रख देते हैं। वे अँधेरी गुफाओं में रहते हैं, ताकि उनका आराध्य सूर्य देवता उन्हें मार न डाले। हम मगरमच्छ के उपासक क्रिमनियन लोगों से लड़े जो अपने देवता को हरे शीशे की मुद्राएँ देते हैं और उसे मक्खन और ताजी चिड़िया खिलाते हैं। हम कुत्ते के चेहरेवाले अजनबी कबीलेवालों से लड़े और घोड़े जैसे खुरोंवाले और घोड़ों से भी तेज दौड़नेवाले सीबान कबीले के लोगों से लड़े। हमारे साथ के एक तिहाई इन लड़ाइयों में मारे गए। एक तिहाई अभावग्रस्त होकर मर गए। बाकी मेरे बारे में बड़बड़ाए कि मैं उनके लिए दुर्भाग्य हूँ। मैंने एक चट्टान के पेंदे से जहरीला गेहुँअन साँप पकड़कर निकाला और उसे मुझे काटने दिया। जब उन्होंने देखा कि इसका मुझ पर कोई असर नहीं हुआ तो वे डर गए।

''चौथे महीने में हम इल्लेल शहर पहुँचे। जब हम नगर प्राचीर के पासवाले बाग में पहुँचे, रात हो चुकी थी। हवा में उमस थी, क्योंकि तब चंद्रमा वृश्चिक राशि में था। हमने पेड़ों से पके अनार तोड़े और उन्हें पकाया। हमने उनका रस पिया। फिर हम कालीनों पर लेटकर दिन चढ़ने का इंतजार करने लगे।

''सुबह होने पर हमने उठकर शहर द्वार पर दस्तक दी। यह काले काँसे का बना था। इस पर समुद्री अजगर और पंखोंवाले अजगर की आकृतियाँ खुदी थीं। संतरियों ने परकोटे से हमें देखकर हमारे आने का कारण पूछा। कारवाँ के दुभाषिए ने जवाब में कहा कि हम सीरिया से आए हैं और हमारे पास बहुत सा माल है। उन्होंने जमानत ली और हमसे कहा कि दोपहर को आपके लिए दरवाजा खोलेंगे। तब तक इंतजार करें।

''जब दोपहर हो गई तो उन्होंने द्वार खोल दिए। हमारे अंदर आते ही हमें देखने के लिए लोग अपने घरों से निकल आए और भीड़ लग गई। सारे शहर में शंखनाद के साथ मुनादीवाले ने सूचना दे दी। हब्शियों ने कपड़ों के गट्ठर और गूलर की नक्काशीदार पेटियाँ खोल दीं। जब उनका काम खत्म हो गया तो व्यापारियों ने अपना माल सजाना शुरू किया। उसमें आकर्षक सामान था। उनमें मिस्र की मोमी लिनन थी, इथियोपिया की रंगीन लिनन थी, टायरे के

बैंगनी स्पंज थे और सीडोन की नीली झालरें थीं। उनमें अंबर के प्याले, शीशे के सुंदर बरतन और मिट्टी के पकाए हुए आकर्षक भाँड़ें थे। एक घर की छत से बहुत सी औरतों का झुंड हमें देख रहा था। उनमें से एक ने सोने के कामवाला चमड़े का बुरका पहन रखा था।

''पहले दिन पुजारियों ने आकर हमारे साथ सौदा किया। दूसरे दिन सामंत आए। तीसरे दिन दस्तकार और गुलाम आए। जितने दिन भी व्यापारी उनके शहर में रहें, उनके यहाँ यही रिवाज है।

''हम एक पूरा चाँद होने तक वहाँ ठहरे। फिर जब चाँद घटने लगा तो मैं शहर के रास्तों में घूमता हुआ उनके देवता के बगीचे तक आ गया। वहाँ पीले लबादेवाले पुजारी हरे-भरे पेड़ों के बीच से चुपचाप आ-जा रहे थे। संगेमूसा के चबूतरे पर देवता का गुलाबी लाल मंदिर था। उसके दरवाजे लाख जड़े थे और उनपर साँड़ और मोर की सोने की उभरी हुई आकृतियाँ थीं। उसकी छत हरे रंग की चीनी-मिट्टी की थी। उसके बाहर निकले छज्जों से टनटनानेवाली घंटियाँ बँधी थीं। जब सफेद फाख्ता वहाँ से उड़कर जातीं तो उनके पंखों से टकराकर घंटियाँ बज उठतीं। मंदिर के सामने साफ पानी का एक सरोवर था। उसकी पटरियाँ धारीदार सुलेमानी पत्थर की बनी थीं। मैं उसके पास लेट गया और अपनी पीली उँगलियों से चौड़ी पत्तियों को छुआ। एक पुजारी आकर मेरे पीछे खड़ा हो गया। उसके पैरों में सैंडल थे। एक साँप की नरम चमड़ी की और दूसरी चिड़िया के पंख की। उसके सिर पर चाँदी के नवचंद्रों से सजी टोपी थी। उसके लबादे पर सात पीली तितलियाँ कढ़ी हुई थीं। उसके घुँघराले बाल सुरमे से रँगे थे।

''थोड़ी देर बाद उसने मुझसे बात की और मेरी इच्छा पूछी।

''मैंने उसे बताया कि मेरी इच्छा देवता के दर्शन करने की है।

'''देवता शिकार पर हैं।' पुजारी ने अपनी छोटी-छोटी झुकी हुई आँखों से मेरी तरफ देखते हुए जवाब दिया।

''मुझे बताओ वह किस जंगल में गए हैं। मैं भी उनके साथ शिकार खेलूँ'', मैंने जवाब दिया।

''उसने अपने लबादे के किनारे को अपने लंबे नाखूनों से सीधा करते हुए कहा, 'देवता सो रहे हैं।'

''मुझे बताओ किस पलंग पर और मैं उनकी पहरेदारी करूँ।'' मैंने जवाब में कहा।

'देवता भोज पर हैं।' उसने चीखकर कहा।

''अगर शराब मीठी है तो मेरी उनके साथ पीने की इच्छा है, लेकिन अगर कड़वी है तो भी उनके साथ पीने की इच्छा है।'' मेरा जवाब था।

''उसने हैरानी से अपना सिर झुकाया। फिर हाथ पकड़कर मुझे उठाया और मुझे मंदिर में ले गया।

''पहले कक्ष में मैंने मोतियों के किनारों से सजे सूर्यकांतमणि के सिंहासन पर आसीन एक मूर्ति को देखा। आबनूस की वह मूर्ति एक आदमी की थी। उसके सिर पर एक माणिक था और बालों से चूकर तेल उसकी जाँघों पर टपक रहा था। उसके पैर हाल ही में बलि चढ़ाए मेमने के खून से लाल थे। उसकी कमर में ताँबे की पेटी थी, जिस पर सात लहसुनिया जड़े थे।

''मैंने पुजारी से पूछा, 'क्या यही देवता हैं?' 'हाँ, यही देवता हैं।' उसने जवाब दिया।

'''मुझे देवता के दर्शन कराओगे नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।' इतना कहकर मैंने उसके हाथ को छुआ तो उसका हाथ मुरझा गया।

''इस पर पुजारी ने मुझसे प्रार्थना की, 'मेरे प्रभु अपने सेवक को ठीक कर दीजिए, फिर मैं आपको देवता के दर्शन कराऊँगा।'

''मैंने उसके हाथ पर फूँक मारी तो वह फिर से पहले जैसा हो गया। वह काँप गया और मुझे दूसरे कक्ष में ले गया। वहाँ मैंने बड़े-बड़े नीलमों से जड़े संगयशब के कमल पर खड़ी एक मूर्ति देखी। हाथीदाँत की यह मूर्ति आदमकद

से दोगुने आकार की थी। उसके माथे पर एक लहसुनिया जड़ा था। उसके सीने पर गंधरस और दालचीनी का लेप था। उसके हाथ में जेड का एक टेढ़ा दंड था और दूसरे हाथ में एक गोल बिल्लौर था। उसने घुटने तक लंबे पीतल के जूते पहने हुए थे। उसकी मोटी गरदन में चंद्रकांतमणि का घेरा था।

''मैंने पुजारी से पूछा, 'क्या यही देवता हैं?'

''उसने जवाब दिया, 'यही देवता हैं।'

'''मुझे देवता के दर्शन कराओ वरना मैं तुम्हें मार डालूँगा।' मैंने कहा। इतना कहकर मैंने उसकी आँखों को छुआ और वह अंधा हो गया।

''पुजारी ने मुझसे प्रार्थना की, 'मेरे प्रभु अपने सेवक को चंगा कर दें। फिर मैं उनको देवता के दर्शन कराऊँगा।'

''तब मैंने उसकी आँखों पर फूँक मारी और उसकी दृष्टि वापस आ गई। वह फिर काँपा और मुझे तीसरे कक्ष में ले गया। वहाँ कोई मूर्ति नहीं थी। न ही किसी तरह का कोई चित्र था। सिर्फ एक धातु के फ्रेम में जड़ा हुआ आईना वेदी पर रखा था।

''मैंने पुजारी से पूछा, 'देवता कहाँ हैं?'

''उसने जवाब दिया, 'यहाँ कोई देवता नहीं, सिवाय इस आईने के जो आप देख रहे हैं। क्योंकि यह ज्ञान का आईना है। इसमें धरती और आकाश की सभी वस्तुएँ प्रतिबिंबित होती हैं। सिर्फ इसे देखनेवाले का चेहरा इसमें प्रतिबिंबित नहीं होता। इसे वह प्रतिबिंबित नहीं करता, क्योंकि फिर इसमें देखनेवाला ज्ञानी हो जाएगा। इसके अलावा यहाँ और भी आईने हैं, लेकिन वे सम्मति के आईने हैं।

'केवल यही ज्ञान का आईना है और जिनके पास यह है, वे सबकुछ जानते हैं। न ही उनसे कोई बात छिपी रहती है। जिनके पास यह है, वे ज्ञानहीन नहीं होते। इसलिए यह देवता है और हम इसकी पूजा करते हैं।' मैंने उस आईने में देखा। वह वैसा ही था, जैसा उसने कहा था।

''फिर मैंने एक विचित्र हरकत की। खैर, मैंने जो किया, अब वह बड़ी बात नहीं, क्योंकि जिस घाटी में मैंने वह ज्ञान का आईना छिपाकर रखा है, वह यहाँ से एक दिन की यात्रा की दूरी पर है। एक बार फिर मुझे अपने शरीर में प्रविष्ट होने दो और तुम सारी दुनिया में सबसे अधिक ज्ञानी बन जाओगे। मुझे अपने अंदर प्रविष्ट होने दो और फिर तुम्हारे जैसा ज्ञानी कोई दूसरा न होगा।

''लेकिन युवा मछुआरे ने हँसकर कहा, 'प्रेम ज्ञान से बेहतर होता है और छोटी मत्स्यकन्या मुझसे प्रेम करती है।'

'''नहीं। ज्ञान से बढ़कर और कुछ नहीं होता।' आत्मा ने कहा।

'''प्रेम बेहतर है।' युवा मछुआरे ने जवाब दिया। वह वापस समुद्र की गहराई में कूद गया और उसकी पुरुषरूपधारी आत्मा रोती हुई दलदल की तरफ चली गई।

''जब दूसरा साल खत्म हुआ तो उसकी आत्मा एक बार फिर समुद्र तट पर आई। उसने फिर युवा मछुआरे को पुकारा तो वह गहराई से ऊपर आकर बोला, 'तुमने मुझे क्यों बुलाया?'

''आत्मा ने जवाब दिया, 'पास आओ, ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ। मैंने बहुत सी आश्चर्यजनक चीजें देखी हैं।'

''वह पास आकर उथले पानी में लेट गया। उसने अपना सिर अपने हाथ पर टिका लिया और सुनने लगा।

आत्मा ने उससे कहा, ''तुमसे दूर जाने के बाद मैंने दक्षिण का रुख किया और उधर चल पड़ी। दक्षिण से वह आता है, जो बहुमूल्य है। छह दिनों तक मैंने अश्तेर नगर को जानेवाले राजमार्ग पर यात्रा की। मैं उस लाल धूल भरे मार्ग पर छह दिन चली, जिस पर से होकर तीर्थयात्री आते-जाते हैं। सातवें दिन जब मैंने अपनी नजर उठाकर देखा तो शहर मेरे पैरों तले था। यह एक वादी में था।

''इस शहर के नौ दरवाजे हैं। इनमें से हरेक के सामने एक काँसे का घोड़ा है। जब भी बद्दू पहाड़ों से आते हैं, यह घोड़ा हिनहिनाता है। दीवारों पर ताँबे की परत चढ़ी है और उनपर बनी पहरे की मीनारों की छतें पीतल की हैं। हरेक मीनार पर एक तीरंदाज हाथ में कमान लिये खड़ा रहता है। सुबह होने पर वह एक तीर से घंटे पर चोट करता है और हर शाम एक तुरही बजाता है।

''जब मैं अंदर जाने लगी तो रक्षकों ने मुझे रोककर पूछा कि मैं कौन हूँ। मैंने जवाब में कहा कि मैं एक दरवेश हूँ और मक्का की यात्रा पर जा रहा हूँ। वहाँ एक हरा परदा है और चाँदी के अक्षरों में फरिश्तों के हाथ से लिखी कुरानशरीफ रखी है। वे आश्चर्य से भर उठे और उन्होंने मुझे अंदर जाने दिया।

''अंदर बाजार है। काश तुम मेरे साथ वहाँ होते। वहाँ सँकरे रास्तों में कागज के फानूस बड़ी तितलियों की तरह फड़फड़ाते हैं। जब छतों पर हवा चलती है तो वे इस तरह उठते गिरते हैं, जैसे रंगीन बुलबुले हों। अपनी-अपनी दुकानों के आगे व्यापारी रेशमी कालीनों पर बैठे रहते हैं। उनकी सीधी काली दाढ़ियाँ हैं और वे सोने की जरीवाली पगड़ियाँ पहनते हैं। वे अपनी उँगलियों से कीमती मनकों की माला जपते रहते हैं। उनमें से कुछ लाक्षा, बालछड़ और भारतीय द्वीपों से लाए इत्र बेचते हैं। वे लाल गुलाबों का गाढ़ा तेल, नाखूनों के आकार के लौंग और गंधरस भी बेचते हैं। जब कोई उनसे बात करने के लिए रुकता है तो वे अंगारों पर चुटकी भर लोबान छिड़ककर हवा को सुगंधित कर देते हैं। मैंने वहाँ एक सीरियावासी को देखा। उसके हाथ में नरकुल जैसा एक पतला डंडा था। उसमें से सलेटी रंग का धुआँ निकल रहा था। जब वह जलता था तो उसका रंग वसंत में बादामों के गुलाबी रंग जैसा हो जाता था।

''दूसरे व्यापारी चाँदी के कंगन बेचते थे, जिन पर नीले रंग के फिरोजे जड़े होते हैं। वे पीतल की तार की छोटे मोतियों जड़ी पाजेब, स्वर्णजटित बघनखे और व्याघ्रनखे, छेद किए पन्ने के कर्णफूल और उँगली के लिए छेद करके बनाई गई जेड की अँगूठियाँ बेचते हैं। वहाँ के चायघरों से गिटार बजाने की आवाजें आती हैं। सफेद चेहरोंवाले अफीमची आने-जानेवालों को देखा करते हैं।

''सच में तुम्हें मेरे साथ होना चाहिए था। चतुर शराब बेचनेवाले काले चमड़े की मशकें लिये भीड़ में अपना रास्ता बनाते चाहते हैं। उनमें से अधिकांश शहद जैसी मीठी शीराज की शराब बेचते हैं। वे इसपर गुलाब की पंखड़ियाँ छिड़ककर धातु के छोटे प्यालों में अपने ग्राहकों को देते हैं। मंडी में खड़े फल विक्रेता तरह-तरह के फल बेचते हैं। वे बैंगनी छिलकेवाली पकी अंजीरें, टोपाज जैसे पीले कस्तूरी जैसी खुशबूवाले खरबूजे, गलगल और गुलाबी सेब, सफेद अंगूरों के गुच्छे, गोल सुनहरे-सुनहरे लाल संतरे, हरे-सुनहरी नींबू बेचते हैं। एक बार मैंने एक हाथी जाते देखा। उसकी सूँड़ हल्दी और सिंदूर से सजी थी और उसके कानों पर लाल रंग की रेशमी जाली थी। वह एक दुकान के सामने खड़ा हो गया और उसके संतरे खाने लगा। लोग सिर्फ हँस रहे थे। तुम सोच भी नहीं सकते कि वे लोग कैसे विचित्र हैं। जब वे खुश होते हैं तो वे पक्षी बेचनेवाले के पास जाकर पिंजरे में बंद पक्षी खरीदते हैं और उसे मुक्त करके हवा में उड़ा देते हैं, ताकि उनकी खुशी और भी बढ़ जाए। जब वे दु:खी होते हैं तो अपने, आपको काँटों से कोंचते हैं, ताकि उनकी पीड़ा कम न हो जाए।

''एक शाम मैंने कुछ हब्शी बाजार में एक भारी पालकी ले जाते देखे। यह सुनहरे कामवाले बाँसों की बनी थी और इसके डंडे लाख जड़े थे, जिन पर पीतल के मोर बने हुए थे। उसके झीने परदों पर नन्हे मोतियों से सुंदर कढ़ाई की हुई थी। जब वह पास से गुजरी तो एक पीले चेहरेवाली मायावी औरत ने मुसकराकर मेरी तरफ देखा। मैंने पालकी का पीछा करना शुरू कर दिया। हब्शियों ने अपनी चाल तेज कर दी और मुझ पर गुर्राए। पर मैंने इसकी परवा नहीं की। एक अजीब सी उत्सुकता मुझ पर हावी हो गई थी।

‘‘अंत में वे एक चौकोर से सफेद घर पर रुके। उसमें एक भी खिड़की न थी। सिर्फ एक दरवाजा था, जो किसी मकबरे के दरवाजे सा लगता था। उन्होंने पालकी नीचे रखी और दरवाजे को ताँबे के हथौड़े से तीन बार खटखटाया। हरे चमड़े का कफ्तान पहने एक अमेरिकन ने छोटे दरवाजे से बाहर झाँका। उन्हें देखने के बाद उसने दरवाजा खोल दिया। उसने जमीन पर एक कालीन बिछाया और वह औरत उसपर पैर रखते हुए उतरी। जब वह अंदर जा रही थी तो उसने एक बार फिर मुड़कर मेरी तरफ देखा और मुसकराई। मैंने कभी किसी का इतना पीला चेहरा नहीं देखा।

‘‘जब चाँद निकला तो मैं फिर से उसी जगह पर आकर उस घर को तलाशने लगा, लेकिन वह घर वहाँ था ही नहीं। तब मैं समझ गया कि वह औरत कौन थी और मुझे देखकर क्यों मुसकराई थी।

‘‘निश्चय ही तुम्हें मेरे साथ होना चाहिए था। नए चाँद के दिन होनेवाली दावत के दिन युवा सम्राट् अपने महल से मसजिद में नमाज पढ़ने के लिए आया। उसके बालों और दाढ़ी को गुलाब की पंखड़ियों से रँगा गया था। उसके गालों पर सोने का महीन बुरादा मला गया था। उसकी हथेलियाँ और पैरों के तलवे केसर से पीले रँगे हुए थे।

‘‘हर सुबह वह अपने महल से चाँदी की जरी की पोशाक पहने निकलता था। हर शाम वह वहाँ सोने की जरीवाली पोशाक में लौटता था। लोग धरती पर लेट जाते थे और अपने चेहरे ढक लेते थे। पर मैंने ऐसा कभी नहीं किया। मैंने एक खजूर बेचनेवाले की दुकान पर खड़े होकर उसका इंतजार किया। जब सम्राट् ने मुझे देखा तो रुक गया। मैंने शांत खड़े रहना पसंद किया और उसे झुककर सलाम भी नहीं किया। लोग मेरा यह साहस देखकर हैरान थे। उन्होंने मुझे शहर से भाग जाने की सलाह दी। मैंने उनकी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया और जाकर विचित्र प्रकार के देवताओं की मूर्तियाँ बेचनेवालों के पास आसन जमाया, जिनसे उनकी इस दस्तकारी की वजह से नफरत की जाती थी। जब मैंने उनको बताया कि मैंने क्या किया है तो उनमें से हरेक ने एक देवप्रतिमा मुझे दी।

‘‘उस रात जब मैं अनारवालों की गलीवाले चायघर में मसनद पर लेटकर चाय की चुस्कियाँ ले रही थी, सम्राट् के सिपाही आए और मुझे महल में ले गए। जब मैंने महल में प्रवेश किया तो वे मेरे अंदर जाते ही मेरे पीछे के हर दरवाजे को बंद करके उसमें जंजीर डाल देते थे। अंदर एक बहुत बड़ा अहाता था, जिसके चारों तरफ आच्छादित रास्ता बना हुआ था। उसकी दीवारें सफेद सेलखड़ी की थीं, जिनमें जगह-जगह नीली और हरी टाइलें जड़ी थीं। उसके खंभे हरे पत्थर के थे और फर्श किसी तरह के गुलाबी पत्थर का था। मैंने इससे पहले ऐसी कोई चीज नहीं देखी थी।

‘‘जब मैं अहाते से होकर गुजरी तो छज्जे पर खड़ी दो बुरकेवाली औरतों ने मेरी तरफ देखकर मुझे गाली दी। सिपाही तेजी से आगे बढ़ रहे थे और उनके भालों के कुंदे चमकीले फर्श से टकराकर आवाज कर रहे थे। उन्होंने हाथी दाँत का एक जड़ाऊ दरवाजा खोला और मैंने खुद को सात तल के एक सींचे हुए बगीचे में पाया। वहाँ चंद्रकांत, कुमुदिनी और रुपहले अगरु थे। किसी बिल्लोर की पतली नली जैसा एक फव्वारा धुँधली फिजा में टँगा हुआ था। सरू के पेड़ बुझी मशालों से लग रहे थे। उनमें से एक पर बैठी बुलबुल गा रही थी।

‘‘बगीचे के आखिरी छोर पर एक छोटा मंडप था। जब हम उसके पास पहुँचे तो दो हिजड़े हमें मिलने आगे आए। चलते समय उनके स्थूल शरीर डोलते थे। अपनी पीली पलकोंवाली आँखों से वे मेरी ओर उत्सुकता से देख रहे थे। एक ने सिपाहियों के प्रमुख को एक ओर ले जाकर उससे फुसफुसाहट में कुछ बात की। दूसरे ने आतंकित करनेवाले हाव-भाव से एक जामुनी रंग के मीनेवाली डिबिया से सुगंधित टिकिया निकाली और उसे चबाना शुरू कर दिया।

‘‘कुछ देर बाद सिपाहियों के प्रमुख ने उनको जाने को कहा। वे महल लौट गए। उनके पीछे-पीछे हिजड़े भी धीमी

चाल से चल दिए। वे पेड़ों से मीठे शहतूत तोड़ते हुए चल रहे थे। एक बार उनमें से जो बड़ा था, उसने मुड़कर मेरी तरफ देखा और कुटिलता से मुसकराया।

''सिपाहियों के मुखिया ने मुझे मंडप के द्वार की तरफ संकेत किया। मैं निडर होकर आगे बढ़ी और भारी परदा एक ओर सरकाकर अंदर दाखिल हुई।

''युवा सम्राट् शेर की खालवाले एक काउच पर अधलेटा था। उसकी कलाई पर एक बाज था। उसके पीछे पीतल का टोप पहने एक रक्षक खड़ा था, जो कमर तक उघाड़ बदन था। काउच के पास ही एक मेज पर इस्पात की भारी शमशीर रखी थी।

''मुझे देखकर सम्राट् ने भौंहें चढ़ाकर पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं इस शहर का सम्राट् हूँ।' मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया।

''उसने शमशीर की तरफ अपनी उँगली से इशारा किया और रक्षक ने वह शमशीर उठा ली। फिर तेजी से मेरी ओर आते हुए उसने पूरे जोर से मुझ पर वार किया। वह मुझमें से होकर गुजर गई, लेकिन मुझे कुछ नहीं हुआ। वह आदमी फर्श पर गिर पड़ा। डर के मारे उसके दाँत बजने लगे और वह काउच के पीछे जा छिपा।

''सम्राट् तेजी से उठ खड़ा हुआ। उसने हथियारों के एक आधार से भाला लेकर मुझ पर फेंका। मैंने रास्ते में ही उसे पकड़ लिया और उसके फल को तोड़कर दो टुकड़े कर दिए। उसने मुझ पर एक तीर छोड़ा। मैंने अपना हाथ उठाया और तीर बीच रास्ते में रुक गया। फिर उसने सफेद चमड़े की एक पेटी से खंजर निकालकर अपने रक्षक की गरदन में भोंक दिया, ताकि वह जिंदा रहकर उसके इस अपमान की कहानी किसी से कह न सके। वह आदमी किसी कुचले साँप की तरह तड़पा और उसके होंठों से लाल झाग के बुलबुले निकलने लगे।

''उसके मरने के बाद सम्राट् मुझसे मुखातिब हुआ। उसने अपने माथे पर छलक आया पसीना एक गुलाबी रंग के गोटेदार रूमाल से पोंछा और बोला, 'क्या आप कोई पैगंबर हैं, मुझे जिनको हानि नहीं पहुँचानी चाहिए, या आप किसी पैगंबर के बेटे हैं, जिनको मैं हानि नहीं पहुँचा सकता? मेरी आपसे विनती है कि इसी रात यह शहर छोड़ दें, क्योंकि जब तक आप यहाँ हैं, मैं इसका मालिक नहीं।'

''मैंने उसे जवाब दिया, 'इसके लिए अपना आधा खजाना तुम्हें मुझे देना होगा।'

''वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे बगीचे में ले गया। सिपाहियों का मुखिया मुझे देखकर हैरान हो गया। जब हिजड़ों ने मुझे देखा तो उनके घुटने काँपने लगे और वे मारे डर के धरती पर गिर पड़े।

''महल में लाल पत्थर की आठ दीवारोंवाला एक कमरा है। उसकी छत पीतल की है, जिससे दीप लटके रहते हैं। सम्राट् ने उनमें से एक दीवार को छुआ तो वह खुल गई। हम मशालों से रोशन एक रास्ते से होकर गुजरे। दोनों तरफ के ताकों में बड़े-बड़े शराब रखनेवाले मटके रखे थे, जो चाँदी के सिक्कों से भरे थे। जब हम रास्ते के बीचोबीच पहुँचे तो सम्राट् ने एक गुप्त शब्द बोला, जिससे संगमूसा का एक दरवाजा खुल गया। उसने अपनी आँखों को चौंधे से बचाने के लिए उनपर अपना हाथ रख लिया।

''तुम विश्वास नहीं कर सकोगे कि जगह कितनी शानदार थी। वहाँ बड़े-बड़े कछुए के खोल मोतियों से भरे रखे थे। बहुत बड़े आकार के मूनस्टोन माणिकों के ढेर के साथ रखे थे। सोना हाथी की चमड़ी के थैलों में भरा रखा था। सोने का चूर्ण चमड़े की थैलियों में भरा था।

''वहाँ बिल्लौर के प्यालों में उपल थे, जेड के प्यालों में नीलम थे। हाथी दाँत की पतली रकाबियों में गोल हरे पन्ने तरतीबवार सजे हुए रखे थे। एक कोने में रेशम के थैले भरे हुए रखे थे। उनमें से कुछ में फीरोजे भरे हुए थे, कुछ में लहसुनिया। हाथी दाँत की तुरहियों में बैंगनी एमिथिस्ट भरे हुए थे तो पीतल की तुरहियों में काँचेडोंग स्फटिक भरे

थे। देवदार के खंभों पर पीले लिंक्स की मालाएँ लटकी हुई थीं। अंडाकार ढालों में मदिरा के रंग के और घास जैसे हरे रंग के माणिक्य भरे रखे थे। और यह मैंने वहाँ जो कुछ था, उसका बहुत थोड़ा सा अंश ही बताया है।

''सम्राट् ने अपने चेहरे पर से हाथ हटाने के बाद मुझसे कहा, 'यह मेरा खजाना है। इसमें से आधा आपका है, जैसा कि मैंने आपसे वादा किया था। मैं आपको ऊँट और ऊँटसवार दूँगा, जो आपके आदेश का पालन करेंगे और आपके हिस्से का खजाना दुनिया के जिस भी कोने में आप ले जाना चाहेंगे, पहुँचाकर आएँगे। यह काम आज रात ही हो जाना चाहिए, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि सूर्य, जो मेरे पिता हैं, यह देखें कि इस शहर में कोई ऐसा भी है, जिसे मैं मार नहीं सकता।'

''लेकिन मैंने उसे जवाब दिया, 'इस खजाने का सारा सोना आपका है। चाँदी भी आपकी है। सभी बहुमूल्य वस्तुएँ और जवाहरात भी आपके हैं। मुझे इनकी कोई आवश्यकता नहीं। मैं इनमें से कुछ भी आपसे नहीं लूँगा सिवाय उस अँगूठी के, जो आपकी उँगली में है।'

''सम्राट् ने मुँह बनाकर कहा, 'यह तो सिर्फ सीसे की अँगूठी है। इसकी कोई कीमत नहीं। इसलिए अपना खजाना लेकर आप मेरे शहर से विदा हो जाएँ।'

'' 'नहीं', मैंने जवाब दिया, 'मैं उस सीसे की अँगूठी के सिवाय और कुछ न लूँगा। मुझे मालूम है, उसपर क्या खुदा हुआ है और किस उद्देश्य से।'

''सम्राट् काँप उठा। उसने मुझसे विनती की, 'मेरा सारा खजाना लेकर यहाँ से चले जाओ। जो आधा मेरा है, वह भी आपका हुआ।'

''इसपर मैंने एक विचित्र हरकत की। क्या किया उस बात को जाने दो। उस गुफा में, जो यहाँ से एक दिन की यात्रा की दूरी पर है, मैंने वह समृद्धि की अँगूठी छिपाकर रखी है। वह जगह यहाँ से सिर्फ एक दिन की यात्रा की दूरी पर है और वह अँगूठी तुम्हारा इंतजार कर रही है। जिसके पास वह अँगूठी होगी, वह दुनिया के सभी राजाओं से भी अमीर होगा। आकर उसे ले लो, तब दुनिया की सारी दौलत तुम्हारी होगी।''

युवा मछुआरा हँसकर बोला, ''प्यार धन-दौलत से बेहतर है और छोटी मत्स्यकन्या मुझे प्यार करती है।''

''नहीं, धन-दौलत से बेहतर कुछ नहीं होता।'' आत्मा ने कहा।

''प्यार बेहतर है।'' युवा मछुआरे ने जवाब दिया और इसके साथ ही वह गहरे समुद्र में गोता लगा गया। उसकी पुरुषवेशधारी आत्मा रोते हुए दलदल की तरफ चली गई।

जब तीसरा साल गुजर गया तो आत्मा ने फिर समुद्र तट पर आकर युवा मछुआरे को पुकारा। वह गहरे समुद्र से ऊपर आकर बोला, ''तुमने मुझे क्यों पुकारा?''

आत्मा ने जवाब दिया, ''पास आओ, ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ, क्योंकि मैंने बहुत ही आश्चर्यजनक चीजें देखी हैं।''

वह पास आकर उथले पानी में अधलेटा हो गया। उसने अपने हाथ पर सिर टिका लिया और सुनने लगा।

आत्मा ने उससे कहा, ''मुझे एक नए नगर की ऐसी सराय का पता है, जो नदी किनारे है। मैं वहाँ नाविकों के साथ बैठी। वे दो तरह की मदिरा पी रहे थे। वे जौ की रोटियाँ खा रहे थे। तेजपात पर सिरके के साथ परोसी छोटी मछलियाँ खा रहे थे। जब हम वहाँ बैठे मौज-मस्ती कर रहे थे, तभी वहाँ एक बूढ़ा चमड़े का कालीन लेकर आया। उसके हाथ में अंबर के दो श्रृंगोंवाली वीणा थी। कालीन जमीन पर बिछाने के बाद उसने पंख की कलम से वीणा के तारों को छेड़ा। तुरंत अपना चेहरा ढके एक लड़की दौड़ती हुई वहाँ आ गई। वह हमारे सामने नाचने लगी।

''उसने अपना चेहरा जाली से ढका हुआ था, लेकिन वह नंगे पाँव थी। वे कालीन पर छोटे सफेद कबूतरों की तरह

नाच रहे थे। मैंने इससे बढ़कर शानदार दृश्य पहले कभी नहीं देखा और जिस शहर में वह नाचती है, वह यहाँ से सिर्फ एक दिन की यात्रा की दूरी पर है।''

जब युवा मछुआरे ने आत्मा के ये शब्द सुने तो उसे याद आया कि छोटी मत्स्यकन्या के पैर नहीं थे और वह नाच नहीं सकती थी। उसके मन में एक प्रबल इच्छा जाग उठी। उसने मन-ही-मन कहा, 'यहाँ से एक दिन की यात्रा की दूरी ही तो है। उसके बाद मैं अपनी प्रेमिका के पास लौट सकता हूँ।' वह हँसकर उथले पानी में खड़ा हो गया और तट की तरफ चलने लगा।

सूखे किनारे पर पहुँचने के बाद वह एक बार फिर हँसा। उसने अपनी आत्मा की तरफ बाँहें फैला दीं। आत्मा ने खुशी की एक चीख मारी और उसमें समा गई। मछुआरे ने अपने सामने अपने शरीर की छाया देखी, जो आत्मा का शरीर था।

आत्मा ने उससे कहा, ''हमें यहाँ रुकना नहीं चाहिए। तुरंत चल देना चाहिए, क्योंकि समुद्री देवता ईर्ष्यालु होते हैं। उनके पास आदेश पालन करनेवाले दानव भी होते हैं।''

इसलिए वे फौरन चल दिए। सारी रात वे चाँदनी में चलते रहे। फिर अगला सारा दिन धूप में चलते रहे। उस दिन शाम को वे एक शहर में पहुँचे।

युवा मछुआरे ने आत्मा से पूछा, ''क्या यही वह शहर है, जिसमें वह नर्तकी नाचती है, जिसका तुमने जिक्र किया था?''

आत्मा ने कहा, ''नहीं, यह वह शहर नहीं। वह दूसरा शहर है। फिर भी हम इसमें प्रवेश करेंगे।'' वे लोग अंदर गए और सड़कों से होकर गुजरे। जब वे सर्राफा बाजार से गुजर रहे थे तो युवा मछुआरे ने एक दुकान में चाँदी का एक प्याला देखा। आत्मा ने कहा, ''वह प्याला उठाकर अपने पास छिपा लो।''

उसने प्याला उठाकर अपने लबादे की तह में छिपा लिया। फिर वे तेजी से शहर से बाहर निकल गए।

जब वे शहर से तीन मील की दूरी पर आ गए तो युवा मछुआरे ने प्याला दूर फेंक दिया और आत्मा से त्योरी चढ़ाकर कहा, ''तुमने मुझे प्याला उठाकर छिपाने के लिए क्यों कहा? ऐसा करना तो बहुत बुरा होता है।''

आत्मा ने जवाब में कहा, ''शांत हो जाओ, शांत हो जाओ।''

अगले दिन की शाम को वे एक और शहर पहुँचे। युवा मछुआरे ने अपनी आत्मा से पूछा, ''क्या यही वह शहर है जिसमें वह नाचती है, जिसका तुमने जिक्र किया था?''

आत्मा ने जवाब दिया, ''नहीं, यह वह शहर नहीं। यह दूसरा शहर है। फिर भी हम इसमें प्रवेश करेंगे।'' फिर वे उसके अंदर चले गए। जब वे जूते बेचनेवालों के बाजार से गुजर रहे थे तो युवा मछुआरे ने एक बच्चे को पानी के एक बरतन के पास खड़े देखा। आत्मा ने कहा, ''इस बच्चे को पीटो।'' उसने बच्चे को पीटना शुरू कर दिया, जब तक कि वह रोने न लगा। ऐसा करने के बाद वे तेजी से उस शहर के बाहर निकल गए।

जब वे शहर से तीन मील की दूरी पर पहुँचे तो युवा मछुआरे ने खफा होकर आत्मा से कहा, ''तुमने मुझसे बच्चे को पीटने को क्यों कहा? ऐसा करना तो बहुत बुरा होता है।''

आत्मा ने जवाब दिया, ''शांत रहो, शांत रहो।''

तीसरे दिन की शाम को वे एक और शहर पहुँचे। युवा मछुआरे ने आत्मा से पूछा, ''क्या इसी शहर में वह नाचती है, जिसका तुमने जिक्र किया था?''

आत्मा ने जवाब दिया, ''शायद यही वह शहर है। आओ, इसमें प्रवेश करते हैं।''

फिर वे उस शहर के अंदर गए और सड़कों पर घूमने लगे। पर कहीं भी युवा मछुआरे को नदी या उसके किनारे

सराय नहीं दिखी। शहर के लोग विचित्र नजरों से उनकी तरफ देख रहे थे। वह डर गया और आत्मा से बोला, ''चलो, यहाँ से चलते हैं, क्योंकि गोरे पैरों से नाचनेवाली यहाँ नहीं है।''

लेकिन आत्मा ने कहा, ''यहाँ रुकते हैं, क्योंकि अँधेरी रात है और रास्ते में डाकू मिल सकते हैं।''

उसने उसे बाजार में बैठा दिया और वे विश्राम करने लगे। तभी वहाँ से एक व्यापारी अपनी कपड़ों की गाँठ लेकर निकला। उसने एक बाँस के डंडे पर अपनी लालटेन टाँग रखी थी। व्यापारी उससे बोला, ''तुम यहाँ किसलिए बैठे हो, जबकि दुकानें बंद हो चुकी हैं और सबने अपने कपड़ों के गट्ठर बाँध लिये हैं?''

युवा मछुआरे ने जवाब दिया, ''मुझे इस शहर में कोई सराय नहीं मिली, न ही मेरा कोई भाईबंद है, जिसके यहाँ ठहर सकूँ।''

''क्या हम सभी भाईबंद नहीं?'' व्यापारी बोला, ''क्या एक ही ईश्वर ने हमें नहीं बनाया? इसलिए तुम मेरे साथ आओ। मेरे पास एक मेहमान का कमरा है।''

युवा मछुआरा उठकर उस व्यापारी के पीछे चल पड़ा। जब वे एक अनार के बगीचे से होकर उसके घर पर पहुँचे तो व्यापारी उसके हाथ धोने के लिए ताँबे के बरतन में गुलाबजल लेकर आया। फिर उसकी प्यास बुझाने के लिए पके खरबूजे लाया। फिर उसने उसके सामने एक प्याला चावल और मेमने के भुने मांस का टुकड़ा रखा।

जब वह खा-पी चुका तो व्यापारी उसे मेहमान के कमरे में ले गया, ताकि वह आराम से सो सके। युवा मछुआरे ने उसे धन्यवाद दिया और उसके हाथ की अँगूठी को चूमा। फिर बकरी की खाल के कालीन पर लेट गया। जब उसने काले मेमने की ऊन का कंबल ओढ़ लिया तो उसे नींद आ गई।

सुबह होने से तीन घंटा पहले, जबकि अभी भी रात थी, उसकी आत्मा ने उसे जगाकर कहा, ''उठो और व्यापारी के सोने के कमरे में जाओ। उसे मारकर उसका सारा सोना ले लो, क्योंकि हमें उसकी जरूरत है।''

युवा मछुआरा उठा। वह दबे पाँव व्यापारी के कमरे में गया। व्यापारी के पायताने एक तलवार रखी थी। उसके बगल में एक थाल में सोने से भरी नौ थैलियाँ रखी थीं। उसने तलवार पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन जैसे ही उसने तलवार को छुआ, व्यापारी की नींद खुल गई। उसने लपककर अपनी तलवार उठा ली और बोला, ''क्या तुम मेरी अच्छाई का बदला इस तरह बुराई से देना चाहते हो? और मेरी मेहरबानी के बदले मेरा खून बहाना चाहते हो?'' आत्मा ने युवा मछुआरे से कहा, ''उसपर प्रहार करो।'' उसने व्यापारी पर जबरदस्त चोट की, जिससे वह बेहोश हो गया। फिर उसने सोने की नौ थैलियाँ ले लीं। वह अनार के बगीचे से होकर तेजी से भोर के तारे की दिशा में भाग निकला।

जब वे शहर से तीन मील की दूरी पर आ गए तो युवा मछुआरे ने अपनी छाती पीटते हुए आत्मा से कहा, ''तुमने मुझसे व्यापारी को मारकर उसका सोना लेने के लिए क्यों कहा? तुम निश्चय ही बहुत दुष्ट हो।''

उसकी आत्मा ने जवाब दिया, ''शांत रहो, शांत रहो।''

''नहीं'', युवा मछुआरा बोला, ''मुझे चैन नहीं पड़ेगा। क्योंकि जो कुछ तुमने मुझसे कराया है, उससे मुझे घृणा है। मुझे बताओ, तुमने ये सब बुराइयाँ कहाँ से सीखीं?''

उसकी आत्मा ने जवाब दिया, ''जब तुमने मुझे दुनिया में जाने को छोड़ा था तो मुझे साथ ले जाने को दिल नहीं दिया था। तब मैंने ऐसी करतूतें करना सीखा और मुझे ये अच्छी लगती हैं।''

''यह सब बकवास है।'' युवा मछुआरा बुदबुदाया।

''तुम्हें पता है'', आत्मा ने जवाब दिया, ''तुम्हें अच्छी तरह पता है। क्या तुम भूल गए कि तुमने मुझे दिल नहीं दिया था? अब मुझमें कुछ भी सोच-विचार की आदत नहीं। इसलिए न तुम परेशान होओ, न मुझे परेशान करो। शांत

रहो। कोई पीड़ा नहीं है, जो तुम किसी को देते हो, न ही कोई ऐसा आनंद है, जो तुम नहीं पा सकते।''

युवा मछुआरा ये शब्द सुनकर काँप उठा। उसने आत्मा से कहा, ''नहीं, तुम बहुत दुष्ट हो। तुमने मुझे अपने प्यार को भूलने के लिए तैयार कर लिया। तुमने मुझे लोभ में फँसाया और मेरे कदम पाप के रास्ते पर डाले।''

आत्मा ने कहा, ''तुम भूले तो नहीं कि जब तुमने मुझे संसार में भेजा था तो साथ में दिल नहीं दिया था। आओ, एक और शहर में चलकर मजे करते हैं। हमारे पास नौ सोने की थैलियाँ हैं।''

युवा मछुआरे ने सोने की थैलियाँ जमीन पर फेंक दीं और उनको अपने पैरों से रौंदा।

''नहीं'', वह चिल्लाया, ''मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूँगा। न ही अब तुम्हारे साथ कहीं यात्रा करूँगा। जैसे मैंने तुमको पहले दूर भेजा था, वैसे ही अब भी भेज दूँगा। क्योंकि तुमने मेरा कुछ भी भला नहीं किया है।'' इतना कहकर उसने अपनी पीठ चंद्रमा की तरफ कर ली। फिर उसने हरे साँप की चमड़ीवाला, चाकू निकालकर उससे अपने पैरों पर से ही अपनी वह छाया काटने का यत्न किया, जो उसकी आत्मा का शरीर था।

लेकिन आत्मा उसके पास से हिली तक नहीं। न ही उसने उसके आदेश पर कुछ भी ध्यान दिया। उसने कहा, ''जो मंतर तुम्हें उस जादूगरनी ने दिया था, उसका अब कोई असर नहीं होगा। अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी। न ही तुम मेरा संचालन करोगे। कोई आदमी अपने जीवनकाल में एक बार ही अपनी आत्मा को खुद से दूर कर सकता है, लेकिन जो अपनी आत्मा को दोबारा स्वीकार कर लेता है, उसे आत्मा को आजीवन अपने साथ रखना होता है। यही उसकी सजा या उसका पुरस्कार है।''

युवा मछुआरा पीला पड़ गया। वह अपनी मुट्ठियाँ भींचकर चिल्लाया, ''वह जादूगरनी धोखेबाज थी। उसने मुझे यह कभी नहीं बताया।''

''नहीं'', आत्मा ने कहा, ''वह उसके प्रति वफादार थी, जिसकी पूजा करती है और वह सदा उसकी सेविका रहेगी।''

जब युवा मछुआरे को पता चल गया कि वह कभी भी अपनी आत्मा से छुटकारा नहीं पा सकता और यह एक दुष्ट आत्मा है और सदा उसके साथ रहेगी तो वह जमीन पर गिर पड़ा और बिलख-बिलखकर रोने लगा।

जब दिन निकला तो युवा मछुआरे ने आत्मा से कहा, ''मैं अपने हाथ बाँध लूँगा, ताकि तुम्हारे किसी आदेश का पालन न कर सकूँ। अपने होंठ बंद कर लूँगा, ताकि तुम्हारे बताए शब्दों का उच्चारण न कर सकूँ। और मैं उस स्थान पर लौट जाऊँगा, जहाँ मेरी प्रेमिका रहती है। मैं समुद्र के पास लौट जाऊँगा। उस छोटी खाड़ी में भी जाऊँगा, जहाँ वह गाने की अभ्यस्त है। मैं उसे पुकारूँगा और बताऊँगा कि मैंने क्या बुरे काम किए हैं और तुमने मुझसे क्या कुकृत्य कराए हैं।''

आत्मा ने उसे प्रलोभन देते हुए कहा, ''तुम्हारी प्रेमिका कौन है, जिसके पास तुम जाओगे? इस दुनिया में उससे भी बढ़-चढ़कर कई सुंदरियाँ हैं। समेरिया की ऐसी नर्तकियाँ हैं, जो हर तरह की चिड़िया या वन्यप्राणी की तरह नृत्य कर सकती हैं। उनके पैर मेंहदी से रँगे होते हैं और उनके हाथों में ताँबे की छोटी घंटियाँ होती हैं। वे नाचते समय हँसती हैं और उनकी हँसी पानी के कलकल स्वर जैसी स्वच्छ है। मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें वे नर्तकियाँ दिखाऊँगा। तुम पाप-कर्म जैसी बात से क्यों परेशान हो? जो चीज खाने में स्वादिष्ट हो क्या वह खानेवाले के लिए नहीं बनाई गई है? जो पीने में मीठी है, क्या उसमें जहर मिला होता है? परेशान मत होओ और मेरे साथ एक और शहर चलो।

''पास में ही एक छोटा शहर है। उसमें नलिनी के फूलों का बाग है। उस मनोरम बाग में सफेद और नीले मोर पाए जाते हैं। जब वे सूर्य के प्रकाश में अपनी पूँछें फैलाते हैं तो वे हाथीदाँत की तश्तरी जैसी या सुनहरी तश्तरी जैसी लगती हैं। उनको चारा खिलानेवाली उन्हें खुश करने के लिए नाचती हैं। कभी वह अपने हाथों के बल नाचती है,

कभी अपने पैरों से नाचती है।
''वह अपनी आँखों को सुरमे से सजाए रखती है। उसके नथुने अबाबील के पंखों के आकार के हैं। उसके एक नथुने में मोती का बना एक फूल है। वह नाचते समय हँसती है। उसके टखने की चाँदी की पाजेब से घुँघरुओं की झंकार निकलती है। इसलिए अपने, आपको और परेशान मत करो और मेरे साथ उस शहर को चलो।''
लेकिन युवा मछुआरे ने उसकी बात का कोई जवाब न दिया। उसने अपने होंठों पर मौन का ताला लगा लिया और अपने हाथों को रस्सी से कसकर जकड़ लिया। वह वापस उस स्थान के लिए चल पड़ा, जहाँ से आया था। उस छोटी खाड़ी की तरफ भी, जहाँ उसकी प्रेयसी को गाने की आदत थी। उसकी आत्मा ने उसे रास्ते में भी प्रलोभन देने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। न ही उसने कोई ऐसा बुरा काम किया, जिसे करने के लिए आत्मा ने उसे उकसाया। उसके अंदर जो प्यार था उसकी शक्ति ऐसी जबरदस्त थी।
समुद्रतट पर पहुँचकर उसने अपने हाथों की रस्सी खोल दी। उसने अपने होंठों का मौन तोड़ाकर छोटी मत्स्यकन्या को पुकारा, लेकिन उसके पुकारने पर वह आई नहीं। हालाँकि वह उसे दिन भर पुकारता रहा और मिन्नतें करता रहा।
आत्मा ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, ''तुम्हें निश्चय ही अपने प्रेम से थोड़ा ही आनंद मिला है। तुम उस आदमी की तरह हो, जो मरते समय किसी टूटे बरतन में पानी भरता है। तुम्हारे पास जो है, वह तुम दे डालते हो और बदले में तुम्हें कुछ नहीं मिलता। तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि मेरे साथ आओ। क्योंकि मुझे पता है कि मौजमस्ती की घाटी कहाँ है और वहाँ क्या कुछ है।''
लेकिन युवा मछुआरे ने आत्मा को कोई जवाब नहीं दिया। उसने एक चट्टान की दरार में अपना छप्पर का घर बना लिया। वहाँ वह साल भर रहा। हर सुबह उठकर वह मत्स्यकन्या को पुकारता था। उसके बाद हर दोपहर को उसे फिर पुकारता था। रात को वह उसका नाम लेता था, लेकिन फिर भी वह कभी उससे मिलने के लिए समुद्रतल पर नहीं आई। न ही वह उसे समुद्र में कहीं भी मिली। हालाँकि उसने उसे गुफाओं में, हरे पानी में, ज्वार की लहरों में और समुद्रतल के कुओं में खोजा।
उसकी आत्मा ने भी उसे किसी बुराई का प्रलोभन नहीं दिया। न ही उसने किसी भयानक चीज के बारे में उससे फुसफुसाकर बात की। फिर भी वह अपनी आत्मा के विरुद्ध ही था। उसका प्रेम इतना सशक्त था।
साल गुजर जाने के बाद आत्मा ने अपने-आप में सोचा, 'मैंने अपने स्वामी को बुराई के लिए प्रलोभित किया है, लेकिन उसका प्रेम मुझसे अधिक सशक्त है। अब मैं क्यों न उसे अच्छाई का प्रलोभन दूँ! हो सकता है फिर वह मेरे साथ आ जाए।'
फिर उसने युवा मछुआरे से कहा, ''मैंने तुम्हें संसार के आमोद-प्रमोद के बारे में बताया, लेकिन तुमने उसपर ध्यान नहीं दिया। अब मुझे संसार की पीड़ा के बारे में कुछ बताने की अनुमति दो। हो सकता है तुम वह सुनो, क्योंकि सच तो यह है कि पीड़ा इस संसार की स्वामिनी है। ऐसा कोई भी नहीं है, जो इसके पाश से बच निकला हो। कुछ के पास कपड़े नहीं होते तो कुछ के पास रोटी नहीं होती। कुछ विधवाएँ संभ्रांत परिवारों में रहती हैं तो कुछ चीथड़ों में जिंदगी गुजारती हैं। कुष्ठरोगी आपस में लड़ते-मरते हैं और वे एक-दूसरे के प्रति निर्दय होते हैं। भिखारी राजमार्गों के चक्कर लगाते रहते हैं और उनकी जेबें खाली होती हैं। शहरों की सड़कों पर दुर्भिक्ष टहलता है और प्लेग उनके मुख्य द्वार पर बैठी रहती है। आओ, हम चलकर इन स्थितियों में कुछ सुधार करें और कोशिश करें कि ऐसा न हो। तुम यहाँ रुककर अपनी प्रेयसी को कब तक पुकारोगे, जबकि वह तुम्हारी पुकार सुनती तक नहीं? फिर प्रेम है क्या, जो तुम उसे इससे भी बढ़कर तरजीह दोगे?''

लेकिन युवा मछुआरे ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। उसका प्रेम इतना सशक्त था। हर सुबह वह मत्स्यकन्या को पुकारता था। हर दोपहर वह फिर उसे पुकारता था। रात होने पर वह उसका नाम लेता था, लेकिन फिर भी वह कभी उससे मिलने के लिए समुद्रतल से ऊपर नहीं आई। न ही वह उसे समुद्र में कहीं भी खोज पाया। हालाँकि उसने उसे समुद्र की लहरों में, लहरों के नीचे की घाटियों में, जिस समुद्र को रात बैंगनी बना देती है और जिस समुद्र को दिन सलेटी बना देता है, उसमें सब कहीं खोजा।

दूसरा साल भी गुजर गया। युवा मछुआरा जब अपनी छप्परवाली झोंपड़ी में रात को अकेला बैठा था, आत्मा ने उससे फिर बात की। ''देखो, मैंने तुम्हें बुराई से आकर्षित करने की चेष्टा की, मैंने तुम्हें अच्छाई से आकर्षित करने की चेष्टा की, लेकिन तुम्हारा प्रेम मुझसे सशक्त है। इसलिए अब मैं तुम्हें किसी चीज से आकर्षित करने की कोशिश नहीं करूँगी, लेकिन मेरी विनती है कि मुझे अपने दिल में प्रवेश करने दो, ताकि मैं पहले की तरह तुम्हारे साथ एकाकार हो जाऊँ।''

''हाँ, तुम प्रवेश कर सकती हो'', युवा मछुआरा बोला, ''क्योंकि जब तुम दुनिया में दिल के बगैर गई थी, तब तुमने बहुत कष्ट सहे।''

''आह!'' आत्मा ने कहा, ''मैं तुम्हारे दिल में प्रवेश नहीं कर सकती, क्योंकि प्रेम ने तुम्हारे दिल को बुरी तरह घेर रखा है।''

''फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।'' युवा मछुआरे ने कहा।

जब उसने यह कहा तभी समुद्र के अंदर से विलाप की भयंकर आवाजें आने लगीं। इस तरह की आवाज लोगों को तब सुनाई देती थी, जब किसी जलजीव की मृत्यु हो जाए। युवा मछुआरा उछलकर खड़ा हो गया। वह अपनी झुग्गी से समुद्रतट की तरफ भागा। समुद्र की काली लहरें तेजी से तट की तरफ आ रही थीं। उनके साथ चाँदी से भी सफेद कोई चीज थी। वह समुद्रफेन से भी सफेद थी और किसी फूल की तरह लहरों पर हचकोले खा रही थी। लहरों से वह समुद्रफेन पर आई और वहाँ से झाग पर आ गई। फिर वह तट पर आ गई। मछुआरे ने देखा कि उसके पैरों के पास छोटी मत्स्यकन्या का मृत शरीर पड़ा है।

पीड़ा से आहत होकर उसने खुद को उसके पास गिरा दिया। उसने उसके ठंडे लाल होंठों को चूमा और उसके अंबर जैसे बालों का स्पर्श किया। वह उसके पास रेत पर बिलखता हुआ पड़ गया और अपनी साँवली बाँहों में भरकर उसके शरीर को छाती से चिपटा लिया। उसके होंठ ठंडे थे, फिर भी उसने उनका चुंबन लिया। उसके बालों का शहद खारा हो चुका था, फिर भी उसने उसका स्वाद मानो किसी आनंद के साथ लिया। उसने बंद आँखों का चुंबन लिया और उसकी आँखों के कोटर से भी मछुआरे के आँसू बहुत खारे थे।

उसके मृत कानों में भी उसने अपनी करनी की कटु कथा कह डाली। उसने उसके छोटे हाथों को अपने गले में डाल लिया और अपनी उँगलियों से उसकी पतली गरदन का स्पर्श किया। उसकी इस खुशी में कड़वाहट थी और उसकी पीड़ा में विचित्र प्रकार की प्रसन्नता थी।

काला समुद्र उसके और पास आ गया और सफेद फेन किसी कोढ़ी की तरह कराह उठी। अपने सफेद पंजों से समुद्र ने तट को चंगुल में लिया। समुद्र के राजा के महल से एक बार फिर विलाप की चीखें उठीं और सुदूर समुद्र में समुद्री गायकों के तुरही बजाने की आवाजें आईं।

''दूर भाग निकलो'', आत्मा ने चिल्लाकर कहा? ''क्योंकि समुद्र अगर और पास आ गया तो तुमको लील लेगा। दूर भाग चलो, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा दिल तुम्हारे प्रेम की शक्ति से घबराकर मुझसे सट गया है। किसी सुरक्षित स्थान पर भाग निकलो।''

लेकिन युवा मछुआरे ने अपनी आत्मा की आवाज अनसुनी कर दी। उसने छोटी मत्स्यकन्या से कहा, ''प्रेम ज्ञान और विवेक से भी बढ़कर है। वह धन-दौलत से अधिक मूल्यवान् और इनसानों की लड़कियों के पैरों से अधिक सुंदर है। इसे आग जला नहीं सकती। पानी इसे ठंडा नहीं कर सकता। मैंने तुमको सुबह पुकारा और तुम मेरी पुकार पर नहीं आई। चंद्रमा ने तुम्हारा नाम सुना, लेकिन तुमने नहीं। मैंने तुम्हें छोड़ने का बुरा काम किया और अपने ही नुकसान के लिए भटका। फिर भी तुम्हारा प्रेम सदा मेरे साथ रहा और यह सदा बहुत सशक्त रहा। कुछ भी इसके विरुद्ध सफल नहीं हुआ। जबकि मैंने बुराई पर भी नजर डाली, अच्छाई पर भी। अब तुम मर गई हो तो मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ मर जाऊँगा।''

आत्मा ने उसे वहाँ से हटने को कहा, लेकिन उसने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। इतना सशक्त था उसका प्रेम। समुद्र और पास आ गया और उसे अपनी लहरों की चपेट में लेने लगा। जब उसे लगा कि अंत निकट आ रहा है तो उसने अपने पागल होंठों से मत्स्यकन्या के ठंडे होंठों का चुंबन लिया। उसके अंदर उसका दिल टूट गया। जब उसका दिल टूटा तो उसने महसूस किया कि उसका प्रेम कितना परिपूर्ण था। तब आत्मा को उसमें प्रवेश करने का रास्ता मिला और वह अंदर दाखिल हो गई। अब वह पहले की तरह उसके साथ एकाकार हो गई। तभी समुद्र ने युवा मछुआरे को अपनी लहरों से ढक लिया।

सुबह होने पर पादरी समुद्र को आशीर्वाद देने के लिए तट पर आया, क्योंकि वह अशांत रहा था। उसके साथ कुछ अन्य मठवासी, संगीतकार, मोमबत्तीधारक और धूपदानीवाले तथा बहुत से अन्य लोग भी थे।

जब पादरी तट पर पहुँचा तो उसने डूबे हुए मछुआरे को समुद्र की झाग में पड़ा पाया। छोटी मत्स्यकन्या का शरीर उसकी बाँहों में जकड़ा हुआ था। वह तेवर चढ़ाता हुआ पीछे हट गया। फिर जोर से चिल्लाकर बोला, ''मैं समुद्र को या उसमें जो कुछ है, उसे आशीर्वाद नहीं दूँगा। सभी जलजीव शापित हों और उनसे संबंध रखनेवाले सब लोग भी शापित हों। जहाँ तक उसका सवाल है, जिसने प्रेम के प्रभु को भी भुला दिया था, और जो अपनी प्रेयसी के साथ यहाँ प्रभु के न्याय के चलते मरा पड़ा है, उसके और उसकी प्रेमिका के शरीर को ले जाकर धोबीघाट के कोने में दफन कर दो और उसपर किसी तरह का कोई निशान मत बनाओ। किसी को उनकी कब्र की जानकारी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि वे अपने जीवनकाल में शापित थे और अपनी मृत्यु में भी शापित रहेंगे।''

लोगों ने पादरी के आदेश का पालन किया। धोबीघाट के कोने में, जहाँ कोई मधुर बूटी नहीं उगती, उन्होंने एक गहरा गड्ढा खोदकर मृतकों को उसमें गाड़ दिया।

जब तीसरा साल गुजरा तो एक पवित्र दिन पादरी प्रार्थनागृह में आया, ताकि लोगों को प्रभु के घाव दिखा सके और उन्हें ईश्वर के कोप के बारे में बता सके।

जब उसने अपना चोगा पहन लिया और अंदर आकर वेदी के सामने सिर झुका लिया तो उसने देखा कि वेदी अनजाने किस्म के फूलों से सजी थी, जो पहले कभी नहीं देखे गए। वे देखने में विचित्र थे। उनमें अद्भुत रंगीनी और सौंदर्य था। उनकी सुंदरता से वह परेशान हो गया और उसकी मीठी सुगंध उसके नथुनों में समा गई। उसे खुशी तो हुई, पर यह नहीं समझ पाया कि क्यों?

जब उसने मंदिर के द्वार खोलकर उसमें स्थित प्रदर्शिका को सुगंधित कर लिया, और वहाँ आए लोगों को उसमें रखी पवित्र रोटिका दिखाकर उसे वापस लपेटकर रख दिया तो उसने लोगों को ईश्वर के कोप के बारे में बताने के इरादे से संबोधित करना आरंभ किया, लेकिन उन सफेद फूलों की सुंदरता से उसे परेशानी हो रही थी। उनकी मीठी सुगंध उसके नथुनों में घुस रही थी। उसके मुँह से कुछ और ही शब्द निकले और वह ईश्वर के कोप के बारे में नहीं बोला। वह उस ईश्वर के बारे में बोला, जिसका नाम प्रेम है। वह ऐसा क्यों बोला, यह उसे खुद भी पता नहीं

चला।
जब उसने अपना उपदेश खत्म किया तो लोग रोने लगे। पादरी पूजा-सामग्रीवाले कक्ष में वापस चला गया। उसकी आँखों में आँसू थे। उपयाजक आकर उसका पादरी का पहनावा उतारने लगे। उन्होंने उसका श्वेत उत्तरीय, कमरबंद और स्कंधपट ले लिया, लेकिन वह इस तरह खड़ा रहा, जैसे कोई सपने में हो।
जब पहनावा उतारने का काम पूरा हो गया तो उसने उनसे पूछा, ''वेदी पर कौन से फूल थे और कहाँ से आए थे?''
उन्होंने जवाब में कहा, ''वे कौन से फूल हैं, यह तो हम नहीं बता सकते, लेकिन वे धोबीघाट के एक कोने से लाए गए थे।'' पादरी काँप उठा। वह अपने निवास पर आकर प्रार्थना करने लगा।
सुबह-सवेरे जबकि अभी पौ फटी ही थी, वह मठवासियों, संगीतकारों, मोमबत्तीधारकों, और धूपदानीवालों तथा बहुत से अन्य लोगों के साथ समुद्रतट पर आया। उसने वहाँ के हर जीव को आशीर्वाद दिया। वन्यक्षेत्र में नर्तन करनेवाले नन्हे जीवों को भी। पत्तियों में से झाँकते चमकीली आँखोंवाले जीवों को भी। ईश्वर के संसार की प्रत्येक वस्तु को उसने आशीर्वाद दिया। लोग आश्चर्य और खुशी से भर उठे। उसके बाद कभी भी धोबीघाट के उस कोने में किसी तरह के फूल नहीं खिले। वह जमीन पहले की तरह बंजर ही रही। फिर कभी जलजीव उस छोटी खाड़ी में नहीं आए, जैसा कि उनका स्वभाव था। वे समुद्र के किसी अन्य भाग में चले गए।

❑

कैंटरविले का भूत

: 1 :

जब अमेरिकी राजदूत श्री हिरम बी. ओटिस ने कैंटरविले निवास खरीदा तो हर किसी ने कहा कि आपने यह बहुत ही नासमझी का काम किया है, क्योंकि इस स्थान के भुतहा होने में तनिक भी संदेह नहीं था। यहाँ तक कि पूरी निष्ठा के साथ औपचारिकता निभाने के लिए सम्मानित लॉर्ड कैंटरविले ने खुद भी अपनी जिम्मेदारी समझते हुए जायदाद का सौदा होते समय इस बात का जिक्र श्री ओटिस से किया।

''हम खुद भी इस स्थान पर नहीं रहे'', लॉर्ड कैंटरविले ने कहा, ''जब से मेरी ददिया चाची बोल्टन की डचेज डर के मारे बेहोश हो गई थीं, जिससे कि वे फिर कभी उभरकर ठीक ही नहीं हुईं। हुआ यह था कि जब वह डिनर के लिए तैयार हो रही थीं तो किसी कंकाल ने अपने दोनों हाथ उनके कंधे पर रख दिए थे। श्री ओटिस, यह बताना मेरा कर्तव्य है कि इस भूत को मेरे परिवार के अनेक जीवित लोगों ने और यजमानी के पुरोहित सम्माननीय ऑगस्टस डेंप्लर ने भी देखा है। डचेज की दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना के बाद से हमारे युवा सेवकों में से कोई भी हमारे साथ नहीं रहा। लेडी कैंटरविले बरामदे और लाइब्रेरी से रहस्यपूर्ण आवाजें आने के कारण रात को बहुत कम सो पाती थीं।''

''श्रीमान'', राजदूत ने जवाब में कहा, ''मैं सारे फर्नीचर और भूत के भी पैसे दूँगा। मैं एक आधुनिक देश से आया हूँ, जहाँ हमारे पास वे सारी चीजें हैं, जो धन से खरीदी जा सकती हैं। जब हमारी युवा पीढ़ी आपकी सबसे अच्छी गायिकाएँ और अभिनेत्रियाँ वहाँ ले गई हैं, तो मेरे खयाल से अगर यूरोप में भूत नाम की कोई चीज है तो उसे भी हम बहुत जल्दी अपने यहाँ ले जाकर किसी अजायबघर में रखेंगे या फिर उसका सार्वजनिक प्रदर्शन करेंगे।''

''मेरे विचार में भूत है'', लॉर्ड कैंटरविले मुसकराए, ''सन् 1584 से लेकर आज तक लगभग तीन सदियों से वह विद्यमान है और परिवार के किसी भी सदस्य के निधन पर प्रकट होता है।''

''उस अवसर पर तो परिवार का डॉक्टर भी मौजूद रहता है, लॉर्ड कैंटरविले, लेकिन श्रीमान, भूत नाम की कोई चीज नहीं होती और अंग्रेज अभिजात वर्ग के लिए प्रकृति के नियम नहीं बदल सकते।''

''निश्चय ही आप अमेरिकी प्रकृति पर बहुत आस्था रखते हैं'', लॉर्ड कैंटरविले ने श्री ओटिस की अंतिम बात को पूरी तरह न समझते हुए कहा, ''अगर आपको इस घर में भूत के होने से कोई आपत्ति नहीं हो, ठीक है। पर यह न कहिएगा कि मैंने आपको चेताया नहीं था।''

इसके कुछ सप्ताह बाद सौदा संपन्न हो गया। फिर मौसम के बदलने के समय राजदूत और उनका परिवार कैंटरविले निवास रहने के लिए रवाना हुआ।

श्रीमती ओटिस जब वेस्ट 23वीं स्ट्रीट की मिस लुक्रेशिया आर. तापन थीं, न्यूयॉर्क की एक प्रसिद्ध सुंदरी थीं। अब वे बहुत आकर्षक मझली उम्र की सुंदर आँखों और नाक-नक्शेवाली महिला थीं। बहुत सी अमेरिकन महिलाएँ स्वदेश छोड़ने के बाद चिरकालिक अस्वास्थ्यवाला हाल-चाल बना लेती हैं और इसे यूरोपियन परिष्कार समझती हैं, लेकिन श्रीमती ओटिस ने कभी यह गलती नहीं की। उनकी शरीर संरचना बहुत ही अच्छी थी और उनमें बेमिसाल जिंदादिली थी। कई मानी में वे बहुत अंग्रेज थीं। वे इस बात का उदाहरण थीं कि वास्तव में आधुनिक अमेरिकनों में और अंग्रेजों में भाषा के अतिरिक्त बहुत कुछ साझा है। उन्होंने देशभक्ति के किसी जोश में अपने बड़े बेटे का नाम वॉशिंगटन रख दिया था। वह कभी भी इससे खिन्न होने से नहीं चूका। वह हलके भूरे रंग के बालोंवाला आकर्षक सा युवा था। वह न्यूपोर्ट कसीनों में जर्मनों से आगे रहने की ख्याति हासिल कर चुका था और लंदन में भी एक शानदार नृत्य करनेवाले के रूप में मशहूर हो चुका था। उसकी दो ही कमजोरियाँ थीं, चमेली और

अभिजात वर्ग।
इसके अलावा तो वह बहुत ही समझदार था। मिस वर्जीनिया ई. ओटिस पंद्रह साल की बालिका थी। वह किसी हिरनी सी फुर्तीली और मनोरम थी। उसकी बड़ी-बड़ी नीली आँखों में स्वाभाविक उन्मुक्तता झलकती थी। वह बहुत निर्भीक स्वभाव की थी। उसने एक बार दौड़ के मुकाबले में अपने खच्चर पर पार्क में चक्कर काटते हुए लॉर्ड बिल्टिन को आधे चक्कर से हरा दिया था। ड्यूक ऑफ चेशायर इससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसी समय उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। उसके माता-पिता ने उसी रात उसे अश्रूपूरित अवस्था में वापस ईटन भेज दिया था। उसके बाद उन जुड़वाँ का नंबर आता था, जो सबके चहेते होने के कारण पट्टी-सितारे कहलाते थे। वे बहुत हँसमुख लड़के थे और राजदूत महोदय के अतिरिक्त वे ही परिवार में सच्चे रिपब्लिकन थे।
कैंटरविले निवास सबसे पास के रेलवे स्टेशन एस्कॉर्ट से सात मील की दूरी पर था। श्री ओटिस ने फोन करके एक घोड़ागाड़ी मँगाई थी और सब लोग बड़े उत्साह से अपनी यात्रा पर चले। यह जुलाई मास की एक सुहानी शाम थी। हवा में देवदार की खुशबू थी। थोड़ी-थोड़ी देर में उनको कोई वन-कपोत अपनी गुटरगूँ में विचारमग्न सा दिख जाता। या फिर सरसराती झाड़ियों में कहीं पर किसी तीतर का चमकता सीना दिखाई दे जाता। नन्ही गिलहरियाँ सफेदे के पेड़ों से उनको जाते हुए देखतीं। खरगोश अपनी सफेद दुमें हवा में लहराते हुए झाड़ियों और काई से भरे टीलों पर से फुदकते हुए भागते नजर आते। जब उन्होंने कैंटरविले निवास के रास्ते में प्रवेश किया तो अचानक आसमान में बादल छा गए और वातावरण में एक विचित्र प्रकार का सन्नाटा छा गया। कौओं का एक बड़ा झुंड उड़ता हुआ उनके सिरों पर से चुपचाप निकल गया। जब तक वे घर पहुँचे, बारिश की कुछ मोटी बूँदें गिर चुकी थीं।
उनका स्वागत करने के लिए सीढ़ियों पर एक वृद्ध खड़ी थी। वह रेशम की काली पोशाक, सफेद टोपी और एप्रन पहने हुए थी। यह घर की देखरेख करनेवाली श्रीमती ओमने थी, जिसे लेडी कैंटरविले के विशेष अनुरोध पर श्रीमती ओटिस इस पहलेवाले पद पर रहने देने के लिए राजी हो गई थीं। उनके उतरने पर उसने सबका थोड़ा झुककर परंपरागत ढंग से अभिवादन किया और बोली, ''कैंटरविले निवास में आपका मैं स्वागत करती हूँ।''
श्रीमती ओटिस के पीछे चलते हुए वे उत्कृष्ट ट्यूडर हॉल और फिर लाइब्रेरी में गए। यह एक लंबा, कम ऊँचाईवाला, ओक की लकड़ी के पैनलों से सजा कमरा था, जिसके अंतिम छोर पर एक बहुत बड़ी शीशोंवाली खिड़की थी। यहाँ उनके लिए चाय परोसी हुई रखी थी। अपने गुलूबंद, शाल वगैरह उतारने के बाद वे लोग बैठकर चारों तरफ देखने लगे। श्रीमती ओमने उनकी सेवा में खड़ी थी।
अचानक श्रीमती ओटिस ने फर्श पर एक फीका लाल धब्बा अँगीठी के पास देखा। यह आखिर क्या है, इससे अनभिज्ञ उन्होंने श्रीमती ओमने से कहा, ''शायद यहाँ कुछ गिर गया है।''
''जी, श्रीमती'', वृद्ध गृहप्रबंधक ने धीमी आवाज में जवाब दिया, ''उस स्थान पर खून गिरा था।''
''कैसी अरुचिकर बात है'', श्रीमती ओटिस बोलीं, ''मैं बैठक में खून के धब्बे बिलकुल पसंद नहीं करती। इन्हें तुरंत साफ कर दिया जाए।''
वृद्ध ने मुसकराकर उसी धीमी और रहस्यमय आवाज में जवाब दिया, ''ये कैंटरविले की लेडी एलिएनोर के खून के धब्बे हैं। उनके पति सर साइमन द कैंटरविले ने इसी स्थान पर सन् 1575 में उनकी हत्या की थी। सर साइमन उसके बाद नौ साल तक जीवित रहे। फिर अचानक रहस्यमय परिस्थितियों में गायब हो गए। उनका मृत शरीर कभी नहीं मिला, लेकिन उनकी अपराधी आत्मा अभी भी इस स्थान में भटक रही है। इन खून के धब्बों को पर्यटक और अन्य लोग बार-बार देख चुके हैं, लेकिन ये मिटाए नहीं जा सकते।''

‘‘ये सब फिजूल की बातें हैं’’, वॉशिंगटन ओटिस बोला, ‘‘पिंकर्टन का चैंपियन धब्बे हटानेवाला और पैरागॉन का डिटर्जेंट इन्हें दो मिनटों में साफ कर देगा।’’ इससे पहले कि भय से आतंकित गृहप्रबंधक वृद्ध हस्तक्षेप करती, वह घुटनों के बल बैठकर काले अंगराग की बटिया से दिखनेवाले किसी पदार्थ से फर्श को रगड़ रहा था। जरा देर में ही खून के धब्बे गायब हो गए।

‘‘मुझे पता था कि पिंकर्टन से यह साफ हो जाएगा।’’ वह अपने प्रशंसक परिवार की तरफ देखकर विजयी भाव से बोला, लेकिन अभी उसने अपनी बात पूरी ही की थी कि तभी वह कम रोशन कमरा बिजली की तेज चमक से भर उठा और उसकी भयानक कड़क के चलते परिवार के सभी लोग एकाएक उठ खड़े हुए। श्रीमती ओमने बेहोश हो गईं।

‘‘कैसा खराब मौसम है’’, अमेरिकी राजदूत एक चुरुट सुलगाते हुए शांति से बोले, ‘‘मुझे लगता है कि पुराना देहाती इलाका इतनी घनी आबादीवाला हो गया है कि अब उनके पास हर किसी को देने के लिए अच्छा सुहावना मौसम बचा ही नहीं। मेरी तो सदा यही राय रही है कि इंग्लैंड के लिए उत्प्रवास श्रेयस्कर है।’’

‘‘प्रिय हिरम’’, श्रीमती ओटिस बोलीं, ‘‘उस औरत का क्या किया जाए, जो बेहोश हो जाती है?’’

‘‘उसपर छोटी टूट-फूट का जुर्माना करो’’, राजदूत ने जवाब दिया, ‘‘फिर वह कभी बेहोश नहीं होगी।’’ थोड़ी देर बाद श्रीमती ओमने सचमुच होश में आ गई। इसमें कोई संदेह न था कि वह काफी परेशान थी। उसने श्री ओटिस को बड़ी कड़ी चेतावनी दी कि घर पर कोई बड़ी विपत्ति आने के प्रति सावधान रहें।

‘‘श्रीमान, मैंने अपनी आँखों से ऐसी चीजें देखी हैं’’, वह बोली, ‘‘जो किसी भी आस्थावान ईसाई के रोंगटे खड़े कर सकती हैं। न जाने कितनी रातें मैंने उन भयानक घटनाओं की वजह से जागकर काटी हैं, जो यहाँ हुआ करती हैं।’’ श्री ओटिस और उनकी पत्नी ने बड़े प्रेम से उस वफादार महिला को समझाया कि उन्हें भूतों से डर नहीं लगता। अपने नए मालिकों के लिए ईश्वर की कृपा की प्रार्थना करने और अपने वेतन में वृद्धि का आश्वासन मिलने के बाद वह वृद्ध गृहप्रबंधक अपने कमरे में चली गई।

: 2 :

उस रात कमरा बड़ी कर्कषता से कँपकँपाया, लेकिन कोई अनहोनी घटना नहीं घटी, लेकिन जब वे अगली सुबह नाश्ते के लिए नीचे आए तो उन्होंने फर्श पर फिर वही खून के धब्बे देखे। ‘‘मेरे खयाल में यह पैरागॉन डिटर्जेंट का दोष नहीं हो सकता’’, वॉशिंगटन बोला, ‘‘इसे मैंने कई चीजों पर पहले भी आजमाया है। यह जरूर भूत की करतूत है।’’ उसने फिर एक बार धब्बे रगड़कर मिटा दिए, लेकिन अगली सुबह फिर वे धब्बे प्रकट हो गए। तीसरी सुबह भी ऐसा ही हुआ। हालाँकि श्री ओटिस खुद लाइब्रेरी को ताला लगाकर चाबी अपने पास ऊपर ले गए थे। अब तो सारे परिवार को इस मामले में दिलचस्पी हो गई। श्री ओटिस को अब शक होने लगा कि वह भूतों के न होने के बारे में कुछ ज्यादा ही हठधर्मी हो गए थे। श्रीमती ओटिस अतिभौतिक संस्था की सदस्यता लेने की इच्छुक हो गईं और वॉशिंगटन ने अपराध से संबंधित धब्बों के स्थायित्व के बारे में सर्वश्री मायर्स और पोंडमोर को एक लंबा पत्र लिख डाला। उसी रात मायावी अस्तित्व के होने या न होने के बारे में सभी संदेह सदा के लिए दूर हो गए।

वह एक गरम और धूप से भरा दिन था। शाम की ठंडक में सारा परिवार घोड़ागाड़ी में बाहर घूमने गया। वे रात नौ बजे तक नहीं लौट पाए थे। फिर उन्होंने रात को हलका भोजन किया। उस रात भूतों के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई थी, जो कि बाद में इस तरह के मायावी भ्रम का कारण बन जाया करती है। जैसाकि मैंने श्री ओटिस से सुना, उस रात आम सुसंस्कृत अमेरिकन परिवारों में होनेवाली चर्चाओं जैसी ही बातचीत हुई थी। जैसे कि मिस फैनी डेवनपोर्ट का एक अभिनेत्री के तौर पर सराह बर्नहाट से बहुत बेहतर होना। अच्छे अंग्रेज घरों में भी हरी मक्की, गेहूँ के केक

और दलिया मुश्किल ही मिलना। सामाजिक व्यक्तित्व के विकास में बोस्टन का महत्त्व, रेलयात्रा में माल-असबाब के परीक्षण का महत्त्व, लंदन के अटक-अटककर बोलने के मुकाबले न्यूयॉर्क के उच्चारण की मधुरता आदि। उस बातचीत में अतिप्राकृतिक की कोई चर्चा नहीं हुई थी। न ही सर साइमन द कैंटरविले के बारे में किसी तरह की कोई बात की गई थी। ग्यारह बजे परिवार के सभी सदस्य सोने चले गए थे और उसके आधे घंटे बाद बत्तियाँ बुझा दी गई थीं। कुछ देर बाद उनके कमरे के बाहरवाले बरामदे से आनेवाली विचित्र प्रकार की आवाज से श्री ओटिस की नींद खुल गई। यह किसी धातु के खनकने जैसी आवाज थी, जो लगातार पास आती लग रही थीं। वह तुरंत उठ खड़े हुए। उन्होंने एक दियासलाई जलाकर समय देखा। रात का ठीक एक बजा था। वह एकदम शांतिचित्त थे। उन्होंने अपनी नब्ज भी देखी, जो बिलकुल ठीक चल रही थी। विचित्र आवाज अभी भी आ रही थी। इसके साथ ही उन्होंने किसी के कदमों की आवाज भी स्पष्ट रूप से सुनी। उन्होंने अपने स्लीपर पहने, दराज से एक छोटी चौकोर शीशी निकाली और दरवाजा खोला। उन्होंने धुँधली चाँदनी में अपने ठीक सामने भयानक शक्ल के एक बूढ़े आदमी को देखा। उसकी आँखें दहकते अंगारे जैसी लाल थीं। उसके लंबे सफेद बालों के कुंडल उसके कंधे तक गिर रहे थे। उसके बहुत बीते जमाने के कपड़े फटे पुराने थे। उसकी कलाइयों और टखनों में भारी हथकड़ी और बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं।

''श्रीमान'', श्री ओटिस बोले, ''मुझे आपसे अवश्य ही आग्रह करना चाहिए कि इन जंजीरों को कुछ तेल दे लें। आपके इस उपयोग के लिए मैं टेमेनी राइजिंग सन लुब्रीकेटर की एक छोटी शीशी ले आया हूँ।'' कहा जाता है कि यह एक बार के प्रयोग में ही काफी असर दिखाता है। हमारे यहाँ के कई संभ्रांत लोगों के इस आशय के कुछ प्रमाणपत्र भी इसके आवरण पर हैं। मैं यह शयनकक्ष की मोमबत्तियों के पास आपके लिए रख देता हूँ। अगर आपको जरूरत पड़े तो और देने में मुझे खुशी होगी।'' इतना कहने के बाद अमेरिकी राजदूत ने वह शीशी संगमरमर की मेज पर रख दी और दरवाजा बंद करके सोने चले गए।

कुछ देर तक तो कैंटरविले का भूत अपने स्वाभाविक क्रोध में चुपचाप खड़ा रहा। उसके बाद शीशी को जोर से फर्श पर पटकने के बाद वह बरामदे में भागता चला गया। वह अजीब तरह से कराह रहा था और उसके शरीर से हरी रोशनी निकल रही थी। जिस समय वह बड़ी ओक की सीढ़ियों तक पहुँचा, एक दरवाजा अचानक खुला। उसमें से सफेद कपड़े पहने दो छोटी आकृतियाँ प्रकट हुईं। फिर एक बड़ा तकिया भूत के सिर पर से होता हुआ गुजरा। अब समय नष्ट करने की गुंजाइश नहीं थी। इसलिए वह बच निकलने के लिए चौथे आयाम का प्रयोग करते हुए लकड़ी की तख्तबंदी में से गायब हो गया।

बाएँ पार्श्व के एक गुप्त कमरे में पहुँचने के बाद वह चंद्रमा की एक किरण के सहारे साँस लेने के लिए रुका। उसने अपनी स्थिति को समझने का प्रयास किया। अपने तीन सौ साल के शानदार और लगातार कॅरियर में कभी भी उसका इतना अपमान नहीं हुआ था। उसने उस डचेज के बारे में सोचा, जो अपने हीरों और लैस के साथ आईने के सामने खड़ी हुई थी कि उसने उसे डराकर बेहोश कर दिया था। उसने उन चार नौकरानियों के बारे में सोचा, जिनको उसने केवल परदे की आड़ में से अपने दाँत दिखाए थे। उस पादरी के बारे में सोचा, जो देर रात लाइब्रेरी से आ रहा था तो उसने उसकी मोमबत्ती बुझा दी थी। उसके बाद से वह सदा के लिए स्नायविक विकार से पीड़ित होकर सर विलियम गल की देखरेख में रहे थे। और वह वृद्ध मैडम ट्रैमोविलॉक जिनकी एक दिन बहुत सुबह आँख खुलने पर उन्होंने एक कंकाल को आरामकुरसी पर बैठे देखा था तो एक हफ्ते तक दिमागी बुखार की चपेट में रहीं। उससे छुटकारा पाने पर वे गिरजाघर की शरण में गईं और कुख्यात संशयवादी मसियर द वाल्टायर से सदा के लिए नाता तोड़ लिया। उसे वह भयानक रात याद आई, जब दुष्ट लॉर्ड कैंटरविले को अपनी बैठक में गले में

घुटन से छटपटाते हुए पाया गया था। उनके गले के आधे रास्ते में धोखे से हथियाए हीरे मिले थे। मरते समय उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने चार्ल्स जेम्स फॅक्स को इस तरकीब से क्राकफील्ड के हीरों के विनिमस में 50,000 पाउंड का धोखा दिया था, लेकिन भूत ने उनको ये हीरे निगलने के लिए विवश किया।
अपने सारे महान् कारनामे उसे इस तरह याद आए। वह खानसामा भी याद आया, जिसने खिड़की के शीशे पर एक हरे हाथ को दस्तक देते देखकर खुद को गोली मार ली थी। सुंदरी लेडी स्टटफील्ड को अपने गले में पाँच उँगलियों के जलाने के निशान छिपाने के लिए गले में एक काला मखमल का बैंड पहनना पड़ता था। अंतत: उसने राजा के विहारस्थल के अंतिम छोरवाले ताल में डूबकर जान दे दी थी। किसी सच्चे कलाकार के उत्साह के साथ उसने अपने सारे कारनामों को याद किया। फिर उसके होंठों पर अपनी आखिरी करतूत को याद करके एक कड़वी मुसकान तैर गई, जब वह लाल रुबैन या गलघोंटू बेब के नाम से जाना गया था या जब खून पीनेवाला बक्सले हब्शी माना गया था। उसने ऐसे-ऐसे कारनामे अंजाम दिए थे और अब ये आधुनिक अमेरिकन न जाने कहाँ से आ गए थे, जो उसे राइजिंग सन लुब्रिकेंट दे रहे थे और उसके सिर पर तकिए फेंक रहे थे। यह असहनीय था।
आज तक किसी भूत के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं किया गया। इसलिए उसने बदला लेने का इरादा किया। वह सुबह होने तक इसकी योजना बनाते हुए गहरी सोच में डूबा रहा।

: 3 :

अगली सुबह जब ओटिस परिवार नाश्ते की मेज पर मिला तो उन्होंने भूत के बारे में विस्तार से चर्चा की। अमेरिकी राजदूत इस बात से कुछ नाराज थे कि उनकी भेंट को स्वीकार नहीं किया गया। ''मेरा भूत को किसी तरह का व्यक्तिगत आघात पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन इस बात पर गौर करते हुए कि वह कितने लंबे समय से इस घर में रह रहा है, उसपर तकिए फेंकना बहुत अच्छी बात नहीं थी।'' इस बात को सुनते ही दोनों जुड़वाँ जोर से हँस पड़े। ''इसके अलावा'', उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, ''अगर वह राइजिंग सन लुब्रिकेंट नहीं लेना चाहता तो हमें उससे उसकी जंजीरें ले लेनी चाहिए। शयनकक्ष के बाहर इस तरह का शोर होने पर आराम से सोना असंभव है।''
उनके सप्ताह के बाकी दिन बिना किसी परेशानी के बीते। अगर कोई ध्यान आकर्षित करनेवाली बात थी तो यह कि लाइब्रेरी के फर्श से खून के धब्बे निरंतर साफ करने पड़ते थे। यह वाकई अजीब बात थी, क्योंकि दरवाजे पर श्री ओटिस हर रात ताला लगा देते थे और खिड़कियों को भी ठीक से बंद कर दिया जाता था। इन धब्बों का गिरगिट का सा बदलता रंग भी टिप्पणी का विषय रहा। किसी सुबह तो वह भारतीय लाल होता, फिर यह सिंदूरी हो जाता या उसके बाद चटक बैंगनी। एक सुबह जब वे अमेरिकी ईसाई मतानुसार पूजा करने के लिए आए तो उन्होंने देखा कि धब्बे का रंग पन्ने सा हरा है। इन बहुरूपदर्शी परिवर्तनों ने स्वभावत: सब का बहुत मनोरंजन किया। हर शाम इस मामले को लेकर शर्तें लगाई जाने लगीं। इस मजाक में नन्ही वर्जीनिया कभी शामिल नहीं हुई। वह खून के धब्बे देखकर परेशान सी हो जाती थी। जिस दिन उसने उनको हरा देखा, वह रोई भी।
भूत का दूसरा दर्शन रविवार की रात को हुआ। उस रात जब वे सोने गए थे उसके थोड़ी देर बाद ही हॉल में अचानक कुछ गिरने की जोरदार आवाज हुई। वे भागे-भागे नीचे गए। उन्होंने देखा कि एक पुराने कवच का पहनावा अपने आधार से पत्थर के फर्श पर गिरा हुआ है। एक ऊँची पीठवाली कुरसी पर बैठा कैंटरविले का भूत चेहरे पर पीड़ा के निशान लिये अपना घुटना सहला रहा है। दोनों जुड़वाँ अपने साथ अपनी छर्रेवाली बंदूक लाए थे। उन्होंने तुरंत दो छर्रे उसकी तरफ दागे। उनका निशाना ऐसा अचूक था, जो निरंतर अभ्यास से ही हासिल किया जा सकता है। अमेरिकी राजदूत ने उसे अपनी पिस्तौल की मार में रखते हुए कैलीफोर्निया के शिष्टाचार के अनुरूप

अपने हाथ ऊपर उठाने को कहा। भूत ने गुस्से की एक चीख मारी और तेजी से उसके सामने से होता हुआ गायब हो गया। उसके जाने से वॉशिंगटन ओटिस की मोमबत्ती बुझ गई। अब वे सब घुप्प अँधेरे में थे। सीढ़ियों के ऊपर पहुँचने के बाद वह कुछ सँभला और उसने अपना भयानक अट्टहास करने का फैसला किया। इसे उसने एक से अधिक बार बहुत उपयोगी पाया था। कहा जाता है कि इससे लॉर्ड रेकल के बाल एक ही रात में सफेद हो गए थे। इसने लेडी कैंटरविले की तीन फ्रांसीसी गृहशिक्षिकाओं को महीना पूरा होने से पहले ही काम छोड़ने की चेतावनी देने को बाध्य कर दिया था। इसलिए उसने अपना सबसे भयानक अट्टहास किया, जब तक कि पुराना महराबी छत बार-बार गूँजा नहीं, लेकिन यह भयानक प्रतिध्वनि अभी रुकी ही थी कि एक दरवाजा खुला और श्रीमती ओटिस एक आसमानी रंग के गाउन में बाहर निकलीं। ''मेरे विचार में तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं'', वे बोलीं, ''मैं तुम्हारे लिए डॉ. डोबेल के टिंचर की एक बोतल ले आई हूँ। अगर तुम्हें बदहजमी हो गई है तो उसके लिए यह दवा बहुत कारगर है।'' भूत ने उनकी तरफ गुस्से से देखा और स्वयं को एक बड़े काले कुत्ते में परिवर्तित करने की तैयारी करने लगा। इस कारनामे के लिए वह बहुत मशहूर था और इसी के कारण परिवार के डॉक्टर ने लॉर्ड कैंटरविले के चाचा सम्माननीय थॉमस हॉर्टन को स्थायी मूर्खता का रोगी बताया था, लेकिन आती हुई पदचाप के कारण वह अपने इरादे को पूरा करने में थोड़ा हिचक गया। जुड़वाँ भाइयों को अपने पास आया देखकर उसने कब्रिस्तानवाली गहरी कराह भरी और खुद को थोड़ा टिमटिमाता बनाकर गायब हो गया।

अपने कमरे में पहुँचने के बाद वह पूरी तरह टूट गया। उसपर जबरदस्त घबराहट का दौरा पड़ा। जुड़वाँ भाइयों की बेहूदा हरकतें और श्रीमती ओटिस का भौतिकवाद उसके लिए असह्य था। उसे सबसे अधिक निराश इस बात ने किया था कि वह कवचवाला लिबास पहनने में असफल रहा था। उसका विचार था कि कवचधारी देखकर आधुनिकतम अमेरिकनों के भी रोंगटे खड़े हो जाएँगे। अपने राष्ट्रीय कवि लांगफैलो के प्रति उनके मन में कुछ सम्मान तो अवश्य होगा, जिसकी सुंदर कविताओं से वह स्वयं भी अभिभूत था और उस जमाने में घंटों उनमें लीन रहता था, जब कैंटरविले शहर में रहते थे। इसके अलावा यह उसका अपना कवच था। उसने इसे केनिलवर्थ प्रतियोगिता में पहना था और स्वयं महारानी तक ने इसकी प्रशंसा की थी, लेकिन जब उसने इसे पहना तो इसके भारी वक्षरक्षक के भार से वह इतना दब गया कि पत्थर के फर्श पर गिर पड़ा। इससे उसके घुटने पर बहुत चोट आई और दाहिने हाथ की उँगलियों की गाँठें भी छिल गईं।

इसके बाद कुछ दिनों तक उसकी तबीयत बहुत खराब रही। वह अपने कमरे से बाहर भी बहुत कम निकला। सिर्फ उसे खून के धब्बे बनाए रखने के लिए निकलना पड़ता था, लेकिन अपना पूरा ध्यान रखने पर उसकी तबीयत ठीक हो गई। उसने फिर से अमेरिकी राजदूत और उसके परिवार को आतंकित करने का इरादा किया। उसने अपने प्रकट होने के लिए शुक्रवार 17 अगस्त का दिन तय किया। उसने सारा दिन अपनी कपड़ों की अलमारी को देखने में बिताया। अंत में उसने लाल परोंवाला एक लंबा भद्दा हैट और कलाइयों और गले में झालर लगा कफन पसंद किया। उसके साथ एक जंग लगा खंजर भी ले लिया। शाम के समय जबरदस्त तूफान के साथ जोर की बारिश हुई। हवा इतनी तेज थी कि उस पुराने घर के सभी खिड़की-दरवाजे बज रहे थे। यानी उस दिन ऐसा मौसम था, जो उसे बहुत पसंद था। उसकी योजना इस प्रकार थी—वह दबे पाँव वॉशिंगटन ओटिस के कमरे में जाकर पलंग के पैताने से उसपर गिलबिजाएगा। उसके बाद हलके संगीत के स्वरों के साथ अपनी गरदन में तीन बार खंजर भोंकेगा। वह वॉशिंगटन ओटिस से खासतौर पर नाराज था। उसे पता था कि वही पिंकर्टंस पैरागॉन डिटर्जेंट से प्रसिद्ध कैंटरविले खून के धब्बे मिटाता है। उस दुस्साहसी युवक को डराने के बाद वह अमेरिकन राजदूत और उनकी पत्नी के कमरे में जाएगा। वहाँ वह श्रीमती आर्टिस के माथे पर अपना चिपचिपा हाथ रखेगा और साथ ही उसके डर से काँपते पति

के कान में मुरदाघर के भयावह रहस्य फुसफुसाएगा। नन्ही वर्जीनिया के बारे में उसने अभी कुछ सोचा न था। वह सुंदर और सौम्य थी। उसने कभी उसका अपमान भी नहीं किया था। अलमारी में से आती कुछ बनावटी कराहें शायद उसके लिए काफी होंगी। अगर इनसे भी उसकी नींद नहीं खुली तो वह उसके पलंगपोश को अपनी डरावनी उँगलियों से खींचना शुरू कर देगा। जहाँ तक जुड़वाँ भाइयों का सवाल था, उनको सबक सिखाने का तो उसने पक्का इरादा कर लिया था। सबसे पहला काम तो वह यह करेगा कि उनकी छाती पर चढ़ बैठेगा, ताकि वे किसी भयानक सपने से होनेवाली झुरझुरी से काँप जाएँ। चूँकि उनके पलंग बहुत पास-पास थे, इसलिए दूसरा काम यह होगा कि हरे मुरदे की शक्ल में उनके बीचोबीच खड़ा होकर उनको डर से हिलने-डुलने लायक भी न छोड़े। अंत में कफन उतारकर सफेद कंकाल के रूप में सारे कमरे में रेंगना शुरू कर देगा। आँखों को अपने मशहूर डंब डोनियलवाले किरदार में मटकाएगा, जिसका बहुत प्रभाव देख चुका है।

साढ़े दस बजे उसे परिवार के सोने जाने की आहट मिली। कुछ देर तक तो वह जुड़वाँ भाइयों की हँसने की तीखी आवाजों से परेशान सा रहा। दूसरे स्कूली बच्चों की तरह वे भी सोने से पहले अपना मन बहलाव कर रहे थे, लेकिन सवा ग्यारह बजे तक सबकुछ एकदम शांत हो गया। आधी रात को उसने धावा बोला। उल्लू खिड़कियों के शीशों से टकरा रहे थे। पुराने सदाबहार के पेड़ पर से कौआ काँव-काँव कर रहा था। हवा किसी भटकी आत्मा की तरह कराहती हुई सी घर के चारों तरफ से गुजर रही थी, लेकिन ओटिस परिवार आनेवाली विपदा से बेखबर सो रहा था। बारिश और तूफान की आवाजों के बावजूद वह अमेरिकी राजदूत के खर्राटे साफ सुन रहा था। वह दबे पाँव तख्तबंदी से बाहर निकला। उसके निर्मम दुष्ट चेहरे पर एक कुटिल मुसकराहट थी। जब वह बड़ी खिड़की के सामने से गुजर रहा था तो चंद्रमा ने बादल से अपना मुँह ढाँप लिया।

वह किसी दुष्ट छाया सा तैरता हुआ आगे बढ़ रहा था। ऐसा लगता था कि जब वह गुजर रहा था तो अँधेरे को भी उससे नफरत हो रही थी। एक बार उसे लगा कि कोई आवाज हुई है। वह रुक गया, लेकिन जरा देर में उसे पता चल गया कि यह लाला फार्म से कुत्ते के भौंकने की आवाज आई है। वह सोलहवीं शताब्दी की गालियाँ बकता हुआ आगे बढ़ता गया। वह आधी रात के माहौल में बार-बार अपना जंग लगा खंजर लहरा रहा था। आखिरकार वह उस बरामदे के छोर पर पहुँच गया जो अभागे वॉशिंगटन के कमरे को जाता था। वहाँ आकर वह जरा देर को रुका। हवा उसके लंबे सफेद बालों को उसके सिर पर लहरा रही थी और मुरदे के भयानक बेनाम कफन को अपने झकोरों से तोड़मरोड़ रही थी। घड़ी ने पंद्रह मिनट गुजरने की आवाज की तो उसने समझ लिया कि अब समय आ गया है। वह मन-ही-मन हँसकर कोने पर घूमा, लेकिन इसके साथ ही वह डर से बिलखते हुए पीछे हटा। उसने अपना पीला चेहरा अपने लंबे कंकाली हाथों से ढक लिया। उसकी आँखों के सामने एक भयानक आकृति थी। किसी तराशी मूर्ति की तरह स्थिर और किसी पागल आदमी के सपने की तरह डरावनी। उसका सिर गंजा और चमकदार था। उसका सफेद चेहरा गोल और मोटा था। ऐसा लगता था कि उसकी घिनौनी हँसी ने उसके चेहरे को विकृत करके स्थायी रूप से हँसती आकृति में बदल दिया था। उसकी आँखों से लाल रोशनी की किरणें निकल रही थीं। उसका मुँह आग का भयानक कुआँ था। उसका बर्फीला लिबास हूबहू उसके अपने लिबास जैसा ही था। उसके सीने पर विचित्र सी पुरानी लिखावट में एक तख्ती लगी हुई थी। उसपर शर्म जैसा शब्द था। साथ ही जघन्य पापों और अपराधों की सूची थी। उसके दाहिने हाथ में चमकते इस्पात का एक बाज था।

उसने खुद इससे पहले कोई भूत नहीं देखा था। अत: उसका बहुत अधिक डर जाना स्वाभाविक ही था। उस भयावह भूत पर एक और नजर डालने के बाद वह अपने कमरे की तरफ भागा। उसके पैर अपने लंबे कफन के परिधान में उलझ रहे थे। जाते-जाते उसने अपना खंजर राजदूत के घुटनों तक के लंबे जूतों में फेंक दिया, जहाँ वह

सुबह खानसामा को मिला। अपने निजी कमरे में पहुँचकर वह अपने छोटे गुदड़ी के बिस्तर पर धड़ाम से जा गिरा। उसने कपड़ों में अपना सिर छिपा लिया। कुछ समय बाद उसके अंदर की कैंटरविले की साहसी आत्मा जागी और उसने सुबह होते ही दूसरे भूत से बात करने का इरादा किया। अत: पौ फटते ही जब रुपहली रोशनी ने अभी पहाड़ी के शिखर को छुआ ही था, वह उस स्थान पर लौटा, जहाँ उसने वह विकराल भूत देखा था। उसने सोचा कि एक भूत से दो भूत भले। वह अपने नए दोस्त की मदद से जुड़वाँ भाइयों से आसानी से निबट सकेगा, लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसने जो दृश्य देखा, उससे उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। भूत को कुछ हो गया था, क्योंकि सुबह की हलकी रोशनी में उसने देखा कि उसकी खोखली आँखों में रोशनी न थी। चमकदार बाज उसके हाथ से गिर पड़ा था। वह अजीब से तरीके से दीवार के सहारे खड़ा था। उसने दौड़कर उसे अपनी बाँहों में ले लिया। तभी उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उस भूत का सिर टूटकर फर्श पर गिर पड़ा। उसका धड़ लुढ़क सा गया। उसने देखा कि उसके हाथ में एक सफेद डोरिए का परदा है। इसके साथ ही एक सफाई करनेवाला ब्रश, एक रसोईघर का बड़ा चाकू और खोखला शलगम उसके पैरों पर गिर पड़ा। इस अचानक परिवर्तन को समझ पाने में असमर्थ उसने जल्दी से उस तख्ती को पकड़ा जिस पर कुछ लिखा था। उसने भयभीत आँखों से इन शब्दों को पढ़ा —

अरे, बूढ़े खूसट भूत!

तुम अकेले मौलिक प्रेत हो। अपनी नकल से सावधान! वे सब झूठे हैं।

अब उसे सारी बात समझ में आ गई। उसके साथ धोखा हुआ था, उसके प्रयासों को व्यर्थ किया गया था और उसे उल्लू बनाया गया था। उसकी आँखों के आगे पुराना कैंटरविले का हुलिया तैर गया। उसने अपने बिना दाँतों के मसूड़ों को पीसा। उसने अपने हाथों को पुराने अंदाज में सिर के ऊपर उठाते हुए उस समय को याद करते हुए शपथ ली, जब चैंटिक्लियर के दो बार दुंदुभी बजाने से खूनखराबा होता था और हत्याएँ दबे कदमों से चला करती थीं।

अभी उसने अपनी शपथ पूरी ही की थी कि दूर के किसी निवास की लाल टाइलोंवाली छत पर से कोई कौआ बोला। वह एक कड़वी लंबी हँसी हँसकर कुछ देर रुका। उसने घंटों तक इंतजार किया, लेकिन किसी कारण से कौआ फिर नहीं बोला। अंत में साढ़े सात बजे नौकरानियों के आ जाने से उसे अपना भयानक जागरण त्यागना पड़ा। वह अपनी व्यर्थ की आशा और उद्देश्य की असफलता के बारे में सोचता हुआ सुस्त कदमों से अपने कमरे में लौट आया। वहाँ आकर उसने पुरानी बहादुरी के कारनामोंवाली कई पुस्तकों को देखा, जिनका वह बहुत शौकीन था। उसने देखा कि जब भी इस तरह शपथ ली जाती थी, चैंटिक्लियर दोबारा प्रकट हो जाता था। ''उन घृणित शरारतियों का सत्यानाश हो'', वह बड़बड़ाया, ''मेरा वह भी वक्त था, जब अपने मजबूत भाले से ऐसों का गला छेद सकता था।'' उसके बाद वह आराम से सोने के लिए एक सीसे के ताबूत में चला गया और शाम तक वहाँ सोता रहा।

: 4 :

अगले दिन भूत बहुत थका हुआ और कमजोर था। पिछले चार हफ्तों की तीव्र उत्तेजना का दुष्प्रभाव उसपर पड़ने लगा था। उसका स्नायुतंत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ था और वह जरा सी आवाज पर ही चौंक उठता था। पाँच दिनों तक वह अपने कमरे में ही पड़ा रहा। अंत में उसने फैसला किया कि लाइब्रेरी के फर्श पर खून के धब्बे बनाना छोड़ देगा। अगर ओटिस परिवार इन्हें नहीं चाहता तो वह इनके योग्य भी नहीं। वे अपेक्षाकृत निम्न स्तर का जीवनयापन करनेवाले लोग थे, जो प्रतिभासित दृश्य प्रपंच के महत्त्व को समझने लायक न थे। भूतों के चमत्कारिक

दर्शन और सूक्ष्म शरीर का विकास एक अलग ही मामला है, जो उसके नियंत्रण में नहीं। बरामदे में हफ्ते में एक बार प्रकट होना और हर महीने के पहले और तीसरे बुधवार को बड़ी खिड़की के सामने खड़े होकर गिलबिलाना उसका परम कर्तव्य था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अपनी इस जिम्मेदारी से किस तरह सम्मानपूर्वक छुटकारा पा सकता है। यह सच है कि उसका जीवन बहुत बुरा रहा है। इसके साथ ही वह सभी अतिप्राकृतिक चीजों के प्रति अत्यंत निष्ठावान भी रहा है।

लिहाजा अगले तीन शनिवार उसने आधी रात से तीन बजे रात तक गलियारे के लगातार चक्कर लगाए। उसने हरसंभव सावधानी बरती कि न तो दिखाई दे, न उसकी आहट आए। उसने अपने जूते उतार दिए। पुराने दीमक खाए तख्तों पर यथासंभव दबे पाँव ही चला। उसने एक बड़ा काला मखमल का लबादा पहना। उसने यह भी ध्यान रखा कि अपनी जंजीरों पर राइजिंग सन लुब्रिकेंट का बराबर इस्तेमाल करे। हालाँकि यह अंतिम सावधानी बरतने में उसे काफी कठिनाई हुई। एक रात जब परिवार रात का भोजन कर रहा था, वह श्री ओटिस के शयनकक्ष में जाकर वहाँ से बोतल उठा लाया। पहले तो उसे थोड़ा अपमान सा महसूस हुआ, लेकिन बाद में उसने महसूस किया कि इस अन्वेषण के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है। आखिर काफी हद तक यह उसके उद्देश्य की पूर्ति करता था। इस सब के बावजूद वह छेड़खानी से नहीं बच सका। गलियारे में हमेशा रस्सियाँ तान दी जाती थीं, जिनसे वह अँधेरे में टकरा जाता था। एक अवसर पर जब वह ब्लैक आइजक के वेश में था, वह जुड़वाँ भाइयों के परदेवाले कमरे के प्रवेश से लेकर ओक की लकड़ी की सीढ़ी के ऊपरी सिरे तक बनाई चिकनी फिसलन से फिसलकर बुरी तरह गिरा था। इस अंतिम अपमान से वह इतना गुस्सा गया कि उसने अपनी गरिमा और सामाजिक हैसियत दिखाने का एक अंतिम प्रयास करने का फैसला कर डाला। उसने अपने प्रख्यात दुस्साहसी रूपर्ट या बिना सिर के सामंत का किरदार बनाकर अगली रात को ही गुस्ताख जुड़वाँ लड़कों के पास जाने का इरादा किया।

वह अपने इस छद्मवेश में पिछले सत्तर साल से प्रकट नहीं हुआ था। तब उसने सुंदरी लेडी बारबरा मूडिश को ऐसा डराया था कि वह वर्तमान लॉर्ड कैंटरविले के दादा से अचानक सगाई तोड़कर खूबसूरत जैक कैस्टलेटन के साथ गेटनाग्रीन भाग गई थी। उसने एलान किया था कि दुनिया की कोई भी ताकत उसे ऐसे परिवार में शादी करने को राजी नहीं कर सकती, जो ऐसे भयानक भूत को अपनी छत पर झुटपुटे में टहलने की इजाजत देता हो। बेचारे जैक को बाद में एक द्वंद्व युद्ध में लॉर्ड कैंटरविले ने टनब्रिजवेल में मार डाला था। लेडी बारबारा इस सदमे से एक साल गुजरने से भी पहले ही टनब्रिजवेल में मर गई। यानी हर लिहाज से यह किरदार अत्यंत सफल रहा, लेकिन अतिप्राकृतिक के रहस्यों की दृष्टि से या वैज्ञानिक शब्दावली में यों कहें कि उच्च-प्राकृतिक संसार में इस तरह का रूप भरना बहुत मुश्किल काम था। भूत को इस तरह तैयार होने में पूरे तीन घंटे लग गए। जब वह तैयार हो गया तो अपने हुलिए से पूरी तरह संतुष्ट था।

इस वेश के मुताबिक उसने चमड़े के बड़े घुड़सवारीवाले जूते पहने थे। ये उसके नाप से कुछ बड़े थे। उसे दो पिस्तौलों में से एक ही मिली। पर कुल मिलाकर वह संतुष्ट था। रात के सवा एक बजे वह तख्तबंदी से बाहर निकलकर गलियारे की तरफ बढ़ने लगा। जुड़वाँ भाइयों के कमरे में पहुँचने पर, जिसे उसकी झालरों के रंग के कारण नीला शयनकक्ष कहा जाता था, उसने देखा कि दरवाजा अधखुला था। अपने प्रवेश को प्रभावशाली बनाने के लिए उसने एक ही झटके में दरवाजा पूरा खोल दिया। तभी पानी का एक भारी जग उसके ऊपर आ गिरा। वह पूरी तरह सराबोर हो गया। उसका बायाँ कंधा इसकी चोट से कुछ इंच ही बच गया था। इसके साथ ही उसे पलंग से दबी हँसी की आवाजें सुनाई दीं। उसके स्नायुतंत्र को ऐसा झटका लगा कि वह तुरंत जितनी तेजी से हो सका अपने कक्ष की ओर भागा। अगले दिन वह सख्त सर्दी से पीड़ित होकर पड़ा रहा। उसे सिर्फ इस बात की तसल्ली थी कि

अपना सिर अपने साथ नहीं ले गया था, वरना परिणाम अत्यंत गंभीर होते।

अब तो उसने उन अशिष्ट अमेरिकनों को डराने का भी विचार त्याग दिया, लेकिन वह अपने नियमानुसार गलियारे में घूमता जरूर था। अपने पैरों में वह पतले स्लीपर पहनता और तेज हवा से बचने के लिए गले में मोटा लाल गुलूबंद लपेटे रहता। जुड़वाँ भाइयों के किसी संभावित हमले से अपनी रक्षा के लिए वह पुराने जमाने की एक छोटी पिस्तौल भी साथ रखता। 19 सितंबर को उसपर अंतिम हमला हुआ। वह उस दिन को पूरी तरह निरापद समझ सीढ़ियों से उतरकर बड़े हॉल की तरफ गया था। वह अब कैंटरविले परिवार के पारिवारिक चित्रों का स्थान पाए अमेरिकी राजदूत और उनकी पत्नी के बड़े फोटो पर व्यंग्य भरी टिप्पणी करके अपना दिल बहला रहा था। वह एक लंबा साफ-सुथरा कफन सलीके से पहने हुए था जिसपर कब्रिस्तान की मिट्टी के धब्बे थे। उसने पीले लिनन की पट्टी अपने जबड़े पर बाँधी हुई थी। वह एक लालटेन और कब्र खोदनेवाली कुदाल लिये था। असल में वह चार्टसे बखार के मुरदाखसोट के वेश में था। यह उसके बहुत उत्कृष्ट छद्मवेशों में से एक था जिसे कैंटरविले कभी भूले न होंगे। क्योंकि यह उनके पड़ोसी लॉर्ड रूफोर्ड से उनके झगड़े का असली कारण था। रात के सवा दो बजे थे। वह निश्चिंत था कि इस वक्त कोई हिल भी नहीं रहा होगा। यह देखने के लिए कि क्या खून के धब्बों के कुछ निशान बचे हैं, वह लाइब्रेरी की तरफ बढ़ रहा था। तभी एक अँधेरे कोने से अचानक दो काली आकृतियाँ उसपर झपट पड़ीं । वे अपनी बाँहें अपने सिरों के ऊपर लहरा रही थीं। वे उसके कानों में जोर से 'बू हू' चिल्लाईं।

जैसा कि इन परिस्थितियों में नितांत स्वाभाविक था, बुरी तरह संत्रस्त होकर वह सीढ़ियों की तरफ भागा, लेकिन वहाँ वॉशिंगटन ओटिस एक बड़ा सिंचाईवाला फव्वारा लिये उसका इंतजार कर रहा था। अपने शत्रुओं से ऐसे चारों तरफ घिरे और इस तरह खदेड़े जाने पर वह लोहे की सलाखोंवाली बड़ी अँगीठी में गायब हो गया। उसकी किस्मत अच्छी थी कि अँगीठी तब जल नहीं रही थी। वह सलाखों के बीच से होकर चिमनी से होता हुआ धूल, हड़बड़ी और निराशा से भरा अपने कमरे तक पहुँच गया।

इस घटना के बाद वह फिर कभी रात्रि अभियान पर नहीं देखा गया। कई मौकों पर जुड़वाँ भाई उसके इंतजार में रहे। उन्होंने अपने माता-पिता और नौकरों को नाराज करते हुए रास्ते में काष्ठफलों के छिलके भी फैलाए, लेकिन यह सब व्यर्थ गया। जाहिर था कि उसकी भावनाओं को ऐसी ठेस लगी थी कि वह अब प्रकट नहीं हो रहा था। श्री ओटिस ने कई वर्षों से शुरू किया हुआ अपना रिपब्लिकन पार्टी का इतिहास लिखने का काम फिर से आरंभ कर दिया। श्रीमती ओटिस ने एक सामूहिक भोज का आयोजन किया, जिसका आनंद सबने लिया। लड़के अपने गेंद-बल्ले के खेल और ताश के इउक्रे और पोकर जैसे खेलों और दूसरे अमेरिकी राष्ट्रीय खेलों में मस्त हो गए। वर्जीनिया कैंटरविले में अपनी छुट्टियों का अंतिम सप्ताह बिताने आए युवा ड्यूक ऑफ चेशायर के साथ अपने खच्चर पर छोटी सड़कों पर घुड़सवारी करती रही। आम तौर पर यह मान लिया गया कि भूत चला गया है। असल में श्री ओटिस ने लॉर्ड कैंटरविले को इस आशय का एक पत्र भी लिख दिया था, जिसके उत्तर में उन्होंने इस समाचार पर अत्यंत प्रसन्नता प्रकट करते हुए राजदूत और उनकी योग्य पत्नी को बधाई भी दी।

लेकिन ओटिस परिवार धोखे में था, क्योंकि भूत अभी भी घर में था। पर अब वह लगभग अपाहिज सा हो गया था। उसने तय किया था कि अब मामले को जहाँ का तहाँ रहने देगा। तभी उसने सुना कि युवा ड्यूक ऑफ चेशायर उनके यहाँ मेहमान है। उसके दादा के भाई लॉर्ड फ्रांसिस स्टिलटन ने कर्नल कारबरी से एक बार सौ गिन्नियों की शर्त लगाई थी कि वह भूत के साथ पासे का खेल खेलेंगे। अगली सुबह उनको कार्डरूम के फर्श पर लकवे से पीड़ित असहाय अवस्था में पाया गया। वैसे तो वह उसके बाद लंबी उम्र तक जीवित रहे, लेकिन उनके मुँह से सिर्फ इतना ही निकलता था ''दो छिक्के।'' यह कहानी उस समय भी सबको पता थी, लेकिन दोनों कुलीन परिवारों

के सम्मान की खातिर इसका कभी जिक्र नहीं किया जाता था। इसका विस्तृत उल्लेख लॉर्ड टेले के संस्मरणों में था।

इसलिए भूत यह दिखाने के लिए बेताब था कि उसका स्टिलटन परिवार पर अब भी प्रभाव है। उसका खुद का भी उनसे दूर का रिश्ता था। उसकी अपनी रिश्ते की बहन का विवाह इस परिवार के ड्यूक से हुआ था, जिसका कि वंशज युवा ड्यूक ऑफ चेशायर था। अत: उसने वर्जीनिया के इस युवा प्रेमी के सामने भूत साधु के रूप में प्रकट होने की योजना बना डाली। इसका ऐसा जबरदस्त प्रभाव था कि 1764 में वृद्ध लेडी स्टारटप नए साल की पूर्व संध्या को उसे इस वेश में देखने के बाद बुरी तरह चीखी-चिल्लाई थी और उसे रक्ताघात का ऐसा दौरा पड़ा था कि तीन दिन के अंदर ही चल बसी। मरने से पहले उसने अपने निकटतम संबंधी कैंटरविले परिवार को बेदखल करते हुए अपनी सारी दौलत लंदन के अपने अत्तार के नाम कर दी, लेकिन आखिरी मौके पर जुड़वाँ भाइयों की दहशत ने उसे अपना कमरा छोड़ने से रोक दिया और छोटा ड्यूक राजसी शयनकक्ष में शानदार वितानेवाले पलंग पर वर्जीनिया के सपने देखते हुए चैन की नींद सोया।

: 5 :

इसके कुछ ही दिन बाद वर्जीनिया और उसका घुँघराले बालोंवाला बाँका घुड़सवार ब्रोकले के मैदानों में घुड़सवारी करने निकले। वहाँ एक झाड़ी पार करते हुए वर्जीनिया का लिबास फट गया। घर लौटने पर कोई देख न ले, इस इरादे से वह पिछली सीढ़ियों से ऊपर आई। जब वह दीवारदरीवाले कमरे के सामने से गुजरी तो उसने देखा कि दरवाजा खुला हुआ है। उसे ऐसा लगा कि कोई अंदर है। उसने सोचा कि वह उसकी माँ की नौकरानी होगी, जो कभी-कभार कोई काम लेकर उधर आ जाया करती थी। उसने सोचा कि उसे बुलाकर अपने फटे लिबास की मरम्मत करने को कह दूँ। उसे यह देखकर घोर आश्चर्य हुआ कि वहाँ कैंटरविले का भूत था। वह खिड़की में बैठा पेड़ों के सुनहरेपन को हवा में उड़कर बिखरते देख रहा था। पत्तियाँ अपने उन्माद में नाचती हुई लंबे पथमार्ग पर झड़ रही थीं। उसका सिर उसकी हथेली पर टिका हुआ था। उसका सारा अस्तित्व निराशा में डूबा हुआ था। वह इतना एकाकी और जीर्णशीर्ण लग रहा था कि नन्ही वर्जीनिया, जिसका पहले भागकर अपने कमरे में जाने का इरादा था, सहानुभूति से भर उठी। उसने उसे सांत्वना देने का प्रयास करने का मन बना लिया। वह इतनी आहिस्ता से चली और उसकी उदासी इतनी गहरी थी कि जब तक वह उससे बोली नहीं, उसे लड़की के आने का पता ही न चला।

''मुझे आपके लिए बहुत खेद है'', उसने कहा, ''लेकिन मेरे भाई कल ईटन जा रहे हैं। अगर आप अच्छा व्यवहार करें तो कोई आपको तंग नहीं करेगा।''

''मुझसे सद्‍व्यवहार की बात करना बेतुका है'',भूत ने उस प्यारी सी नन्ही बालिका की तरफ देखते हुए कहा, जिसने उससे बात करने का साहस किया था। ''बिलकुल बेतुका है'', वह आगे बोला, ''मुझे अपनी जंजीरें खड़खड़ानी ही होंगी और चाबी के सुराखों से कराहना ही होगा। रात को टहलना ही होगा। अगर तुम्हारा मतलब इनसे है। मेरे बने रहने का यही एकमात्र कारण है।''

''यह अस्तित्व के लिए कोई कारण नहीं। आपको पता है कि आप बहुत बुरे हैं। श्रीमती ओमने ने हमें पहले दिन ही बताया था कि आपने अपनी पत्नी की हत्या की थी।''

''हाँ, मैं यह स्वीकार करता हूँ'',भूत चिड़चिड़ेपन से बोला, ''पर यह तो हमारे परिवार का निजी मामला था, जिसका किसी से कोई वास्ता नहीं।''

''किसी की भी हत्या करना बहुत गलत है।'' नन्ही वर्जीनिया अपने किसी पूर्वज से विरासत में मिली मिठास के साथ बोली।

''मैं इस तरह की सस्ती नैतिकतावाली बातों से नफरत करता हूँ। मेरी पत्नी बहुत साधारण थी। मेरे कालरों को कभी ठीक से कलफ नहीं करवाती थी। उसे पाक कला का तनिक भी ज्ञान नहीं था। मैंने एक शानदार हिरन का शिकार किया था। तुम जानती हो उसने उसे किस हॉल में खाने की मेज पर भेजा? खैर छोड़ो, अब इसका क्या महत्त्व है। अब तो सब खत्म हो चुका है, लेकिन मेरे खयाल में उसके भाइयों ने जिस तरह मुझे भूखा रखकर मारा, वह कोई अच्छी बात नहीं थी, हालाँकि मैंने उसकी हत्या की थी।''

''आपको भूखों मारा? आह, मेरे भूत, मेरा मतलब है सर साइमन, क्या आप भूखे हैं? मेरे पास एक सैंडविच है। क्या आप खाना पसंद करेंगे?''

''नहीं, धन्यवाद! अब मैं कुछ नहीं खाता, लेकिन यह तुम्हारी बहुत कृपालुता है। और तुम अपने भयावह, अशिष्ट, असभ्य, बेइमान परिवार से बहुत भिन्न हो।''

''बस करो'', वर्जीनिया अपना पैर पटकते हुए बोली, ''वह आप हैं जो अशिष्ट, भयावह और असभ्य हैं। जहाँ तक बेईमानी का सवाल है, आपने ही मेरे पेंटबॉक्स से लाइब्रेरी के फर्श पर वे खून के बेहूदा धब्बे बनाने के लिए पेंट चुराए थे। पहले आपने सिंदूरी समेत मेरे सभी लाल रंग ले लिये। मैं सूर्यास्त के चित्र भी नहीं बना पाई। उसके बाद आपने पन्ने जैसा हरा और बसंती पीला ले लिया। अंत में मेरे पास नीला और चीनी सफेद ही बचा रह गया। इनसे मैं सिर्फ चाँदनी के दृश्य ही बना सकी। ये तो देखने में हमेशा उदास करनेवाले और बनाने में कठिन होते हैं। मैंने कभी किसी को आपकी यह बात नहीं बताई, लेकिन यह सारी बात एकदम वाहियात थी। क्या किसी ने कभी हरे रंग का खून भी सुना है?''

''असल में'', भूत जरा दबी जबान से बोला, ''मैं करता भी क्या? आज के जमाने में असली खून पाना बहुत मुश्किल हो गया है। तिस पर तुम्हारे भाई ने पैरागॉन डिटर्जेंट इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। फिर मुझे लगा कि तुम्हारे रंग क्यों न लूँ? जहाँ तक रंग का सवाल है, यह तो हमेशा पसंद का मामला होता है। मसलन कैंटरविले परिवार की रगों में तो हमेशा से नीला (सामंती के लिए अंग्रेजी मुहावरा) खून ही दौड़ता रहा है। इंग्लैंड भर में सबसे ज्यादा नीला। पर मैं जानता हूँ कि तुम अमेरिकन इन बातों की परवा नहीं करते।''

''इस बारे में आप कुछ नहीं जानते। आपके लिए सबसे अच्छा होगा कि उत्प्रवास करें और अपने मस्तिष्क का परिष्कार करें। मेरे पिता आपको खुशी से यात्रा का खर्च दे देंगे। हालाँकि हर तरह की स्पिरिट पर बहुत ज्यादा सीमा शुल्क लगता है, लेकिन सीमा शुल्क विभाग में भी कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि वहाँ के सभी अधिकारी डेमोक्रैट हैं। एक बार आप न्यूयॉर्क पहुँच जाएँ तो मुझे पक्का यकीन है कि आप वहाँ बहुत सफल रहेंगे। मैं बहुत से लोगों को जानती हूँ, जो एक दादा के लिए एक लाख डॉलर तक दे देंगे। और पारिवारिक भूत के लिए तो उससे भी कहीं ज्यादा देने को तैयार हो जाएँगे।''

''मेरे खयाल में मैं अमेरिका पसंद नहीं करूँगा।''

''शायद इसलिए कि हमारे यहाँ खंडहर और विचित्र चीजें नहीं हैं।'' वर्जीनिया ने व्यंग्य किया।

''खंडहर और विचित्रता न सही, तुम्हारी नौसेना और आचरण तो है।''

''शुभ संध्या, मैं पापा से कहूँगी कि जुड़वाँ भाइयों को एक हफ्ते की और छुट्टी दे दें।''

''मिस वर्जीनिया, मत जाओ'', वह बोला, ''मैं बहुत अकेला और उदास हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ? मैं सोना चाहता हूँ, लेकिन नींद नहीं आती।''

''कैसी बेतुकी बात है! इसके लिए तो आपको सिर्फ बिस्तर पर लेटकर मोमबत्ती बुझानी होती है। अलबत्ता कई बार जागते रहना बहुत मुश्किल हो जाता है। खास तौर पर गिरजाघर में, लेकिन सोने में तो कोई कठिनाई नहीं होती।

यहाँ तक कि शिशु भी जानते हैं कि कैसे सोया जाता है, जबकि वे बहुत चतुर नहीं होते।''

''मैं पिछले तीन सौ साल से नहीं सोया हूँ'', उसने उदासी से कहा तो वर्जीनिया की सुंदर नीली आँखें हैरानी से फैल गईं, ''तीन सौ सालों से मैं सोया नहीं, और मैं कितना थक गया हूँ।''

वर्जीनिया बहुत गंभीर हो गई। उसके नन्हे होंठ गुलाब की पत्ती की तरह काँप उठे। वह उसके पास सरक आई और उसके सामने थोड़ा झुककर उसके मुरझाए चेहरे को गौर से देखा।

''बेचारे, बेचारे भूत'', वह बुदबुदाई, ''क्या आपके पास सोने के लिए कोई जगह नहीं?''

''दूर, देवदार के जंगल से परे'', वह धीमी सपनीली आवाज में बोला, ''एक छोटा सा बगीचा है। वहाँ लंबी घनी घास उगती है। वहाँ सितारों जैसे सफेद फूल खिलते हैं। वहाँ बुलबुल रात भर गाती है और ठंडा बिल्लौरी चाँद नीचे देखता है। वहाँ सदाबहार पेड़ सोनेवालों पर अपनी लंबी बाँहें फैला देते हैं।''

वर्जीनिया की आँखें आँसुओं से धुँधली हो गईं। अपना चेहरा हाथों में छिपाकर फुसफुसाई, ''अपका मतलब मौत के बगीचे से है?''

''हाँ, मौत। मौत कितनी सुंदर होती है। नरम भूरी मिट्टी में सो जाना। घास सिर पर अपनी बुनती बुनते रहते हैं और आप शांति को सुनते हैं। वहाँ कोई बीता हुआ कल है, न आनेवाला कल। वहाँ आप समय को भूल जाते हैं। जीवन को भूल जाते हैं। वहाँ शांत हो जाते हैं। तुम मेरी मदद कर सकती हो। तुम मेरे लिए मृत्यु के घर के द्वार खोल सकती हो। क्योंकि तुम्हारे निकट सदा प्यार रहता है। और प्यार मृत्यु से अधिक शक्तिशाली होता है।''

वर्जीनिया काँप उठी। एक ठंडी झुरझुरी उसके सारे शरीर में दौड़ गई। कुछ देर तक चुप्पी छाई रही। उसे लगा जैसे कोई डरावना सपना देख रही है।

उसके बाद फिर भूत बोला। उसकी आवाज हवा की सरसराहट की सी थी।

''क्या तुमने कभी लाइब्रेरी की खिड़की पर लिखी पुरानी भविष्यवाणी पढ़ी है?''

''हाँ, अकसर'', नन्ही बालिका सिर उठाकर उसकी तरफ देखते हुए बोली, ''मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ। वह अजीब से मोटे अक्षरों में लिखी है, जिनको पढ़ना मुश्किल है। उसमें केवल छह लाइनें हैं।''

जब एक सुनहरी बालिका पाप के होंठों को प्रार्थना के लिए राजी कर ले। जब ठूँठ बादाम फल उठे और छोटी बच्ची आँसू ढारे। जब सारा घर निस्तब्ध हो। तब कैंटरविले में शांति स्थापित होगी।

''लेकिन इनका अर्थ मेरी समझ में नहीं आता।''

''इनका अर्थ है'', वह उदासी से बोला, ''कि तुम मेरे पापों के लिए आँसू बहाओ। क्योंकि मेरे पास आँसू नहीं हैं। मेरे साथ मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना करो, क्योंकि मुझमें आस्था नहीं। उसके बाद अगर तुम हमेशा बहुत अच्छी, भली और सौम्य रही हो तो मृत्यु का फरिश्ता मुझ पर दया करेगा। तुम्हें अँधेरे में डरावनी आकृतियाँ दिखाई देंगी। दुष्ट आवाजें तुम्हारे कानों में फुसफुसाएँगी, लेकिन वे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएँगी। क्योंकि एक नन्ही बच्ची की पवित्रता से नरक की ताकतें जीत नहीं सकतीं।''

वर्जीनिया ने कोई जवाब नहीं दिया। भूत ने उसके झुके हुए सुनहरे सिर की तरफ हताश भावना से देखकर अपने पंजे हिलाए। अचानक वह तनकर खड़ी हो गई। उसका चेहरा बहुत पीला पड़ गया था, लेकिन उसकी आँखों में अजीब तरह की चमक थी। ''मैं नहीं डरती'', वह दृढ़ता से बोली, ''मैं फरिश्ते से आप पर दया करने की प्रार्थना करूँगी।''

वह अपनी जगह से उठा। उसके मुँह से खुशी की एक हलकी चीख निकल गई। उसने झुककर उसका हाथ पकड़ा और पुराने परंपरागत अंदाज में उसे चूम लिया। उसकी उँगलियाँ बर्फ जैसी ठंडी थीं। उसके होंठ अंगारों की तरह

दहक रहे थे, लेकिन वर्जीनिया तनिक भी विचलित नहीं हुई, जब वह उसे धूल भरे कमरे की तरफ ले चला। फीकी पड़ चुकी दीवारदरी पर शिकारियों के चित्र कढ़े हुए थे। उन्होंने अपनी तुरही बजाकर अपने हाथों के इशारे से उसे चले जाने को कहा। ''नन्ही वर्जीनिया, लौट जाओ'', वह चीखे, ''लौट जाओ।'' लेकिन भूत ने उसका हाथ और भी कसकर पकड़ लिया। उसने उनकी तरफ से अपनी आँखें मूँद लीं। गिरगिट जैसी पूँछों और बड़ी गोल आँखोंवाले भयानक जंतु नक्काशीदार चिमनी से उसकी तरफ आँखें मटका रहे थे। वह बुदबुदाए, ''वर्जीनिया, सावधान! हम शायद ही तुम्हें फिर कभी देख पाएँ।'' भूत और भी तेजी से आगे बढ़ता गया और वर्जीनिया ने भी उनकी एक न सुनी। कमरे के अंत में आकर वह रुक गया। वह कुछ शब्द बुदबुदाया, जिनको वह समझी नहीं। उसने आँखें खोलीं तो देखा कि दीवार आहिस्ता से कोहरे की तरह गायब हो रही थी। उसके सामने एक बड़ी काली गुफा थी। उन दोनों को ठंडी हवा के झोंके लग रहे थे। किसी ने उसकी पोशाक को जैसे खींचा। ''जल्दी करो'', भूत बोला, ''नहीं तो बहुत देर हो जाएगी।'' जरा देर में उनके पीछे तख्तबंदी बंद हो गई और कमरा खाली था।

: 6 :

उसके कोई दस मिनट बाद चाय की घंटी बजी। जब वर्जीनिया नीचे नहीं आई तो श्रीमती ओटिस ने एक नौकर को उसे बुलाने के लिए भेजा। थोड़ी देर बाद उसने आकर बताया कि उसे मिस वर्जीनिया कहीं नहीं मिली। उसे शाम को रात्रिभोज की मेज के फूलों के लिए बाग में जाने की आदत थी। इसलिए पहले तो श्रीमती ओटिस ने कोई चिंता नहीं की, लेकिन जब छह बज गए और वर्जीनिया तब भी नहीं आई तो वह परेशान हो उठीं। उन्होंने लड़कों को बाहर जाकर उसे खोजने को कहा। इस बीच उन्होंने और श्री ओटिस ने घर का हर कमरा छान मारा। साढ़े छह बजे लौटकर लड़कों ने खबर दी कि उनको उनकी बहन कहीं नहीं मिली। वे सब अब बहुत परेशान थे और समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। तभी अचानक श्री ओटिस को याद आया कि कुछ दिन पहले उन्होंने जिप्सियों के एक दल को बगीचे में ठहरने की अनुमति दी थी। वह तुरंत अपने सबसे बड़े बेटे और दो सेवकों के साथ बैकफल हैलो के लिए रवाना हो गए, जहाँ वे तंबू गाड़े हुए थे। छोटे ड्यूक ऑफ चेशायर ने, जो बहुत उत्तेजित था, साथ चलने का आग्रह किया, लेकिन श्री ओटिस ने अनुमति नहीं दी, क्योंकि उनको वहाँ झगड़ा होने का अंदेशा था।

वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि जिप्सी तो जा चुके हैं। यह साफ जाहिर था कि वे अचानक ही रवाना हुए थे, क्योंकि अभी भी वहाँ आग सुलग रही थी। घास पर कुछ प्लेटें भी पड़ी थीं। वॉशिंगटन और अपने दोनों आदमियों को पूरा इलाका छान मारने का आदेश देकर वह घर की तरफ भागे। वहाँ आकर उन्होंने जिले के सभी पुलिस इंसपेक्टरों को तार भेजे कि वे बंजारों या जिप्सियों द्वारा अपहरण की गई एक छोटी बालिका की तलाश करें। इसके बाद उन्होंने अपना घोड़ा लाने का आदेश दिया और अपनी पत्नी व दोनों बच्चों से रात का भोजन करने का आग्रह करने के बाद एक साईस के साथ एस्कॉर्ट रोड की तरफ चल पड़े। वह अभी कुछ मील ही गए थे कि उन्होंने किसी को अपने पीछे घोड़े पर सरपट आते देखा। मुड़कर देखा तो छोटा ड्यूक अपने खच्चर पर सवार चला आ रहा था। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था और उसके सिर पर हैट नहीं था। ''मुझे खेद है श्री ओटिस'', वह बोला, ''लेकिन जब तक वर्जीनिया गुम है, मैं भोजन नहीं कर सकता। कृपया मुझसे नाराज न हों। अगर आप पिछले साल हमारी सगाई कर देते तो आज यह आफत न आती। आप मुझे वापस नहीं भेजेंगे? क्यों भेजेंगे? मैं वापस नहीं जाऊँगा।''

राजदूत उस खूबसूरत किशोर की करतूत पर मुसकराए बिना न रह सके। वर्जीनिया के प्रति उसके लगाव से वे प्रभावित भी हुए। अत: अपने घोड़े से थोड़ा झुककर उन्होंने प्यार से उसका कंधा थपथपाया और बोले, ''ठीक है, सिसिल, जब तुम वापस नहीं जाना चाहते तो फिर मेरे साथ आ सकते हो, लेकिन एस्कार्ट पहुँचने पर मैं तुम्हें एक हैट जरूर लेकर दूँगा।''

''आप हैट की चिंता न करें। मुझे वर्जीनिया चाहिए।'' छोटे ड्यूक ने कहा और वे रेलवे स्टेशन की तरफ तेज चाल से चल पड़े। वहाँ श्री ओटिस ने स्टेशन मास्टर से पूछा कि क्या किसी ने वर्जीनिया जैसी दिखनेवाली लड़की को प्लेटफॉर्म पर देखा है? लेकिन उसकी कोई खबर नहीं मिली। स्टेशन मास्टर ने आगे और पीछे के स्टेशनों पर तार दे दिए और राजदूत को आश्वासन दिया कि लड़की की तलाश के लिए पूरी सावधानी बरती जाएगी। फिर उन्होंने अपनी दुकान बंद करते हुए एक बजाज से छोटे ड्यूक के लिए एक हैट खरीदा और उसके बाद बक्सले की तरफ घोड़ा दौड़ाया। बक्सले वहाँ से चार मील दूर एक गाँव था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वहाँ जिप्सी अकसर डेरा डालते हैं, क्योंकि वहाँ पास में ही एक बड़ा सार्वजनिक मैदान था। वहाँ उन्होंने गाँव के सिपाही से भी पूछताछ की, लेकिन कोई सूचना नहीं मिली। उन्होंने सारे मैदान का भी चक्कर लगाया, लेकिन निराश रहे। फिर उन्होंने घर की तरफ अपने घोड़े मोड़ लिये। वे ग्यारह बजे के करीब थके-हारे और हताश से घर पहुँचे।
वॉशिंगटन और दोनों जुड़वाँ भाई गेट पर ही लालटेनें लेकर उनका इंतजार कर रहे थे, क्योंकि रास्ता बहुत अँधेरा था। वर्जीनिया का जरा भी सुराग नहीं मिला था। जिप्सी उनको बक्सले के मैदान में मिल गए थे, लेकिन वर्जीनिया उनके साथ नहीं थी। जल्दबाजी में वहाँ से निकलने का कारण उन्होंने बताया कि वे चार्टन मेले की तारीख में गलती कर गए थे। जब उनको भूल का पता चला तो एकदम भागे, ताकि देर न हो जाए। वे भी वर्जीनिया के गायब होने की बात सुनकर बहुत परेशान हो गए, क्योंकि वे श्री ओटिस के, अपने बाग में उनको टिकने की अनुमति देने के कारण, बहुत कृतज्ञ थे। इसलिए उनमें से चार बालिका को खोजने में मदद के लिए पीछे रुक गए। बालिका की खोज में सारा इलाका और घर का कोना-कोना छान मारा गया था। अब स्पष्ट हो गया था कि उन्होंने उसे खो दिया है। घोर निराशा की स्थिति में श्री ओटिस और लड़के घर की तरफ चले। पीछ-पीछे साईस घोड़ा और खच्चर लेकर चल रहा था। हॉल व कमरे में उन्होंने परेशान हाल में नौकरों का जमघट देखा। लाइब्रेरी में श्रीमती ओटिस एक सोफे पर औंधी पड़ी थीं। आतंक और चिंता के मारे उनके होशहवास गुम थे। वृद्ध गृहप्रबंधक ने उनका सिर यूडिकलोन से धो दिया था। श्री ओटिस ने सबसे कुछ खाने का आग्रह किया और सबके लिए भोजन का प्रबंध करने का आदेश दिया। यह बहुत उदासी भरा भोज था। हर कोई गुमसुम था। दोनों जुड़वाँ भाई भी एकदम चुप थे, क्योंकि वे अपनी बहन को बहुत चाहते थे। श्री ओटिस ने छोटे ड्यूक की मिन्नतों के बावजूद आदेश दिया कि सब लोग सोने जाएँ, क्योंकि आज रात और कुछ नहीं किया जा सकता। वह कल सुबह ही लंदन के पुलिस मुख्यालय को तार देकर कुछ जासूसों को फौरन भेजने का अनुरोध करेंगे। जब वे भोजनकक्ष से निकल रहे थे, तभी घड़ी ने आधी रात का घंटा बजाया। जब घड़ी का आखिरी घंटा बजा तभी उन्होंने एक धमाके की आवाज और उसके साथ ही एक तीखी चीख सुनी। घर के ऊपर भयानक बिजली कड़की। फिजा में एक अलौकिक संगीत बजने लगा। सीढ़ियों के ऊपरी हिस्से से एक लकड़ी का तख्ता तेज आवाज के साथ पीछे हटा। बहुत पीली और सफेद पड़ चुकी वर्जीनिया अपने हाथ में एक संदूकची लिये वहाँ खड़ी थी। सबके-सब तुरंत उसकी तरफ दौड़े। श्रीमती ओटिस ने भाव-विह्वल होकर उसे अपनी बाँहों में जकड़ लिया। ड्यूक ने पागलों की तरह उसपर चुंबनों की बौछार कर दी। जुड़वाँ भाई उन सबके चारों तरफ उन्मत्तों की तरह नाचने लगे।
''आह मेरी बच्ची'', श्री ओटिस जरा गुस्से में बोले, ''तू कहाँ थी?'' उन्होंने सोचा कि शायद वह उनके साथ कोई मूर्खतापूर्ण शरारत कर रही थी। ''सिसिल और मैं घोड़ों पर तुम्हें सारे देहात में खोजते फिर रहे थे। तुम्हारी माँ तो दहशत के मारे मर ही गई थी। तुम फिर कभी इस तरह का मजाक न करना।''
''सिवाय उस भूत के साथ मजाक करने के।'' कहते हुए दोनों जुड़वाँ भाई कुलाँचें भरते हुए नजदीक आ गए।
''मेरी प्यारी बच्ची, शुक्र है तू मिल गई। अब कभी मेरी आँखों से ओझल न होना।'' श्रीमती ओटिस बोलीं। उन्होंने

काँपती हुई बच्ची को चूमा और उसके सुनहरे बाल सहलाए।
''पापा, मैं भूत के साथ थी'', वर्जीनिया आहिस्ता से बोली, ''वह मर गया है। आप आकर उसे देखें। वह बहुत दुष्ट था, लेकिन उसने जो कुछ किया उसके लिए उसे अब अफसोस था। मरने से पहले उसने मुझे सुंदर जवाहरातों की यह संदूकची दी।
सारा परिवार खामोश हैरानी से उसकी तरफ देख रहा था, लेकिन वह पूरी तरह गंभीर थी। वह मुड़ी और सबको तख्तबंदी के उस खुले रास्ते से एक तंग गलियारे में ले गई। उसके साथ वॉशिंगटन एक जलती मोमबत्ती लेकर चल रहा था, जो उसने टेबल से उठा ली थी। अंत में वे ओक की लकड़ी के एक बड़े दरवाजे पर पहुँचे, जिसपर पुरानी जंग खाई कीलें मढ़ी हुई थीं।
वर्जीनिया के उसे छूते ही दरवाजा अपने भारी कब्जों पर खुल गया। अब वे एक छोटे नीची छतवाले कमरे में थे। उसकी छत मेहराबी थी और उसमें एक छोटी जालीदार खिड़की थी। दीवार में एक बहुत बड़ा लोहे का छल्ला जड़ा हुआ था। उसके साथ जंजीर से एक डरावना कंकाल बँधा था। वह कंकाल पत्थर के फर्श पर अपनी पूरी लंबाई में पसरा हुआ था। ऐसा लगता था कि वह अपनी लंबी कंकाली उँगलियों से एक पुरानी कुदाल और जग को पकड़ने की कोशिश में हो, जो उसकी पहुँच से दूर पड़े थे। जग पानी से भरा था और उसके अंदर हरी काई जमी हुई थी।
कुदाल पर धूल जमी थी। वर्जीनिया उस कंकाल के पास झुक गई और अपने नन्हे हाथ जोड़कर चुपचाप प्रार्थना करने लगी। सब लोग हैरानी से उस भयानक कांड को देख रहे थे, जिसका राज अब उनपर खुल चुका था।
''वह देखो'', जुड़वाँ भाइयों में से एक, जो यह जानने की कोशिश कर रहा था कि वे घर के किस हिस्से में हैं, अचानक बोला, ''वह देखो, पुराना ठूँठ बादाम का पेड़ फूल उठा है। मुझे चाँदनी में उसके फूल साफ नजर आ रहे हैं।''
''प्रभु ने उसे क्षमा कर दिया है।'' वर्जीनिया गंभीरता से बोली। वह उठ खड़ी हुई। अब उसके चेहरे पर एक रोशनी की चमक थी।
''आह, तुम तो फरिश्ता हो।'' छोटा ड्यूक बोला और उसके गले में बाँहें डालकर उसे चूम लिया।

: 7 :

इन विचित्र घटनाओं के चार दिन बाद कैंटरविले निवास से रात लगभग ग्यारह बजे एक शवयात्रा निकली। मुरदागाड़ी को चार काले घोड़े खींच रहे थे। सीसे का ताबूत बढ़िया बैंगनी रंग के कपड़े से ढका हुआ था, जिसके ऊपर सुनहरी कढ़ाई में कैंटरविले का पारिवारिक चिह्न बना था। मुरदागाड़ी और घोड़ागाड़ियों के साथ-साथ सेवक मशालें लिये चल रहे थे। सारी शवयात्रा बहुत प्रभावशाली थी। लॉर्ड कैंटरविले मुख्य मातमी थे। वह वेल्स से अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए विशेष रूप से पधारे थे और नन्ही वर्जीनिया के साथ पहली घोड़ागाड़ी में बैठे थे। उनके बाद अमेरिकी राजदूत और उनकी पत्नी थीं। उनके बाद वॉशिंगटन और तीनों लड़के थे। आखिरी गाड़ी में श्रीमती ओमने थीं। यह माना गया कि चूँकि भूत ने उनको पचास साल से अधिक समय तक आतंकित किया था, उनको उसका अंतिम संस्कार देखने का अधिकार था। कब्रिस्तान के कोने में पुराने सदाबहार के नीचे एक गहरी कब्र खोदी गई थी। आदरणीय आगस्टस डैंप्लर ने प्रार्थना पढ़ी। प्रार्थना संपन्न हो जाने के बाद सेवकों ने कैंटरविले परिवार के पुराने रिवाज के मुताबिक मशालें बुझा दीं। फिर जब ताबूत कब्र में उतारा जा रहा था, वर्जीनिया ने आगे आकर ताबूत पर सफेद और गुलाबी रंग के बादाम के फूलों का बना एक क्रॉस रख दिया। जैसे ही उसने ऐसा किया चंद्रमा बादलों की ओट से निकल आया और सारा कब्रिस्तान उसकी रुपहली चाँदनी से भर गया। दूर से एक

बुलबुल के गाने की आवाज आने लगी। वह भूत के मृत्यु के बाग के वर्णन के बारे में सोचने लगी और उसकी आँखें आँसुओं से नम हो गईं। घर वापस लौटते समय उसके मुँह से मुश्किल से ही कोई शब्द निकला।

अगली सुबह लॉर्ड कैंटरविले के शहर वापस जाने से पहले श्री ओटिस की उनसे उन जवाहरात के बारे में बातचीत हुई, जो भूत ने वर्जीनिया को दिए थे। वे बहुत ही मूल्यवान् थे। खास तौर पर एक माणिक का हार जो वेनिस की परंपरागत जड़ाई में बनाया गया था। वह सोलहवीं शताब्दी की कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना था। वे इतने अधिक मूल्यवान् थे कि श्री ओटिस ने यह उचित नहीं समझा कि उनकी बेटी को उन्हें स्वीकार करने की अनुमति दें।

''आदरणीय लॉर्ड'', वे बोले, ''मैं जानता हूँ कि अक्राम्यता इस देश में एक मामूली छल्ले से लेकर जमीन-जायदाद तक लागू होती है। यह बात भी मुझे नितांत स्पष्ट है कि ये जवाहरात आपके परिवार की विरासत हैं। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इन्हें अपने साथ लंदन ले जाएँ। विचित्र परिस्थितियों में आपको प्राप्त हुई समझकर आप इस दौलत को अपनी बाकी संपत्ति का हिस्सा बना लें। जहाँ तक मेरी बेटी का सवाल है, वह तो एक बच्ची ही है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि उसकी दिलचस्पी इस प्रकार की विलासिता की वस्तुओं के प्रति नगण्य ही है। मुझे श्रीमती ओटिस ने यह भी बताया है कि अगर इन जवाहरातों को बेचा जाए तो इनकी बहुत अधिक कीमत मिल सकती है। छोटी उम्र में उन्होंने बोस्टन में अनेक वर्ष गुजारे थे और उन्हें कलात्मक वस्तुओं का अच्छा ज्ञान है। इन परिस्थितियों में, लॉर्ड कैंटरविले, आप मानेंगे कि मेरे लिए अपने परिवार के किसी भी सदस्य को इनको रखने की अनुमति देना कितना असंभव है। इस तरह के भड़कीले खिलौने ब्रिटिश सामंती परिवारों के लिए कितनी ही शोभा की वस्तु क्यों न हों, रिपब्लिकन सादगी में पले-बढ़े किसी भी व्यक्ति के लिए वे अनुपयुक्त ही होंगे।

''मुझे संभवत: इस बात का जिक्र भी करना चाहिए कि वर्जीनिया चाहती है कि आप उसे उस संदूकची को आपके अभागे और भटके हुए पूर्वज की एक यादगार के रूप में रखने की अनुमति दें। चूँकि वह बहुत पुरानी और मरम्मत के काबिल भी नहीं है, मेरे खयाल में आप उसके अनुरोध को स्वीकार करने के बारे में विचार करेंगे। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं इस बात से हैरान हूँ कि मेरी बेटी मध्यकालीनता के किसी भी रूप में इतनी दिलचस्पी दिखा रही है। शायद इसकी वजह यह है कि वर्जीनिया का जन्म श्रीमती ओटिस के एथेंस से लौटने के कुछ ही समय बाद आपके लंदन के एक उपनगर में हुआ था।''

लॉर्ड कैंटरविले माननीय राजदूत के इस भाषण को पूरी गंभीरता से सुन रहे थे। अपनी मुसकान को छिपाने के लिए वे बीच-बीच में अपनी सफेद मूँछों पर हाथ फेर रहे थे। जब श्री ओटिस अपनी बात खत्म कर चुके तो उन्होंने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, ''श्रीमान, आपकी प्यारी नन्ही बेटी ने मेरे अभागे पूर्वज सर साइमन को अमूल्य सेवा प्रदान की है। उसके विलक्षण साहस और हौसले के लिए मैं और मेरा परिवार उसके अत्यंत कृतज्ञ हैं। ये जवाहरात उसके हैं। मान लो मैं उनको स्वीकार कर लेता हूँ। तब तो वह पुराना दुष्ट अपनी कब्र से दो सप्ताह से भी कम समय में निकल आएगा और मेरी जिंदगी जहन्नुम बना देगा। जहाँ तक विरासत का सवाल है, जिस चीज का जिक्र किसी वसीयत या दस्तावेज में न हो, वह विरासत का हिस्सा नहीं होती। इन जवाहरातों के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा इनपर आपके खानसामा से ज्यादा अधिकार नहीं है। जब वर्जीनिया बड़ी होगी तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह ऐसी सुंदर चीजें पहनकर खुश होगी। श्री ओटिस, आप यह भी भूल रहे हैं कि आपने फर्नीचर के साथ भूत को भी मोल खरीदा था। इसलिए भूत का जो कुछ था, वह उसी समय आपकी संपत्ति हो गया था। उस गलियारे में सर साइमन ने कुछ भी किया हो, कानून की नजरों में वे मर चुके थे और आपने उनकी जायदाद खरीदी थी।''

श्री ओटिस लॉर्ड कैंटरविले के इस तरह इनकार करने से बहुत निराश हुए। उन्होंने उनसे विनती की कि अपने फैसले पर फिर से गौर करें, लेकिन अच्छे स्वभाव के सामंत अपनी बात पर अड़े रहे। उन्होंने राजदूत से कहा कि वे अपनी बेटी को भूत द्वारा दी गई भेंट रखने की अनुमति दें। सन् 1890 के वसंत में जब चेशायर की किशोरी डचेज को उसके विवाह के अवसर पर महारानी के सम्मुख पेश किया गया तो सबने उसके आभूषणों की बहुत प्रशंसा कीं। वर्जीनिया को अच्छी अमेरिकन लड़कियों को अलंकृत किया जानेवाला मुकुट मिला था और जैसे ही वह बड़ा हुआ वर्जीनिया का विवाह अपने बालक प्रेमी के साथ कर दिया गया था। वे दोनों ही इतने प्यारे थे, और एक-दूसरे से इतना अधिक प्रेम करते थे कि हर कोई इस जोड़ी को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ था। अगर कोई खुश नहीं हुआ तो वह थी डंब्लेटन के मारक्विस की विधवा। वजह यह थी कि उसने अपनी सात कुँआरी बेटियों में से एक के लिए ड्यूक को पटाने की कोशिश की थी। इस उद्देश्य के लिए उसने तीन बहुत महँगे रात्रिभोज भी आयोजित किए थे। एक जरा अजीब बात यह भी हुई कि नाखुश होनेवालों में श्री ओटिस भी थे। वे खुद ड्यूक को बहुत पसंद करते थे, लेकिन वे किसी किस्म की उपाधि के खिलाफ थे। इसके अलवा उनको आशंका थी कि सामंती विलासिता और चमक-दमक में उनकी बेटी रिपब्लिकन सादगी को भुला न बैठे। उनकी आपत्ति को अस्वीकार किया गया और जब वह बेटी को अपनी बाँह का सहारा देकर सेंट जार्ज के हनोवर स्क्वायर की वेदी की तरफ ले जा रहे थे तो शायद अपने आप को इंग्लैंड का सबसे गर्वीला पिता मान रहे थे।

ड्यूक और डचेज अपने हनीमून के बाद कैंटरविले निवास आए। आने के अगले दिन वे दोपहर बाद देवदार के पेड़ोंवाले कब्रिस्तान तक टहलते हुए गए। पहले तो उनको सर साइमन की कब्र के पत्थर पर कुछ लिखवाने के बारे में बहुत सोचना पड़ा। फिर यह तय पाया गया कि किसी अन्य उल्लेख के बिना उनका नाम खुदवाया जाए। इसके साथ ही लाइब्रेरी की खिड़की पर कविता की जो पंक्तियाँ लिखी हुई थीं, वे भी खुदवाई जाएँ। डचेज अपने साथ कुछ सुंदर गुलाब के फूल लाई थी। उसने वे कब्र पर रखे। कुछ देर वहाँ रुकने के बाद वे गिरजाघर के खंडहर हो चुके पूर्वी भाग की ओर गए। वहाँ डचेज एक गिरे हुए खंभे पर बैठ गई। उसका पति उसके पैरों के पास लेट गया और उसने एक सिगरेट सुलगा ली। वह अपनी पत्नी की सुंदर आँखों में देख रहा था। अचानक उसने सिगरेट फेंक दी और उसका हाथ अपने हाथों में लेकर बोला, ''वर्जीनिया, एक पत्नी को अपने पति से कुछ भी राज नहीं रखना चाहिए।''

''प्यारे सिसिल, मेरे पास तुमसे छिपाया कोई राज नहीं है।''

''हाँ, है'', वह मुसकराकर बोला, ''तुमने कभी नहीं बताया कि जब तुम उस भूत के साथ बंद थी तो तुम पर क्या गुजरी थी।''

''सिसिल, यह मैंने कभी किसी को नहीं बताया।'' वह गंभीरता से बोली।

''यह मैं जानता हूँ, लेकिन तुम मुझे बता सकती हो।''

''सिसिल, कृपया यह न पूछो। मैं तुम्हें नहीं बता सकती। बेचारा सर साइमन! मैं उनकी बहुत कृतज्ञ हूँ। हाँ सिसिल, हँसो मत। सच में मैं कृतज्ञ हूँ। उन्होंने मुझे समझाया कि जीवन क्या है, मृत्यु का महत्त्व क्या है। और प्रेम इन दोनों से अधिक शक्तिशाली क्यों है।''

ड्यूक ने उठकर प्रेम से अपनी पत्नी का चुंबन लिया।

''जब तक तुम्हारा दिल मेरे पास है, तुम अपना राज अपने पास रख सकती हो।'' वह बोला।

''वह तो सदा तुम्हारे पास ही था, सिसिल।''

''पर तुम किसी दिन अपने बच्चों को तो बताओगी, है कि नहीं?''

वर्जीनिया लजा गई।

□□□